श्री राम जी, हनुमान जी, यमुना जी की पूजा एवं साधना पद्धति

भाग-3

महात्मा राम भरोसे दास (श्री महन्त)

श्री राम जी हनुमान जी यमुना जी की पूजा एवं साधना पद्धति

भाग–3

विषय सूची

***

1

दो भाब्द

यह पूजा पद्धति श्री राम जी, हनुमान जी व श्री यमुना जी के पूजा संबंधि विधान व महत्व को दर्शाते हुए लिखी गई है। यात्रा सीजन में बहुत सारे जिज्ञासू यात्री, महात्मा, भक्त जन माता यमुना के पूजन व महत्व के लिए जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं इसलिए इस पुस्तक में विधि विधान से पूजा अर्चना करने के लिए सारांश लेकर शास्त्रों के अनुसार संग्रहित किया है। इस पुस्तक में विशेषकर यमनोत्री धाम का महत्व व यमनोत्री धाम के आस–पास खड़े पर्वत श्रेणियों की भी जानकारी दी गई है जैसे यवमेशपीठ, शक्ति पीठ है। यवनेश पर्वत श्रृंखला के मूलक को स्पर्श करने वाली शीला को दिव्य शिला के रूप में पूजा जाता है। इस यवनेभ पीठ पर्वत माला ऊपर लगभग 18000 फिट की ऊंचाई पर सप्तऋषि नामक एक समनोहर कुण्ड है जहां से यमुना जी निःस्तृत होकर पर्वत चट्टानों से अठखेलियां करती हुई यमुना मन्दिर के मूलक पर उतरती हैं, इसी स्थान से यमुना जी का उद्‌गम स्थान माना जाता है। इस यमनोत्री धाम की ऊंचाई लगभग 10,600 फिट के आस–पास है। जो की योनि पर्वत कि ऊंचाई 21,000 फिट तथा इसी पर्वत के पीछे बंदर पूछ पर्वत गिलेस्यर है जिसकी ऊंचाई 22,000 फिट है यमनोत्री धाम के पश्चिम भाग में गण कुंजर नामक पर्वत है। उसके आगे सुवर्णेश्वर महादेव का उल्लेख मिलता है इन पर्वत मालाओं में विभिन्न प्रकार के फूलों से लदी घाटी है। यहां विभिन्न प्रकार

के वनस्पति, औषधियां, जड़ी बूटियां मिलती हैं, जिनका विस्तृत विवरण इस पुस्तिका में दिया गया है। जब साधारण भक्तों के आत्मकल्याण के लिए राम नाम महत्त्व व श्री श्यालित्र राम महत्व, राम पूजा, यमुना पूजा, तथा हनुमान पूजा पद्धति दी गई है।

आशा है कि सभी जिज्ञासु भक्त, महात्मा, साधू–संत इस पुस्तिका का अध्ययन करके अपने जीवन को सफल करेंगे। इस पूजा पद्धति पुस्तिका को तैयार करने, संकलन करने व आवश्यक सामग्री संग्रह करने में हिमालय के योगी महात्मा कमलराम दास भूतपूर्व पुजारी व श्री भरत दास वर्तमान पुजारी तथा महात्मा लक्ष्मण दास जिज्ञासु महात्माओं के पूर्ण सहयोग से यह पुस्तिका तैयार की गई है। इस पुस्तक को श्री राम नवमी के दिन (तदानुसार 11 गते चैत्र सम्वत् 2067) प्रकाशित की गई।

इस राम पूजा पद्धति नामक पुस्तिका का प्रकाशक एवं मुद्रण का भार जिज्ञासु भक्त श्री जगदीश प्रसाद वडोनी जी ने अपने स्व० माता–पिता (स्व० कमला वडोनी व कृपा राम वडोनी) मूल निवासी ग्राम फेगुल पही मखलोगी जिला टिहरी गढ़वाल, वर्तमान पता–मिशारवाला डोईवाला देहरादून वालों में अपने शुभ कमाई से योगदान देकर इस किताब के मुद्रण में हमारा सहयोग दिया है। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि भगवान श्री वडोनी जी को सुख शांति देंवे, इनके व्यवसाय में खूब वृद्धि हो।

अंततः भगवान की वस्तु भगवान को समर्पित करता हूं। जय सीताराम।

संरक्षक
श्री महन्त राम भरोसे दास जी
श्री सिद्ध हनुमान मन्दिर यमनोत्री धाम
विनीत
महात्मा कमल रामदास
(हिमालय के योगी)

2

श्री विनायक स्तवन

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येशु सर्वदा।।

विनायक स्तवन
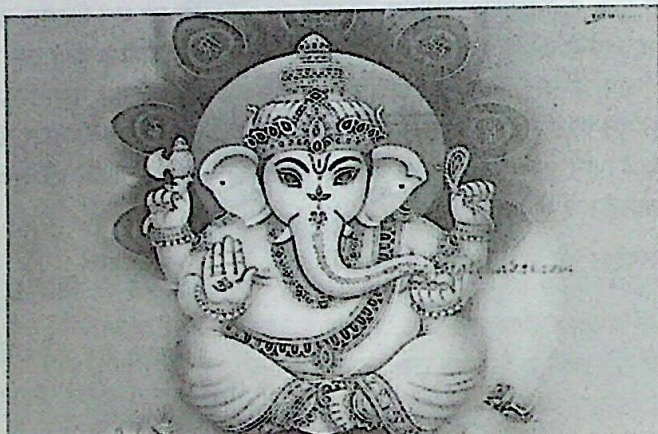
गाइये गनपति जगवंदन।
भांकर–सुवन भवानी नंदन।।
सिद्धि–सदन, गज वदन विनायक।
कृपा सिन्धु सुन्दर सब लायक।।
मोदक–प्रिय मुद–मंगल दाता।
विद्या वारिधि बुद्धिविधाता।।
मांगत तुलसीदास कर जोरे।
बसहिं राम सिय मानस मोरे।।

* * *

संकट–नाशक गणेशस्तोत्रम

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कार्मार्थ सिद्धये।।1।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।।2।।
लम्बोदरं पचमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विध्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्।।3।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।।4।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो।।5।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्।।6।।
जपेद्गणपति स्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत।
सवंत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र सशंयः।।7।।
अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः सर्मर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।8।।

3

अवतार का अर्थ क्या है?

अवतरित इति अवतारः।

जो अवतरण करे, जो ऊपर से नीचे आए। कहां तो परब्रह्म, निर्गुण, निराकार सत् चित् आनन्द, अव्यक्त, अजन्मा ... और वह जन्म लेकर आए। अव्यक्त व्यक्त हो जाये। अजन्मा जन्म को स्वीकार कर ले, अकर्ता कर्त्तत्व को स्वीकार कर ले, उपभोक्ता भोग को स्वीकार कर ले, यह अवतार है।

जीव का सर्वांगीण विकास हो इसलिए भगवान के अवतार होते हैं। उस समय उन अवतारों से जीव को तो प्रेरणा मिलती ही है, हजारों वर्षों के बाद भी प्रेरणा मिलती रहती है। भगवान के कई तरह के अवतार होते हैं। युग–युग में, वक्त–वक्त पर, हर दिल और हर व्यक्ति को योग्यता के अनुसार भिन्न–भिन्न और प्रकाश मिले ऐसे अवतार होते हैं। वेदों, गीता जी आदि पवित्र सद्ग्रंथों में प्रमाण मिलता है कि जब–जब धर्म की हानि होती है व अधर्म की वृद्धि होती है तथा वर्तमान के नकली संत–महंत व गुरुओं द्वारा भक्ति मार्ग के स्वरूप को बिगाड़ दिया गया होता है। फिर परमेश्वर स्वयं आकर या अपने परमज्ञानी संत को भेजकर सच्चे ज्ञान के द्वारा धर्म की पुनः स्थापना करता है। वह भक्ति मार्ग को शास्त्रों के अनुसार समझाता है। उसकी पहचान होती है कि वर्तमान के धर्म गुरु उसके विरोध में खड़े होकर राजा व प्रजा को गुमराह करके उसके ऊपर आत्याचार करवाते हैं। ऐसे पाखंडियों से बचना चाहिए। संत की पहचान है कि जो संत–सतगुरु चारों वेदों छः शास्त्रों अठारह पुराणों आदि सभी ग्रंथों का पूर्ण जानकार होगा अर्थात् उनका सार निकाल कर बताएगा। यजुर्वेद अध्याय–19 मंत्र 25, 26 में लिखा है कि वेदों के अधूरे वाक्यों अर्थात् सांकेतिक शब्दों व एक चौथाई श्लोकों को पूरा करके विस्तार से बताएगा व तीन समय की पूजा बताएगा। सुबह पूर्ण परमात्मा की पूजा दोपहर को विश्व के देवताओं का सत्कार व संध्या आरती अलग से बताएगा व जगत का उपकारक संत होता है।

ऐसे संत ही स्वयं प्रकट होकर अवतार लेते हैं। जैसे राम, कृपा, गुरु नानक देव, बुद्ध, स्वामि रामानन्द, कबीर, आदि जिन्होंने इस धरती पर आकर अपनी लीला की, धर्म का उपदेश दिया यह सब मानव कल्याण के लिए सर्व शक्तिमान परमात्मा की प्रेरणा से होता है। इसी को भगवान का अवतार कहा जाता है।

ह० श्री महन्त
महात्मा राम भरोसे दास जी
यमुनोत्री धाम
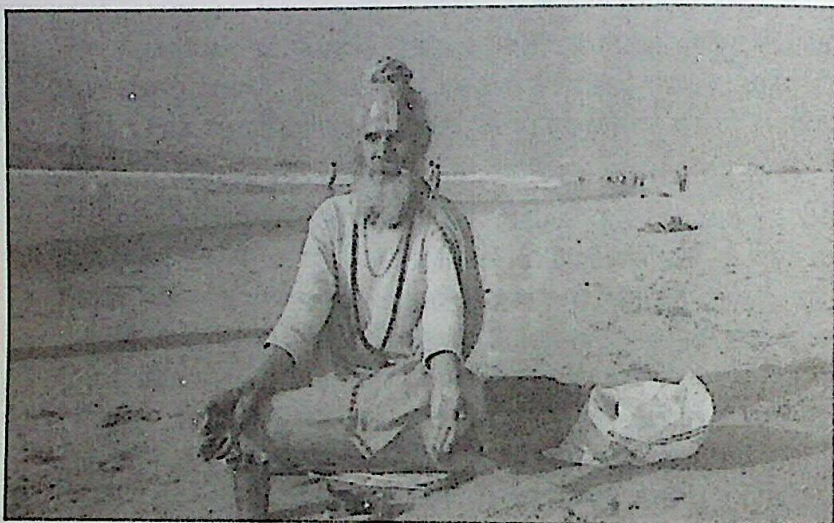
श्री जगनाथ पुरी के तट पर संध्या उपासना करते हुये महात्मा कमल राम दास
(हिमालय के योगी)

4

नाम महात्म्य

नाम संकीर्तनं यस्य सर्व पाप प्रणाशनम्।।
प्रणामी दुःखशमनस्तं नमामि परमं हरिम्।।

कलियुग की जय हो, जिसके शासनकाल में भक्तों को भगवन्नाम जैसे सरल और सुलभ साधन का अनन्य आश्रय मिला। कलिकाल के इस एक महान् गुण के कारण ही महात्मा लोग इसके अनन्त अवगुणों को भूल जाते हैं। इसलिए महाराज परीक्षितजी से शुकदेव जी ने कहा–

कलेर्दोषनिधे राजन् ह्यस्ति हेको महन्गुणः।
कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसङ्गः परं ब्रजेत्।।
कलि सभाजयन्यार्था गुणज्ञाः सारकामिनः।
यत्रा संकीर्तनेनैव सर्व स्वार्थोऽभिलभ्यते।।

हे राजन्! इस दोषनिधि कलियुग में एक महान गुण है कि भगवान् के संकीर्तनमात्रा से ही मनुष्य परमपद (मोक्ष) प्राप्त कर लेता है इसलिए गुणज्ञ और सारग्राही सन्त कलियुग की प्रशंसा करते हैं क्योंकि इस युग में केवल भगवन्नाम संकीर्तन से ही समस्त स्वार्थ परमार्थ सहज ही में सिद्ध हो जाते हैं। ब्रह्मपुराण का भी कथन है–

ध्यायन्कृते यजन्यज्ञोस्त्रेतायां द्वापरेऽर्चयन्।
यदाप्नीति तदाप्नीति कलौ संकीर्य्य केशवम्।।

सतयुग में ध्यान, त्रेता में यज्ञ और द्वापर में पूजन–अर्चन से जो फल प्राप्त होता है, वही फल कलियुग में भगवन्नाम संकीर्तन से मिलता है। कलियुग में पापी प्राणियों का उद्धार करने में अन्य कोई साधन समर्थ ही नहीं है। इसलिए कलियुग के जीवों का एक मात्र आधार श्री राम नाम माना गया है।

रामेति चर्णद्वयादरेण सदाजपन्मुक्तिपुपैति जनः।
कलौयुगे कल्मषमानसानामन्यत्र धर्मे खलुनाधिकारः।।

'राम' इन दो अक्षरों का आदरपूर्वक सर्वदा जप करने से ही मनुष्य को मोक्ष मिलता है। कलियुग के कलुषित ह्रदय वाले मनुष्यों को अन्य किसी धर्म का अधिकार ही नहीं है। महापापों का मद तोड़ने में श्री राम नाम ही परम समर्थ है।

तावदेव मदस्तेषां महापातकदन्तिनाम्।
यावन्न श्रूयते राम नाम पंवानन ध्वनिः।।

महापातक रूपी मदोन्मत्त हाथियों का मद तभी तक रहता है, जब तक श्री राम नाम रूपी सिह गर्जना नहीं सुनाई पड़ती।

द्विजो वा राक्षसी वापि पापी वा धमिकोऽपि वा।
रामरामेति यो वक्ति स मुक्तों नात्रा संशयः।।

द्विज–राक्षस–पापी अथवा धार्मिक जो कोई भी राम नाम का उच्चारण करता है, वह मुक्त ही है–इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है

मम नामानि लोकेऽस्मिन् श्रद्धया यस्तु कीर्तयेत्।
तस्यापराध कोटिस्तु क्षमाम्येव न संशयः।।
न तादृशं महाभाग! पापं लोकेपु विश्रुतम्।
यादृशं धरणीनाथ। मम नाम न दह्मते।।

वाराह पुराण

प्रभु कहते हैं–इस लोक में जो श्रद्धापूर्वक मेरे नामों का संकीर्तन करता है, उसके करोड़ों अपराधों को मैं क्षमा कर देता हूं। यह निस्सन्देह है। हे महाभाग, ऐसा कोई भी लोकप्रसिद्ध पाप नहीं है जिसको मेरा पवित्र नाम जलाकर भस्म न कर दे।

शरणागत भक्तों का अपराध तो प्रभु के शरण में जाकर प्रार्थना करने पर प्रभु क्षमा कर देते हैं परन्तु कलियुग के प्राणियों में शरणागति के अंग महाविश्वास का प्रायः अभाव रहता है इसलिए कलियुग में भगवन्नाम जप ही सर्वाधिक सुगम व श्रेष्ठ माना गया है।

5

रामनाम महिमा

तदैव लग्नं सुदिनं तदैव, ताराबलं चन्द्रबलं तदैव।
विद्याबलं देवबलं तदैव सीतापतेर्नाम यदा स्मरामि।।

अच्छा लग्न, अच्छा दिन तथा तारा आदि का अनुग्रह भी तभी है, जब कि मैं, सीता, रामजी के नाम का स्मरण करता हूं।

राम नाम की लूट है लूटी जा सो लूट।
अन्त समय पछतायेगा जब प्राण जायेंगे छूट।।

गुरु नानक जी के शब्दों में लिखा है कि–

सब सुख दाता राम हैं, दूसर नाहि न कोई।
कहूं नानक सुनने मना, तेहि सुमिरत गति होई।।
रमन्ते योगिनोऽनन्ने चिदात्मनि।
इति राम पदे नासौ परं ब्रह्मऽभिधीयते।।

जिस अनन्त नित्यानन्द चिदात्मा में योगीलोग स्मरण करते हैं, उस पर ब्रह्मा को राम पद से पुकराते हैं।

रक्तारंतत्पदं विद्धित्वं पदं विद्धयकारकम।
तत्पदं ब्रह्मवाध्यात्रा स्वं पदं जीव वाचकम।।

तत्पद (ब्रह्म) वाचक है, त्वंपद जीव वाचक है, इसी प्रकार रकार ब्रह्म का वाचक है, आकार का वाचक है और मकार माया (प्रकृति) का वाचक है।

स शब्दो विश्रव वाचको मश्चादीश्रवरवाचकः।
रमाणां रमणस्थानं राम रामविदोः विदुः।।
विश्रवानमीश्रवसे यो हि तेनसमः प्रकीर्तितः।
रमते रमया सार्धं तेन रामं विदुर्बुधा।।

।।इति महारामायणे।।

यह रमा, के साथ रमण करता है इस कारण से विद्वान लोग उसको राम कहते हैं, रमा का रमण स्थान होने के कारण से ही राम के तत्व को जानने वाले अर्थात् तत्ववेत्ता लोग राम को बतलाते हैं।

श्रद्धया हेलया नाम वदन्ति मनुजा भूवि।
तेषां नास्ति भयं पार्थ राम नाम प्रसादतः।।

महाभारत

हे अर्जुन, जो व्यक्ति पृथ्वी पर श्रद्धा से अथवा अश्रद्धा से भी राम का नाम लेते हैं, उन्हें राम नाम की कृपा से तीनों लोकों में कोई भय नहीं है।

अज्ञानादथवा ज्ञानाव् उत्तमश्लोकनाम यत।
संकीर्तितमद्यं पूंसो देहेदेधे यथाऽनलः।।

श्री मद्भागवते

प्रमादादपि संस्पृशं् यथा ङनलकणो दहेत्।
तथोष्ठपुट संस्पृशं् रामनाम दहेदधम।।

–इति ब्रह्मपुराणे

जैसे अग्नि की चिनगारी अज्ञानवश छूने मात्रा से ही मनुष्य के हाथ को जला देती है। उसी प्रकार अनजाने में भी श्री राम नाम कहने मात्र से ही सब पाप जलकर भस्म हो जाते हैं।

मधुर मधुरतेन्मगंलं मगंलानाम।
सकल निगमवल्ली सत्पफलं चित्व्खरूपम।
सकृद्वपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा भृगुवर।
नर मात्रां तारयेद् राम नाम।।
बृह्दनारदीये

यह मधुर–मधुर श्री राम नाम सम्पूर्ण मंगलों को देने वाला अमगंलों का नाशक, समस्त्तवेदरूपी लता का चित्व् रूफल है। जिस प्रकार मकान खड़ा करने के लिए स्तम्भ होते हैं, उसी प्रकार सम्पूर्ण वेदों का यह राम नाम स्तम्भ है, सत् चित् स्वरूप आनन्द का जो दर्शन है, वही भक्ति रूप उत्तमफल है, भृगुवर जो कोई श्रद्धा से अथवा अश्रद्धा से एक बार भी श्रीराम नाम का उच्चारण करता है वह मनुष्य मात्र को इस भव सागर से पार कर देता है।

6

भगवत् संबंध में बत्तीस अपराध

यानैर्वा पदाकाभिर्वा गमनं भगवदृगृहे।
देवोत्सवाद्यसेवा च अप्रणामस्तथाग्रतः।।
उच्छिष्टे चाथवा शौचे भगद्दर्शनादिकम्।
एकहस्तप्रणामश्व सुप्ते चास्मिन्र्ददक्षिणम्।।
पाद प्रसारणं चाग्रे तथा पर्यडबन्धनम्।
शयनं भक्षणं चापि मिथ्याभाषणमेव च।।
उच्चौर्भाषा मिथो जल्पो रोदनाननि च विग्रहः।
निग्रहानुग्रहो चैव नृषु च कूरभाषणम्।।
कम्बलावरणं चैव परनिन्दा परस्तुतिः।
अश्लीलभाषणं चैव अधेवायोर्विमोक्षणम्।।
शक्तो गोणेपचरश्च अनिवेदित भक्षणम्।
तत्कालोद्धवानां च फलादीनामनर्पणम्।।
विनियुक्तावशिष्टस्य व्यत्रजनांदेः प्रदानकम्।
पृष्टीकृत्यासन चैव परेशामभिवादन।।
गुरी मौन जिनस्तोत्र देवतानिन्दनम् तथा।
अपराधस्तथाविष्णोर्द्वात्रिशत्परिकीर्तिताः।।
यत्नो वर्जपनीयास्ते विष्णुसेवनतत्परेः।।

अर्थात

1. भगवान् के मन्दिर में वाहन पर बैठकर जाना।
2. भगवान् के मन्दिर में जूता इत्यादि पहनकर जाना।
3. मन्दिर में उत्सव होने पर सेवा न करना।
4. भगवान् के सम्मुख जाने पर प्रणाम न करना।
5. मन्दिर में जूठे मुख जाना।

6. अपवित्रतापूर्वक भगवत् दर्शन करना।
7. एक हाथ से प्रणाम करना।
8. भगवान् के शयन करते समय प्रदक्षिणा करना।
9. भगवान् के विग्रह के सम्मुख पैर फैलाकर बैठना।
10. भगवद्विग्रह के सम्मुख ऊंचे आसन पर बैठना।
11. विग्रह के सामने शयन करना।
12. भगवान् के सम्मुख मिथ्याभाषण करना।
13. भगवान् के सामने जोर से (चिल्लाकर) बोलना।
14. परस्पर में बकवास करना।
15. रोना।
16. भगवद् विग्रह के सामने किसी को आशीर्वाद देना।
17. भगवद् विग्रह के सामने किसी को डांटना।
18. लोगों में क्रूर भाषण करना।
19. विग्रह के सामने परनिन्दा करना।
20. विग्रह के सामने परनिन्दा करना।
21. विग्रह के सामने परस्तुति करना।
22. अश्लील भाषण करना।
23. विग्रह के सामने अपान वायु को छोड़ना।
24. समर्थ होने पर विधिवत् पूजन न करना।
25. भगवान् को अर्पण किए बिना भोजन करना।
26. ऋतुकाल के अनुसार भगवान को फलादि अर्पण न करना।
27. अपने से बचे व्यंजनादि भगवान् को अर्पण करना।
28. भगवान् के सामने पीठ करके बैठना।
29. विग्रह के सामने दूसरे को नमस्कार करना।
30. गुरु के सामने यथार्थ न बोलना।
31. अपनी महिमा का बढ़–चढ़कर बखान (प्रचार) करना।
32. देवताओं की निन्दा करना।

इस प्रकार ये बत्तीस भगवद् अपराध कहे गये हैं। अतः साधकों, भगवद्भक्तों को प्रयास करके इनसे बचना चाहिए।

7

जय श्री राम

नित्य यथा शक्ति जपते रहे। मन्त्र को लाख बार जपने से शत्रु को भय प्रदान किया जाता है।

इस मन्त्र से राम लखन तथा सुग्रीव की स्तुति करते हैं। रण में यह मन्त्र शत्रु को भयभीत कर देता है।

समस्त विपत्तियां दूर करने का मन्त्र
सुन्दर काण्ड का पाठ
मन्त्र की प्रयोग विधि और लाभ

इस पाठ को किष्किन्ध काण्ड के 2912 श्लोक अर्थात् कई रीछपति सुन हनुमाना–से प्रारम्भ कर आगामी सभी श्लोकों का पाठ करते हुए सुन्दर काण्ड का पाठ करें। पाठ 108 बार करने मात्रा से ही सिद्ध होकर कार्य करने लग जाता है। गाय के उपलों की राख को कपड़े में छानकर इस पाठ से अभिमन्त्रित करके प्रयोग करना चाहिए।

इस पाठ के प्रयोग से हनुमान जी प्रसन्न होते हैं जिसके कारण सभी आपदाओं का अन्त हो जाता है।

सुन्दर काण्ड का सम्पूर्ण लाल अक्षरों में छपा तान्त्रिक प्रभाव वाला पाठ उपलब्ध है।

सुख–समृद्धि दायक मन्त्र
रामचरितमानस का पाठ
मन्त्र की प्रयोग विधि और लाभ

रामचरित मानस को 11 बार पढ़ने मात्र से ही यह पाठ सिद्धि दायक हो जाता है।

इस पाठ के प्रभाव से घर से सुख शान्ति होकर विघ्नों का अन्त हो जाता है।

8

श्री शालिग्राम महात्म्य

पंचगव्य सहयस्रैस्तु संवितेः कि प्रयोजनम्।
चान्द्रायणेः सुचीर्णश्च कि दानेः किमुपोषणेः।
प्राश्चिते समुत्पन्ने पीत्वा पादोदकं हरेः।।

अर्थ—जिसने शालिग्राम स्वरूप भगवान विष्णु का चरणोदक पी लिया है, उसको प्रायश्चित रूप में पाप शुद्धि के लिए हजार बार पंचगवय पीना अच्छे—अच्छे चन्द्रायण व्रतों एवं दान उपवास आदि से क्या प्रयोजन है।

ब्रह्महत्यादिकं पापं प्राणिकोटिवधद्भवम्।
शालिग्रामशिलास्पर्शःसर्व दहित तत्क्षणात्।।
पद्मपुराण पाताल ख. रामाश्रवेमेघे अं. 20 विष्णु दृता उंचः।

अर्थ—ब्रह्म इत्यादि पाप और करोड़ प्राणियों के वध करने से जो पाप होता है। वह शालिग्राम शिला का स्पर्श करने से तुरन्त भस्म हो जाता है।

श्रावितं रामनामाशु शिला ह्रदि सुधरिता।
तस्मात्पापसमूहो स्य दग्धः पुण्यकलैवरः।।
पद्मपुराण पाताल खण्ड अ. 20

अर्थ—जो गुरुमुख द्वारा राम नाम श्रवण करके शालिग्राम शिलार्चन में श्रद्धा—विश्वास रखता है, उसके सब पाप भस्म होकर शरीर व अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है।

द्वारवत्यां भवं चक्रं शिला वे गण्डली भवा।
पूंसां क्षणाद्धरत्येव पापं जन्मशताजितम्।।
ब्रह्मणाः क्षत्रियों वैश्वः शूद्रो वेदपति स्थितः।
पद्मपुराण पाताल ख. अ. 20/20

अर्थ—श्रीकृष्ण गण्डकी जिसकी एक धारा दामोदर कुण्ड से और दूसरी धारा काक वैनी में एक होकर चलती है, उस गण्डकी में मिलने वाली जो शालिग्राम शिला है उसका जो जीव

विद्यानुसार उसका पूजन अर्चन करता है उसके सौ जन्मों के अर्जित पाप को वह एक क्षण में हर लेता है। वैदिक मार्ग में चलने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि सभी स्त्री पुरुष गृहस्थ शालिग्राम जी की पूजा करके मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

ब्राह्मणेः पंच पूज्याः स्युश्चतस्रः क्षत्रियेस्तथा।
वैश्यैस्तिस्तथा पूज्या एका पूज्या प्रयत्नतः।।

पद्मपुराण उत्तर ख.अ. 130/5

अर्थ–ब्राह्मण को पांच, क्षत्रिय को चार, वैश्य को तीन अथवा शूद्र को एक शालिग्राम पूजना चाहिए।

पूजयते भवने यस्य शालग्राम शिला शुभा।
कोमलैस्तुलसी पत्रैर्विमुखस्तत्र वै यमः।।
ब्रह्मण क्षत्रियविशां सच्छूद्राणामथापि वा।
शालग्रामेऽधिकरोऽस्ति न चा ऽ न्योषां कदाचन।।
असव्छूद्रगते दास निषेधं विद्धि मानवः।
स्त्रीणामणि च साध्वीनां नैवाभावाः प्रकीर्तिताः।।

स्कन्द पुराण ब्रह्म ख. चतुर्मास मां. अ. 1/144

अर्थ–जिसके घर में मंगलमय शालिग्राम हो और उसे सुकोमल तुलसीपत्र से पूजित किया जाय तो उसके सौ जन्म के पाप नष्ट होते हैं और अगर यमराज भी वहां पर आए तो विमुख होकर लौट जाता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और सत् शूद्र को भी शालिग्राम पूजा का अधिकार है किन्तु नीच कुल में उत्पन्न शूद्र असंत को पूजा का अधिकार नहीं है।

पञ्चसंस्कारसम्पन्नों मंत्ररत्नार्थकोविदः।
शालग्रामशिलायां तू पूजयेत्पुरूषोत्तमम्।।
जप्तं हुतं तथा दानं वन्दनं च जलक्रिया।
शालग्राम समीपे तु सर्व कोटिगुणं भक्ते।।
वैष्णमः पंजसंस्कारेः संस्कृतौहरि मर्चयेतः।

वृद्धहारीतस्मृति अ.

अर्थ–पंच संस्कार से युक्त मत्रा रत्न के अर्थ को जानने वाले भक्त, वैष्णव को चाहिए कि वह शालिग्राम जी में पुरूषोत्तम को पूजे। शालिग्राम जी के समीप में जप, हवन, दान, प्रणाम, अभिशेक, स्नान आदि का सामान्य स्थलों की अपेक्षा करोड़ गुना अधिक फल होता है। पंच संस्कार से सम्पन्न वैष्णव हरि को पूजे।

ब्राह्मणेः क्षत्रियैर्वश्यैः द्रैर्भभक्तिपरायणैः।
स्त्रिया सहैव कर्तव्यं सदा श्रीराम पूजनम्।।
प्रतिबन्धों न विद्येल हरेराराधने क्वचित्।
सर्व पूज्य सदापूज्यों रामो भुवनापावनः।।
सूतके मृतके चापि न त्याज्य रामपूजनम्।
जगत्गुरु श्रीअनन्तानन्दाचार्यप्रणीतः सिद्धान्त दीपकः।।

अर्थ–अपनी पतिव्रता सहधर्मिणी के साथ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व धर्माश्रयी शूद्र को श्रीराम जी की पूजा हमेशा करनी चाहिए। हरि आराधना में किसी भी तरह का कोई प्रतिबन्ध नहीं है। संसार को पवित्र करने वाले श्रीराम जी सर्वदा सभी के द्वारा पूजनीय है। सूतक और मृतक याने किसी के जन्म होने अथवा मृत्यु होने पर भी राम पूजन नहीं छोड़ना चाहिए।

खण्डित स्पूफटितं भिन्नमग्निदग्धं तथैव च।
शालिग्रामशिलाभूतः शैलदोषां न विद्यते।।
सूतके भूतके वापि विष्णु नित्यं तथाचयेत्।
शालग्रामशिलां स्पृष्टवा सद्य एव शुचिर्भवेत्।।
मद्भक्ति बल माश्रित्य मद्ङ्घूयक्तों दीक्षितो यदि।
न त्यजेनमम कर्माणि सूतके मृतकेपि वा।।
अशुचिवां दुराचारां सत्यशौच विवर्जितः।
शालग्रामशिलां स्पृष्टवा सद्य एवं शुचिर्भवेत।।
न मंत्रः पूजनं चैव न तीर्थ न च भावना।
न स्तुतिनों पचारश्च शालग्रामशिलार्चने।।

पद्मपुराण कार्तिकमा. अ 3

अर्थ–शालिग्राम, टूट कर बचा बड़ा भाग हो, उसमें दरार हो, अलग–अलग टुकड़े हो गये हों, अथवा अग्नि में जला हो–सभी पूजनीय हैं। ऐसे टूटे शालिग्राम को क्या पूजना है–ऐसी भावना नहीं होनी चाहिए। इसका कोई दोष नहीं होता है। सूतक अथवा मृतक अवस्था में भी पूजन जारी रखना चाहिए। शिला को स्पर्श करके जीव पवित्र हो जाता है। दीक्षा लिया हुआ मेरा भक्त यदि मेरी भक्ति का आश्रय लेकर सूतक अथवा मृतक काल में भी मेरी पूजा आदि कर्म को न त्यागे तो अपवित्रता उसे स्पर्श नहीं करती है। तीर्थ नहीं गया, मंत्रानुसार पूजन नहीं जानता, स्तुति नहीं जानता, पूजा सामग्री नहीं है आदि भावना व आत्मग्लानि भी पूजन में नहीं करनी चाहिए। मंत्र आदि के अभाव

में शुद्ध भावना से शालिग्राम जी का पूजन करना चाहिए। यदि कुछ भी न हो तो तुलसी द्वारा भी पूजा हो सकती है तथा विधानपूर्वक पूजन करने का अपना विशिष्ट महत्व है।

शालिग्रामशिलायां च तुलसीदलकल्पिताः
पूजा श्रीरामचन्द्रस्य कोटिकोटिगुणाधिकाः।
स याति शाश्रवतं ब्रह्म पुनरावृतिदुर्लभम्।।

अगस्त्यसंहिता अ. 13 तथा अ. 6

अर्थ–शालिग्राम जी को तुलसी पत्र मंजरी चढ़ाकर श्रीरामचन्द्रजी की पूजा करने का करोड़ गुना अधिक फल है। श्रीरामचन्द्र जी की पूजा यदि दैनिक मात्र तुलसीदल से ही की जाय तो सह पूजन ब्रह्म सायुज्य को देने वाला है, जन्म–मरण नहीं होता।

शालग्रामशिलयां तु त्रैलोक्यं स चराचरम्।
मया सह महासेन लीन तिष्ठित सर्वदा।।
कोटिलिगंसहस्त्रेस्तु पूजितेर्जाह्णवीतटै।
काशीवासे युगान्यष्टो दिनमेकेन तद्भवेत्।।

अर्थ–हे महासेन, शालिग्राम शिला पर मेरे साथ तीनों लोक सहित स्वर्ग उपस्थित रहता है। सभी चराचर मुझमें ही लीन रहते हैं। गंगा तट पर हजारों–करोड़ों शिवलिंग पूजने से और काशी जी में अनेक युगों तक निवास करने का जो फल होता है वह पुण्य फल शालिग्राम जी के उत्पत्तिस्थल में एक दिन निवास करने व एक दिन शालिग्राम पूजन से प्राप्त हो जाता है।

सदा काष्ठस्थितो वहिनर्मथनेन प्राकश्यते।
यथा तथा हरिव्यापी शालग्रामें प्रतीयते।।

पद्मपुराण पाताल ख.अ.

अर्थ–जैसे हमेशा लकड़ी पर रहने वाली आग काष्ठ मंथन द्वारा प्रकट होती है, उसी प्रकार चराचर व्यापी हरि जी भी शालिग्राम जी के रूप में साक्षात् दर्शन दे रहे हैं।

गृहे लिंगद्वयं नार्च्य शालग्रामद्वयं तथा।
देवीद्वयं तथा नार्च्य गणेशत्रायमेव च।।
द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्चेत्सूयर्य द्वयं तथा।
द्वे शंखे नार्च्ययेच्चैव भग्नां च प्रतिभां तथा।
शालग्रामसमाः पूज्याः समेषु द्वितय नहि।
विषमा नैव संपूज्या विष्णुष्वेक एव हि।।

वायुपु. तथा पद्मपु. कार्तिकमा. अ02/14

अर्थ–दो गोमती चक्र, दो सूर्य, दो शंख अथवा खण्डित मूर्ति का पूजन नहीं करना चाहिए, किन्तु एक शालिग्राम को पूज सकते हैं।

सूक्ष्मद्वारचतुश्चक्रो वनमालांकितोदरः।
लक्ष्मीनारायणः श्रीमानभूक्तिमुक्तिफलप्रदः।।
पूजनीयः सदा भक्तया मुक्तिमान्स नरो भवेत्।
सूदर्शनाख्यमेकेन द्वीयां नारायणः स्मृतः।।
त्रिमिश्चैवाच्युतः प्रोक्तश्चतुश्चक्रो जनार्दनः।
पञचभिर्वासुदेवः स्यात्षड्भिः प्रद्युम्न एव च।।
संकर्षणः सप्तभिः स्यादष्टभिः पुरूषोतमः।
नवव्यूहस्तु नवभिदशभिर्दशजन्मताम्।।

अर्थ–छोटा–सा मुखारविन्द हारे, चार चक्र और वक्ष पर वनमाला हो तो ऐसे ठाकुर जी भक्ति–मुक्ति फल को देने वाले श्रीमान लक्ष्मी नारायण जी होते हैं, जो सदा पूजनीय हैं। अतः भक्तिपूर्वक उनको पूजने वाला भक्त मुक्त हो जाता है। एक चक्र वाले सुदर्शन, दो चक्रवाले जनार्दन भगवान होते हैं। पांच चक्र वाले वासुदेव, छह चक्रवाले प्रद्युम्न, सात चक्र संकर्षण तथा आठ चक्र वाले पुरूषोत्तम भगवान हैं– एक शालिग्राम में नौ चक्र होते हैं ऐसा शालिग्राम नवव्यूह का अवतार माना जाता है और दस चक्र हों तो राम–कृष्ण आदि दस अवतार के रूप में माने जाते हैं।

ये केचितत्र पाषाण विष्णुचक्रेण मर्दिताः।
तेषां दर्शनमात्रेण मुच्यते सर्वपातकः।।

अर्थ–जो कोई भी पत्थर–भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र द्वारा अंकित होकर कट कर चक्र सरीखे होंगे उनके दर्शन से सम्पूर्ण पातक से मुक्ति मिल जाती है।

न गुरूर्न च मन्त्रोऽस्ति न तपो च भावना।
न स्तुतिनों पचारश्च चक्रांकितशिलार्चने।।

अर्थ–चक्र से युक्त शालिग्राम पूजने में गुरुमंत्र, तप, भावना, स्तुति और सामग्री–किसी की भी जरूरत नहीं है।

म्लेच्छ देशे शुचिस्थाने चक्राकं यत्र तिष्ठति।
सर्वतो योजनं यावत् क्षेत्रमच्युते।।
तन्मध्ये म्रियते यस्तु पूतस सुमहातपाः।।

अर्थ–पवित्र हो अथवा म्लेच्छ, जिस देश में जहां पर चक्राकित वाले शालिग्राम रहते हैं वहां एक योजन का सभी ओर से अच्युत भगवान का क्षेत्र माना जाता है–यानी, पावन क्षेत्र माना जाता है।

कोटि द्वादशलिगैस्तु पूजितैः स्वर्णपंकजैः।
शालग्राम शिलायास्तु होकेनाहनाहि तत्कलम।।

अर्थ–सोने के कमल से बारह करोड़ शिवलिंग पूजन का जो फल है वह एक सुवर्ण कमल चढ़ाकर एक दिन शालिग्राम पूजा से होता है।

गंगागोदावरी रेवानद्यो मुक्तिप्रदाश्चयाः।
निवसन्ति हिताः सर्वा शालिग्राम शिलाजले।।

अर्थ–मुक्ति देने वाली जो गंगा, गोदावरी, सेवा आदि नदियां हैं वह सब शालिग्राम शिला के जल में निवास करती हैं। नेपाल में दामोदर कुण्ड और नारायण धाम से शालिग्राम नदी आती है, उन नदियों में असंख्य शालिग्राम जी रहते हैं अतः उस नदी में सभी मुक्तिदायी नदियां समावेश करती हैं और जिस संपुट रखकर शालिग्राम जी को स्नान करावेंगे उस चरणोदक में भी सभी नदियां रहेंगी।

पञचगव्य साहस्रैस्तु सेवितैः किं प्रयोजनम्।
कोटि तीर्थ सहस्रैस्तु सेवितैः किं प्रयोजनम्।।
तोयं यदि पिवेत् पुण्यं शालिग्रामशलांगंजम्।।

अर्थ–यदि शालिग्राम भगवान का चरणोदक प्रतिदिन पीने का अवसर प्राप्त होवे तो उस भक्त को हजार बार पंचगव्य पान तथा हजार करोड़ तीर्थ सेवन का फल प्राप्त होता है। तीर्थ यात्रा से भी कोई प्रयोजन नहीं है।

शालग्राम शिला यत्र तत्तीर्थयोजनत्रयम्।
तत्र दानं च होमश्च कर्मकोटि गुणं भवेत्।।

अर्थ–जहां शालिग्राम जी होंगे वहां तीन योजन अर्थात सब ओर से 24 मील की भूमि तीर्थ बन जाती है, और वहां पर दान–होमादि शुभ कर्म करोड़ गुना अधिक फल देने वाले होते हैं जबकि साधारण भूमि पर किया गया एक ही गुना होता है।

शालिग्रामशिला तोयं या पिवेद् बिन्दुनासमम्।
मातृः स्तन्यं पुननैंव स पिवेद् विष्णुभाङ्कनरः।।

अर्थ—एक बूंद के बराबर जो चरणोदक पियेगा वह विष्णु को प्राप्त करने वाला विष्णुभागी नर फिर माता का स्तन पान नहीं करेगा अर्थात् पुनर्जन्म नहीं होगा।

शालिग्राम समिपे तु क्रोशमात्र समन्ततः।
कीटकोऽपिमृतोर्याति वैकुण्ठभवनं परम्।।

अर्थ—शालिग्राम जी के एक कोश अगल—बगल भूमिका कीड़ा भी मरकर परम पद वैकुण्ठ धाम को पाता है।

द्वार द्वये चतुश्चक्र गोष्पदेन समन्वितम्।
रघुनाथामिघं ज्ञेय सहितं वनमालया।।

अर्थ—यदि किसी शालिग्राम में दो छिद्र (द्वार) हों तथा द्वार के ऊपर—नाचे हों और श्रीवत्स हो (गोवत्स) पांच का निशान हो और वनमाला भी हो तो ऐसे ठाकुरजी रघुनाथ रामजी होते हैं। (गोमतीचक्र पहचान)

द्वारकोद्भव चक्राढयो बहुचक्रेण चिहिनतः।
चक्रासन शिलाकार चितस्वरूपोनिरञजनः।।

अर्थ—गोमती द्वार से उत्पन्न होने वाला गोमती चक्र जिसमें बहुत से चक्रों से उक्त शिला का आकार और आसन भी चक्र जैसा हो, ऐसा गोमती चक्र माया से परे तथा चैतन्यस्वरूप होता है।

।। इति ।।

9

शालिग्रामादि के पूजन में मूर्ति संख्या निर्णय

गृहे लिंगद्वय नार्च्य शालिग्रामद्वय तथा।
देवीद्वय तथा नार्च्य गणेश्त्रमेव च।

अर्थ–घर शंकर जी की दो मूर्ति (लिंग), दो शालिग्राम, दो देवी तथा तीन गणेश की पूजा नहीं करनी चाहिए।

द्वे चक्रे द्वारकायस्तु नाचत्सुय्सद्वयं तथा।
ह द्वे शंखे नार्चयेच्चैव भग्नां च प्रतीमा तथा।।

अर्थ–दो शंख और द्वारिका जी के दो चक्र, दो सूर्य तथा टूटी प्रतिमा का पूजन नहीं करना चाहिए।

शालिग्रामाः समा पूज्या संदेह द्वितीयं नहिं।

अर्थ–निष्ठायुक्त, वानप्रस्थ, विरक्त–एवं ब्रह्मचारियों को जन्म मरण का अशोच नहीं लगता।

यतीनां चैव सर्वेषां नो दाहों नोदकक्रिया।
दशमात्रादिक तेषां न कर्तव्यं सुतादिभि।।
गंगादीनामभाव हि पृथिव्यां स्थापने स्मृतम्।
यत्र सन्ति महानद्यस्तदा तास्वेव निक्षिपेत्

अर्थ–विरक्त तथा वैष्णव महात्माओं के देहत्याग के बाद उनके पुत्रादिकों को दाह तथा श्राद्धादिक क्रिया नहीं करनी चाहिए। जहां पर गंगा आदि नदी हों, गंगा में प्रवाह कर देना चाहिए। यदि नदी न हो तो भूमि में खोदकर स्थापित कर देना चाहिए।

विषमा नैव संपूज्या विषमेकश्वेक एव हि।।

अर्थ–शालिग्राम की पूजा दो से अतिरिक्त क्रम संख्या में करनी चाहिए। विषम संख्या में शालिग्राम का पूजन निशिद्ध है। यदि, करे तो एक संख्या में की जा सकती है।

शालिग्राम पूजन का अधिकार

ब्राह्मणा क्षत्रियविशां सच्छ द्राणामषापिषा।
शालिग्रामेघकारोऽस्ति् न चान्येषां कदाचन्।।

अर्थ–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा सज्जन शूद्रों को शालिग्राम पूजन का अधिकार है अन्य को नहीं।

पंचसंस्कारसम्पन्नें मंत्ररन्तार्थकोविदः।
शालिग्रामशिलायां तु पूज्येत्पुरूषोत्तम्।।

महात्म्य

यस्मिन् क्षेत्रे स्थितों जन्तुस्तं क्षेत्रमनुवत्सरम्।
प्रदक्षिणादिभिधमैं :–स्दापराधान् क्षमापयेत्।।
प्रति सम्वत्सर चैव परिक्रामति यो नरः।
क्षेत्रापराधदोषैश्च न स लिप्येत् पातकेः।।
प्रदक्षिणामकुर्वाणः क्षेत्रसिद्धि न विन्दति।
तस्मात्प्रदद्विक्षणा तीर्थे दातव्या च फलार्थिभिः।।

10

बालकाण्ड

सकल धर्म देखई बिपरीता। कहि न सकई रावन भय भीता।
घेनु रूप धरि ह्रदय बिचारी। गई तहां जहं सुर मुनि झारि।
निज संताप सुनाएसि रोई। काहू ते कछु काज न होई।।

छं०– सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सबां से बिरंचि के लोका।
सैंग गोतनुधरी भूमि बिचारी परम विकल भय सोका।।
ब्रह्मां सब जाना मन अनुमाना मोर कछु न बसाई।
जा करि तै दासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाई।।

सो०– धरनि धरहि मन धीर कह बिरंचि हरपिद सुमिरु।
जानत जन की परी प्रभु भंहिहि दारुन बिपत्ति।।

बैठे सुर सब करहि बिचारा। कहँ पाइअ प्रभु करिब पुकारा।।
पुर बैकुंठ जान कह कोई कोउ कह पयनिधि बस प्रभुसोई।।
जाके ह्रदयें भगति जसि प्रीती। प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहि रीति।।
तेहि समाज गिरिजा में रहेउँ। अवसर पाई बचन एक कहेउँ।।
हरि ब्यापक सर्बत्रा समाना। प्रेम ते प्रगट होहि में जाना।।
देस काल दिसि बिदिसिहू माहीं। कहहु सो कहां जहां प्रभु नाहीं।।
आग जगमय सब रहित बिरागी। प्रेम ते प्रभु प्रगटई जिमि आगी।।
मोर बचन सब के मन माना। साधु साधु करि ब्रह्म बखाना।।

दो०– सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर।
अस्तुति करत जीरि कर सावधन मतिधीर।।

छं०– जय जय सुरनायक जन सुख दायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता।।
पालन सुर धरनी अदभुत करनी भरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाल करउ अनुग्रह सोई।।

(3)

जय जय अविनासी सव घट बासी व्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा।।
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृंद।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा।।
जेहिं सृष्टि उपाई भिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अधारी चिंता हमारी जानिअ भगति न पूजा।।
जो भव मय भंजन मुनि मन रंजन गंजन विपति वरूथा।
मन वच क्रम वानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा।।
सारद श्रुति सेषा रिषय अक्षेषा जा कहुं कोउ नाहि जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्री भगवाना।।
भव बारिधि मंदर सब विधि सुंदर गुनमंदिर सुंखपुजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम ययातुर नमत नाथ पद कंजा।।

दो०-- जानि समय सुर भूमि सुनि वचन समेत समेह।
गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह ।।186।।

श्री राम चन्द्र जी के राज्य अभिषेक के समय समस्त देवताओं द्वारा की गई प्रार्थना

दो०— सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्हि उदार।
अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार।।13 (क)।।
बैनतेय सुनु संभु तब आए जहं रघुबीर।
बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर।।13 (ख)।।

छं०— जय राम रमारमनं समनं। भवताप भयाकुल पाहिजनं।
अवधेस सुरेस रमेस विभी। सरनागत मागत पाहि प्रभो।।1।।
दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत–दूरि महा महि भूरि रूजा।
रजनीचर बूंद पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे।।2।।
महि मंडल मंडनचारूतरं। धूत सायक चाप निषंग बरं।
मद मोह महा ममता रजनी। तम पूंज दिवाकर तेज अनी।।3।।
मनजात किरात निपात किए। मृग लोग कुभोग सरेन हिए।
हतिनाथ अनाथनि पाहिहर। बिप्रया बन पावैर भूति परे।।4।।
बहुरोगबियोगन्हिलोगहुए। भवदंध्रि निरादर के फल ए।
भव सिंधु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते।।5।।
अतिदीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्ह के पद पंकज प्रीति नहीं।
अवलंब भवंत कथा जिन्ह के। प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के।।6।।
नहि राग न लोम न मान मदा। तिन्ह के सम बैभव वा बिपदा।
एहि ते तब सेवक होत मुदा। मुनित्यागत जोग भरोससदा।।7।।
करि प्रेम निरंतर नेम लिएं। पद पंकज सेवत सुद्ध हिंए।
सम मानि निरादर आदरही। सब संत सुखी बिचरंति मही।।8।।

11

रामचरितमानस

मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुबीर महा रनधीर अजे।
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोक महागद मान अरी।।9।।
गुन सील कृपा परमायतन। प्रनमामि निरंतर श्रीरमन।
रघुनंद निकंदय द्वंदयघनं। महिपाल बिलोकय दीन जन।।10।।

दो०– बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग।
पदसरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग।।114 (क)।।
बरनि उमापति राम गुन हरिष गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास।।14 (ख)।।

सुनु खगपति यह कथा पावनी। त्रिबिध ताप भव भय दावनी।।
महाराज कर सुभ अभिश्षेका। सुनत लहहि नर बिरति बिबेका।
जे सकाम नर सुनहि जे गावहि। सुख संपति नाना बिधि पावहि।।
सुर दर्लभ सुख करि जग माही। अंतकाल रघुपति पुर जाही।।
सुनहि बिमुक्त बिरत अरु बिषई। लहहि भगति गति संपति नई।।
खगपति राम कथा मैं बरनी। खमति बिलास त्रास दुख हरनी।।
बिरति बिबेक भगति ढूढ़ करनी मोह नदी कहें सुन्दर तरनी।।
नित नव मंगल कौसलपुरी। हरषित रहहि लोग सब कुरी।।
नित नई प्रीति राम पद पंकज। सब के जिन्हहि नमतसिवमुनि अज।।
मंगन बहु प्रकार पहिराए। द्विजन्ह दान नाना विधि पाए।।

दो०– ब्रह्मानंद मगन कपि सब के प्रभु पद प्रीति।
जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति।।15।।

12

श्रीराम पूजनविधि

(प्रथम)
तन्त्रोक्त

किसी भी देवी–देवता का विशेष–पूजन आरम्भ करने से पूर्व सर्वप्रथम विघ्नविनाशन "गणेशजी" का पूजन करना आवश्यक है, अतरू "रामपूजन" आरम्भ करने से पूर्व आगे लिखे मंत्रों द्वारा श्रीगणेशजी का ध्यान तथा पूजन करना चाहिए।

पूजन की विधि यह है कि सर्वप्रथम स्नानादि से निवृत्त होकर मन की शुद्धि सहित, पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर, शिखा में गाठ बांधकर, नवीन यज्ञोपवीत धारण करें। फिर इष्टदेव की मूर्ति अथवा उसके प्रतीक यन्त्र को ताम्र पत्र आदि पर खुदवाकर बारम्बार पूजन के उपयोग में लाया जा सकता है अथवा कुंकुम या चावलों द्वारा देव–मूर्ति के समक्ष चित्रित किया जा सकता है। देव–पूजन के साथ ही यन्त्रा का भी पूजन करना चाहिए।

जल पूर्ण कुंभ (कलश) तथा पूजन–सामग्री को एकत्र करके आसन के समीप ही रख लेना चाहिए तथा देवता की मूर्ति के समक्ष शुद्ध धृत का दीपक प्रज्वलित कर धूप–अगरबत्ती आदि जला देनी चाहिए। फिर स्वस्तिवाचन, पवित्रीकरण एवं भूत–शुद्धि की क्रियाएं सम्पन्न कर, गणेशजी का ध्यान करने के बाद "कल्प–वाक्य" का उच्चारण करें, तदुपरांत इष्टदेव की सविधि पूजा आरम्भ करें। पूजन के अन्त में स्तोत्र, चालीसा आदि पाठ कर, आरती, प्रदक्षिणा एवं पुष्पांजलि के कृत्य पूरे करने चाहिए।

चैत्र शुक्ल नवमी श्रीरामचन्द्र जी का जन्म दिन है, अतः इस तिथि को व्रत रखकर श्रीरामजी का विधि–विधान सहित पूजन करने से अक्षय–पुण्य प्राप्त होता है।

ऊँ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूष विश्ववेदा
स्वरित नस्ताक्ष्यों आरिष्ठ नेमिः स्वसिस्तनों बृहस्पतिर्दघातु।।9
ऊँ पयः पृथव्या पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्ष पयोधाः
पयस्वतीः प्रदिषः मह्मम् 11–2

13

श्रीराम पूजन–सामग्री
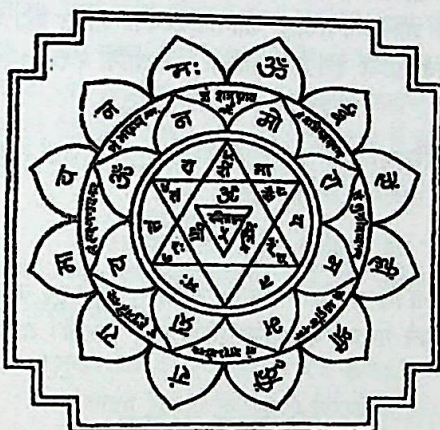
श्रीरामचन्द्र जी के पूजन अर्चन के लिए निम्नलिखित वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

रेशमी वस्त्र (पीले)	दीपक
श्वेतपत्र	धूप
यज्ञोपवीत	कपूर
पीला चन्दन	पान
पुष्पमाला	सुपारी
पंचावामृत	नैवेद्य
ऋतुफल	नारियल
गंध (इत्र)	चावल
कलश	आसन

इसके अतिरिक्त बतासे, जल, अगरबती आदि वस्तुओं की भी आवश्यकता होती है।

ऊँ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवांसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वा–11–3 विष्णुवेनमः
ऊँ अग्निर्देवता वार्तो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता
वसवां देवता रूद्रा देवता दित्या देवता मरूतो देवता
विश्रवेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता–वरूणो देवता 11–4
ऊँ द्योः शान्तिरन्तरिक्ष, शान्तिः पृथ्वी शान्तिसपः शान्ति
रोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्रवेदेवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः
सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्ति रेधि 11–5
शान्तिः शान्तिः शान्तिर्भवतु।।

टिप्पणी–उक्त स्वस्तिवाचन मैं तथा आगे वर्णित मन्त्रों में जहां तथा इस प्रकार के चिन्ह हो वहां "ख" की भांति उच्चारण करना चाहिए।

जैसे–"सर्व–शान्ति" का उच्चारण सर्वग्व शान्ति होगा।

स्वस्ति वाचनोपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल से तीन बार आचमन करें तथा तीन बार अपने मस्तक पर थोड़ा–थोड़ा जल छिड़के। तदुपरान्त दोनों हाथों को शुद्ध जल से धोलें।

पवित्रीकरण का मन्त्र

ऊँ अपवित्राः पवित्रा वा सर्वावस्थां गतांऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

फिर हाथ धोकर 'भूत शुद्ध' के लिए निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें–

भूत–शुद्धि का मन्त्र

ऊँ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

"भूत शुद्धि" के उपरान्त दाएं हाथ में जल, अक्षत तथा यज्ञोपवीत लेकर अग्रलिखित संकल्प वाक्य का उच्चारण करें।

संकल्प–वाक्य

हरि ऊँ तत्सत्। नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद् भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतबाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविशतितमें कलियुगे

कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीप भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत देशैक पुण्यक्षेत्रे शष्ठि संवत्सराणा मध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौं, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथी, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' वासरे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्य, चन्द्रेद्व भौमेंद्व बुधे, गुरो, शुक्रे, शनि, राहो, केतो, एवम् गुण विशिष्टायां तिथी, 'अमुक' गोत्रोत्पन्न, 'अमुक' नाम शर्मा (वर्मा इत्यादि) ऽहं धर्मार्थ काम मोक्षहेतवे श्री गणपतीत्यादि सहितं श्री रामचन्द्र देवस्य पूजनमहं करिष्ये।

उक्त संकल्प–वाक्य जहां–जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां क्रमशः वर्तमान संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, बार सूर्यादि नव ग्रहों की राशियों के नाम, अपना नाम तथा अपने गोत्र के नाम का उच्चारण करना चाहिए। ब्राह्मण को शर्माऽह, क्षत्रिय को वर्माऽहं, वैश्य को गुप्ताऽहं "संकल्प–वाक्य" के पश्चात दाएं हाथ में चावल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए "श्रीगणेशजी" का ध्यान करना चाहिए।

'श्रीगणेश–ध्यान मन्त्र

हाथ में दूर्व, पूष्प तथा जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए सर्वप्रथम 'श्रीगणेशजी' का ध्यान करना चाहिए–

सुमुखश्चौक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो मालचन्द्रो गजाननः।
द्वाद्वशै तानि नामानि यः पठेच्छूणुयादपि।।
विधरम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमें तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शश्विर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदन ध्यायंत्सर्व विघ्नोपशान्तये।।

उक्त मन्त्रों से 'श्रीगणेशजी का ध्यान करने के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्रों से श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान करें–

श्रीराम ध्यान मन्त्र

नीलाम्बुज श्यामल कोमलागं, सीता समारोपित वाम भागम्।
पाणौ महा सायक चारू चाप, नमामि राम रघुवंश नाथम्।।1।।
श्रीरामचन्द्र रघुपुगंव राजवर्य, राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेशं।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्रं, दासाऽहमद्य भक्तः शरणागताऽस्मि।।2।।

ध्यायेदाजानु बाहूँ धृतशरानुषं वद्ध पद्मासनस्थं,
पीतंवासोवसान नवकमल दल स्पर्धिनेत्र प्रसन्नम्।
वामांकारुढ़ सीता मुख कमल मिललेचनं नीरदाभं,
नानालंकार दीप्त दधतगुरु जटामण्डलं रामचन्द्रम्।।3।।
लोकाभिराम रणरंग धीरं राजीव नेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्य रूपं करूणाकरं तं श्रीरामचन्द्र शरण प्रपद्ये।।4।।
रामाय राम भद्राय रामचन्द्राय वेघसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।5।।
ध्यानोपरान्त क्रमशः निम्नानुसार 'आवाहन' करें

आवाहन का मन्त्र

'आयाहि भगवन् राम जगदीश्वर दयानिधे।
प्रसन्नोभव देवेश नमस्तुभ्यं सदा विमो।।

उक्त मन्त्र द्वारा श्री रामजी का 'आवाहन्' करके निम्नलिखत मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आसन' ग्रहण करें।

आसन का मन्त्र

'श्रीराम जानकीनाथ अयोध्यापति पाहिमाम्।
आसनन्दिव्य देवेश दास्ये ऽ हन्तुम्यमीश्रवरम्।

'आसन' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए पाद्य के रूप में पृथ्वी पर 3 बार जल छिड़कें–

पाद्य का मन्त्र

राघवेन्द्र कृपानाथ नरकार्णवतारके।
पाद्यं गृहाण देवेश मम सौख्य विवर्धय।।

पाद्य के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए अर्घ्य के हेतु पृथ्वी पर 3 बार जल छिड़कें–

अर्घ्य का मन्त्र

'कोशल्यासुत श्रीराम नारायण नमोऽस्तुते।
अर्घ्य ग्रहाण देवेश सर्वार्थ सिद्धिदायक।।

'अर्घ्य' के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमनीय' के रूप में 3 बार पृथ्वी पर जल छिड़कें–

आचमन का मन्त्र

'मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव सम्यगाचम्यतां प्रभो।।

'आचमनीय' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पंचामृत स्नान' करना चाहिए।

पंचामृत–स्नान का मन्त्र

'स्नान पंचामृतैदेव गृहाण पुरूषोत्तम।
अनाथनाथ सर्वज्ञ गीर्वाण प्रएति प्रियः।।

'पंचामृत स्नान' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'शुद्ध जल' से स्नान कराना चाहिए–

शुद्धोदक–स्नान का मन्त्र

'गंगा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा।
सरस्वत्यादि तीर्थानि स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।।
करार्थो जीवः सकल विधिकैकःर्यानिपुर्णः
तयोर्मध्यकारों युगलमथ संबंधमनयो–
रनन्यार्हं ब्रूते त्रिनिगमस्त्रारूपोयमतुलः।।

अर्थ–रकार का अर्थ सगुण ब्रह्म, परमेश्वर्य के साक्षात स्वरूप श्रीराम जी हैं। मकार का अर्थ सर्व की सेवा और धर्म में निपुण पांच प्रकार के (नित्य, मुक्त बुद्ध, मुमुक्ष और केवल जीव) हैं रकार और मकार के मध्य जो आकार है, वह ब्रह्म और जीव का जो नव प्रकार का संबंध है उसको अनन्य अधिकारी जान आश्चर्य होकर श्री जानकी जी उपदेश करती है अर्थात् वह आकार श्री जानकी जी का स्वरूप है प्रमाण भी मिलता है।

रकारो रामचन्द्रः स्यात् सच्चिदानन्द विग्रहः।
अकारो जानकी प्रोक्तो मकारो लक्ष्मणः स्त्रराट्।।

(अगस्त सहिता)

रकारो रामस्वरूपस्तु मकारस्तस्य सेवकः।
आचार्यस्तुह्यकार स्यात्तयो सयोजनाय च।।

अर्थात् रकार रामरूप, मकार लक्ष्मण रूप तथा आकार श्री जानकी जी को बताया गया है। उक्त प्रमाणों से आकार आचार्य–शेष शषि भाव, जन्य जनक भाव, पति–पत्नी भाव, नियाम्य नियामक भाव, अधाराधेय भाव, शरीर भाव, शरीर शरीरिमात्र धर्मधर्मि भाव और रक्षयरक्षक भाव ये नव प्रकार के संबंध जीव और ब्रह्म के हैं।

रूप श्री जानकी जी का होना सिद्ध है। बिना जानकी जी की कृपा से किसी का उद्धार होना कठिन है। जीवमात्र की पुरुषकार रूप आप है। यह तीनों वेदों का अतुल सिद्धांत है।

अब श्री भगवत्पूजन के नियम एवं विधन क्रमशः लिखे जा रहे हैं, प्रथम अर्चक स्नान संध्योपासन तिलक आदि कर लें तब पूजन करें अन्यथा निष्फल है तत्र प्रमाण–

अथ श्री भगवत्पूजन विधि

प्रातः कृत्यमकृत्वा तु यः पूजयति केशवम्।
तस्य पूजां निष्फलान्यान्मद्यस्पर्श पयो यथा।।
तस्मात्पूर्व प्रयत्नेन नित्याचार समाचरेत्।

अर्थ–बिना प्रातः का कृत्य (संध्यादिक) किए हुए जो भगवान् की पूजा करता है उसकी पूजा मदिरा से छुए दूध के समान निष्फल हो जाती है। अतः विधिवत नित्यक्रिया समाप्त करके पूजन करना चाहिए।

प्रतिमा–प्रकार

शैली दारूमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती।
मणिमयी मनोमयी प्रतिमाष्टविधा स्मृता।।

कुछ महानुभाव इसको रामानुज स्वामी कृत मन्त्रार्थ कहते हैं किन्तु यह उनका भ्रम है! स्पष्ट सिद्ध है कि रामानुज स्वामी के जितने ग्रंथ हैं किसी में इस अर्थ का किसी प्रकार विचार नहीं किया गया है। जिस पुस्तक में रामानुज स्वामी कृत लिखा हो उसे अशुद्ध समझना चाहिए।

अर्थ–शिला की, काठ की, लोह की, मिट्टी की, कागजादि के चित्र पट, बालू की, मणि की और मन की कल्पित ये आठ प्रकार की प्रतिमा होती हैं।

मृदा च रम्यत्नेन ताम्रेण रजतेन वा।
कृत्वा दारूमयीं विम्बमर्चनं कांचनेनवा।।

पुण्यं शतगुणं विद्यादेतेषामुत्तरोत्तरम्।
यस्मिन् सन्निहितो विष्णुः स्वयमेव नृणां भुवि।।

अर्थ–मिट्टी से, सुन्दर रत्नों से, चांदी से, लकड़ी से अथवा स्वर्ण से निर्मित प्रतिमा का पूजन करने में उत्तरोत्तर सौगुना फल मिलता है। मूर्ति में भगवान् स्वयं सन्निहित रहते हैं।

मूर्ति की प्रतिष्ठा अवैष्णवों के द्वारा कराना निषिद्ध है यथा–

देवतान्तरभक्तो वा समबुद्धिस्थापिवा।
नास्तिको वदहीनो वा नप्रतिष्ठां समाचरेत्।।

(पराशर स्मृति)

अवैष्णवेन विप्रेणे स्थापिते मधुसूदने।
तद्राज्यं भूपतिर्वापि विनाशमुपजायते।।

(हारीत स्मृति)

अवैष्णवस्थापितानां प्रतिमानां च बन्दनम्।
यः करोति स मूढात्मा रौरवं नरकं ब्रजेत्।।
तस्मादवैष्णवान् विप्रान्न कर्मणि नियोजयेत।

(वशिष्ठ स्मृति)

अर्थ–जो राम से अन्य देवता का भक्त हो, अन्य देवता को रामजी के बराबर मानता हो, नास्तिक अथवा वेदहीन हो उससे प्रतिष्ठा न करावे, हारीत स्मृति में लिखा है कि अवैष्णव ब्राह्मण की स्थापित की हुई भगवान की मूर्ति राज्य को अथवा राजा को नष्ट कर देती है। वशिष्ट स्मृति में लिखा है कि अवैष्णव के द्वारा स्थापित की हुई मूर्तियों की जो वन्दना करता है वह रौरव नरक में जाता है इससे अवैष्णव ब्राह्मणों से मूर्ति की प्रतिष्ठा नहीं करानी चाहिए। मंदिर के द्वार पर मछली आदि का चिन्ह न बनावे केवल धनुष, बाण, तिलक आदि होना चाहिए। और अपने सम्प्रदाय के अनुसार अपने गुरु के दिए हुए मंत्र से पूजन करना चाहिए। पूजा षोडश प्रकार की है आसन 1, पाद्य 2, अर्घ 3, आचमन 4, स्नान 5, वस्त्र 6, भूषण 7, यज्ञोपवती 8, धूप 9, दीप

10, पुष्प 11, नैवेद्य 12, ताम्बूल 13, आरती 14, गंध 15, नमस्कार 16 यह सब कर्म श्रीराम मंत्र ही से करें। श्री सीतायै स्वाहा इससे श्री सीता जी की, ऊँ लं लक्ष्मणाय नमः इससे लक्ष्मण जी की ऊँ हं हनुमते नमः इससे हनुमान जी की पूजा करे। इसी प्रकार से आगे पूजन की विधि मंत्र सहित लिखी जा रही है।

शंख की प्रार्थना का मंत्र

त्वं पुरा सागरोत्पन्ने विष्णुनां विधृतः करे।
नमन्ति सर्वदेवास्तु पाच्अपजन्यं नमोऽस्तु ते।।

अर्थ–हे पाच्अजन्य तुम सागर से उत्पन्न हो श्री विष्णु जी के कर में धारण किए गये सर्वदेव तुम्हें प्रणाम करते हैं। मेरा भी प्रणाम है।

घण्टा की प्रार्थना

सर्वनादमयी घण्टा देवदेवस्य बल्लभा।
त्वन्निनादेनं सर्वेषां शुभं भवति शोभने।।

अर्थ–सब प्रकार के स्वरों से युक्त देवताओं की प्रिय घंटे सोभने! तुम्हारे बोलने से सबका शुभ होता है।

उत्थापन मंत्र

उत्तिष्ठोतिष्ठ भद्रं ते उत्तिष्ठ जगदीश्वर।
त्वयि उत्थायमाने तु उत्थितं भुवनत्रयम्।।
उत्तिष्ठोतिष्ठ श्रीराम उत्तिष्ठ जानकीपते।
उत्तिष्ठ कमलाकांत त्रैलोक्ये मंगलं कुरू।।

अर्थ–हे विश्व के स्वामी! उठो दो आपको शुभ हो आप, ही के उठने से तीनों लोक उठेंगे। हे श्रीराम जी! हे श्री जानकी–पते! हे कमलापते! उठो दो और तीनों लोक का मंगल करो।

आवाहन करने का मंत्र

आगच्छ भगवन् विष्णो स्वस्थानात्परमेश्वर।
अहं पूजां करिष्यामि सदा त्वं सम्मुखो भव।।

अर्थ–हे भगवान्। विष्णो! अपने स्थान से आइये मैं आपकी पूजा करना चाहता हूं। भगवान! सम्मुख हो जाइये।

आसन प्रदान करने का मंत्र

सिंहासने सुवर्ण नानारत्नोपशोभिते।
अनंतफणपत्रस्य उपविशासने प्रभो।।

अर्थ—प्रभो! नाना प्रकार के रत्नों से जड़े हुए तथा अनन्त फणपत्रों से पूर्ण सुन्दर आसन पर बिराजमान होइये।

पाद्य—मंत्र

सर्वोषधि समायुक्तं गंध पुष्पादिवासितम्।
पाद्य गृहाण देवेश भक्तानुग्रहकारक।।

अर्थ—समस्त औषधियों से पूर्ण, गंध पुष्पादिकों द्वारा सुगन्धित पाद्य को हे भक्तों पर दया करने वाले प्रभो ग्रहण कीजिए।

अर्घ्य—मंत्र

शंखतोयं समानीतं तुलसीदर्भसंयुक्त्
अर्घ्य गृहाण देवेश प्रीत्यर्थ मे सर्वदा।।

अर्थ—हे देवेश! तुलसी दलादिक से संयुक्त शंखतोष का अर्घ्य ग्रहण कीजिए और मेरे ऊपर प्रसन्न रहिए।

इसके पश्चात ऊँ विष्णुः ऊँ विष्णुः ऊँ विष्णुः इस मंत्र से तीन बार आचमन कराने के बाद मधुपर्क करावे।

मधुपर्क—मंत्र

दधि दुग्धं मधु सर्पिः शर्करा च तथा प्रभो।
समर्पयागि देवेश प्रीत्यर्थ प्रतिगृह्यताम्।।

अर्थ—हे प्रभो! दधि, दूध, मधु, घी और शक्कर सेवा में अर्पण कर रहा हूं, ग्रहण करके प्रसन्न हो जाइए।

स्नान कराने का मंत्र

गंगा सरस्वती तापी पयोष्णी (सरयू) नर्मदाऽर्कजा।
तज्जलं स्थापितो देव तेन शान्ति कुरुष्व मे।।

अर्थ–गंगा, सरस्वती, तापी, पयोष्णी (सरयू) और नर्मदा यमुना आदि नदियों के जल से आपको स्नान कराता हूं। हे देव! मुझे शांति प्रदान करो।

वस्त्र समर्पण का मंत्र

शीतवातोष्णसंत्राणं परलज्जा निवारणम्।
सुवेषं धारितं यस्माद्वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

अर्थ–हे प्रभो! जाड़ा, गर्मी और वायु का रक्षक तथा नग्नता–रूप लज्जा से निवारण करने वाला सुन्दर वस्त्र समर्पण किया है, अतः इसे स्वीकार कीजिए।

यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र

ब्रह्मणां निर्मित सूत्रं विष्णुग्रन्थि समविन्तम्।
इदं यज्ञोपवीतं च गृह्यतां भक्तवत्सलम्।।

अर्थ–हे भक्तवत्सल! विष्णु ग्रन्थि से युकत ब्रह्मा द्वारा बनाया हुआ यज्ञोपवीत ग्रहण कीजिए।

पुनः ऊँ विष्णु ऊँ विष्णुः ऊँ विष्णुः कहकर तीन बार आचमन करावे।

भूषण समर्पण मंत्र

किरीटं कुण्डलं हारं कंकणांगदनूपुरम्
नानारत्नमयं त्वंगे भूषणं प्रतिगृह्यताम्।।

अर्थ–नाना रत्नों से सुशोभित किरीट, कुण्डल, हार, कंकङण नूपुरादिक भूषण अगङ में धारण कीजिए।

चंदन अर्पण करने का मंत्र

मलचाचल सम्भूतं शीतमानंद वर्द्धनम्।
काश्मीर वनसाराढ्यं चंदनं प्रतिगृह्याम्।।

अर्थ–मलय पर्वत पर उत्पन्न होने वाला आनन्दवर्द्धक तथा शीतल इत्यादि गुण सम्पन्न चन्दन स्वीकार कीजिए।

उत्तरीय वस्त्र समर्पण मंत्र

ब्रह्मार्पितं समंज्योतिः शक्राद्याः सर्वदेवताः।
वस्त्रं गृहाण देवेश प्रीत्यर्थ मे सदा प्रभो।।

ॐ विष्णु ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः कहकर तीन बार आचमन करावे।

श्री तुलसी उतारने का मंत्र

मह्यं प्रसीद जननि सर्वसौभाग्य वर्द्धिनी।
आधिव्याधि हरे देवि तुलसित्वांनमाम्यहम्।।
अतश्चिनोमित्वां देवि प्रसीद वरदा भव।।

अर्थ—हे सर्व सौभाग्य की दात्री माता! मुझ पर प्रसन्न हो। सबकी व्याधियों को हरण करने वाली देवि! मैं तुझे प्रणाम करता हूं। हे महाभागे बिना तुम्हारे समस्त कर्मों का कोई फल नहीं होता। अतः हे देवि! मैं आपको उतारता हूं।

तुलसी अर्पण करने का मंत्र

तुलसी हेमरूपेण विष्णुरूपेण मंजरी।
विष्णुकार्यार्थ छिन्दामि मम दोषो न दीयते।।
युग्मपत्रेण संयुक्ता मंजरी मध्यसंस्थिताम्।
ददामि राम प्रीत्यर्थे गृहाण जगदीश्वरम्।।

अर्थ—हे श्री राम! युग्मपत्रों से संयुक्त मध्य में मंजरी से पूर्ण श्री तुलसी जी को दे रहा हूं। हे जगदीश इसे स्वीकार कीजिए।

तुलसी उतारने के निम्न दिन व तिथि निशिद्ध हैं।

रवौ भौमे भृगौवारे संक्रान्तौ ग्रहणेषु च।
अमानां चैव द्वारदयां न छिन्तुलसीदलम्।।

रविवार, मंगलवार, शुक्रवार, संक्रान्ति, ग्रहण, अमावस्या और द्वादशी में तुलसीदल नहीं छूना चाहिए।

14

अंग पूजन

ॐ रामचन्द्राय नमः पादौ पूजयामि।।1।।

ॐ राजीव लोचनाय नमः गुल्फौ पूजयामि।।2।।

ॐ रावणान्तकाय नगः जानुनीं पूजयामि।।3।।

ॐ वाचस्पतये नमः उरूं पूजायामि।।4।।

ॐ विश्वरूपाय नमः जङ्घे पूजयामि।।5।।

ॐ लक्ष्मणाग्रजाय नमः कटिं पूजयामि।।6।।

ॐ विश्वमूर्तये नमः मेढ्रं पूजयामि।।7।।

ॐ विश्वमित्रप्रियाय नमः नाभिं पूजयामि।।8।।

ॐ परमात्मने नमः हृदयं पूजयामि।।9।।

ॐ श्रीकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि।।10।।

ॐ सर्नारत्राधरिणे नमः बाहूं पूजयामि।।11।।

ॐ रघुद्वहाय नमः मुखं पुजयामि।।12।।

ॐ पद्मनाभाय नमः जिह्वां पूजयामि।।13।।

ॐ दामोदराय नमः दन्तान् पूजयामि।।14।।

ॐ सीतापतये नमः ललाटं पूजयामि।।15।।

ॐ ज्ञानगम्याय नमः शिरः पूजयामि।।16।।

ॐ सर्वात्मने नमः सर्वांगं पूजयामि।।17।।

पुष्प समर्पण मंत्र

नाना विधानि पुष्पाणि ऋतुकालोद्भवानि च।
मयार्पितानि सर्वाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

अर्थ–ऋतु और समय के अनुसार उत्पन्न होने वाले नाना प्रकार के पुष्प पूजा के लिए ग्रहण कीजिए।

धूप समर्पण मंत्र

वनस्पतिरसाद्भूतं सुगन्धाढ्यो गंध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

अर्थ–वनस्पतियों के रस से उत्पन्न अतीव उत्तम गंध से युक्त और समस्त देवताओं के प्राण को सुख देने वाली धूप ग्रहण कीजिए।

दीप समर्पण मंत्र

अर्थ–हे देवों के देव! घृत बत्ती, तथा कपूर से संयुक्त, तीनों लोक का अंधकार नाश करने वाला दीप स्वीकार कीजिए।

दीपान्ने हस्त प्रक्षालयेत्।

नैवेद्य समर्पण मंत्र

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

अर्थ–छः रस से संयुक्त सुन्दर स्वादिष्ट चारों प्रकार के अन्न भोजन के योग्य समर्पित करता हूं। प्रभो ग्रहण कीजिए।

'ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः' इस मंत्र से तीन बार आचमन करावें। सामवेद आग्नायोनिषद के अनुसार नैवेद्य निम्न प्रकार है।

कृताह्निको वेदाध्यापको द्विजः पूतेनाचारेण
पूतेन मनसा अभ्यन्तरेणाचारेण वाह्याचारेण
धान्यं संस्कृत्य पचित्वा पाकं वाग्जितौ नारा–
यणस्य पुरः सरंसमर्प्य पार्षदान सन्नह्य घण्टानादं
निनदन् शंखोदकेन तुलसीदलमिश्रितेन पाकान्नं

सर्वतो परिवृताकृतिं संवेष्ठायित्वाऽऽपोशनंददमाद–
ऽमृतोपस्तरणमसीत्यमृतापिधानमसीतितितोऽन्नं–
भगवद्रूपाय शालग्रामं स्वरूपाय विवद्यातः पटं
दत्वा वहिरागच्छेत् पुरुषसुक्तं तारकब्रह्मजपं च
कृत्वा गध्ये जलं निवेद्य दक्षिणतो भूत्वा नैवेद्यं
परिसरेत् पुनर्नादं निवेदन् आचमनीय च पेयं
पीयूषममृतं फलेक्ष्वादिकं दत्वा शुद्धेन मनसा
मुखशुद्धिं दत्वा तुलस्यांजलि दद्यात् इति।

अर्थ–वेदपाठी ब्राह्मण सन्ध्योपासनादि नित्य कर्मों को करके मन, वचन, कर्म से भीतर बाहर के आचरणों से पवित्र होकर अन्तः को शुद्ध करे मुख में वस्त्र बांध कर दरवाजा ढाक मौन होकर रसोई बनाकर भगवान के सामने थाल पार्षदों को जहां तहां ठीक करके घण्टानाद करते हुए शंख में तुलसीदल मिश्रित शुद्ध जल से सिद्धान्त को चारों ओर से घेरकर अर्थात् थाल के चारों ओर अर्घ्य देकर मार्जन करें। तब आपोशन क्रिया अर्थात् भोग के अन्न जल को 'ॐ अमृतोपस्तरणं स्वाहा' इस मंत्र से तीन बार अभिमंत्रित करके तीन भाग देवें। 'ॐ भूपतये स्वाहा' कहकर प्रथम ग्रास 'ॐ भुवन पतये स्वाहा' कहकर द्वितीय ग्रास 'ॐ भूतानां पतये स्वाहा' कहकर तृतीय ग्रास करके फिर पञ्चक बलि अर्थात् पांच ग्रास देवें। इन मंत्रों से अंगूठा अनामिका और मध्यमा तीनों उंगुलियों को मिलाने से प्राणमुद्रा की जाती है इससे 'ॐ प्राणाय स्वाहा' कहकर प्रथम आहुति देवें। कनिष्ठका अंगुष्ठा और अनामिका मिलाने से अपान मुद्रा से 'ॐ अपानाय स्वाहा' द्वितीय आहुति दें। तर्जनी अंगुष्ठा और मध्यमा के मिलाने को स्तन मुद्रा कही है इससे 'ॐ व्यानाय स्वाहा' कहकर तृतीय आहुति देवें। मध्यमा अनामिका अंगुष्ठा और चौथी कनिष्ठिका मिलाने से दक्षिण मुद्रा कही है। इससे 'ॐ उदानाय स्वाहा' इससे चौथी आहुति देवें। पांचों उंगुली मिलाने से इसको स्तन मुद्रा कही है इससे 'ॐ समानाय स्वाहा' पंचम आहुति देवें। पीछे 'ॐ अमृत्ताविधान मसि स्वाहा' इस मंत्र से उच्छिष्ट एक ग्रास पृथ्वी पर छोड़ देवें। इसी को आपरेशन क्रिया (पञ्चक बलि) कहते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण अन्न भगवत्स्वरूप शालिग्राम को समर्पित करके पट बन्द कर दें और बाहर आकर 'पुरुषसूक्त वेदमंत्र अथवा तारक ब्रह्म श्रीराम मंत्र जपकर बीच में भगवान को जल दिखावे। तब उस नैवेद्य के पात्र को उस स्थान से हटा देवे। फिर मुखमाच्छाद्य वस्त्रेण द्वारमाच्छाद्य यत्नतः। इति शाण्डिल्य वचन।

घण्टानाद करते हुए आचगन कराके सुन्दर मीठे फल ऊख आदि वस्तु समर्पित कर शुद्ध चित्त हो मुखशुद्धि के लिए ताम्बूल आदि प्रदान करे। अन्त में तुलसीदल की अंजलि प्रदान करनी चाहिए। ऐसा विधान सामवेद में बताया गया है।

जल प्रदान करने का मंत्र

गंगादिसर्वतीर्थानां सुगन्धाढ्यं सुनिर्मलम्।
पानार्थ मुदकं पुण्यं गृहाण जगदीश्वर।।

अर्थ—हे जगदीश्वर! गंगा आदि समस्त तीर्थों का सुगन्धित स्वच्छ और पवित्र जल पीने के लिए ग्रहण कीजिए।

ताम्बूल प्रदान करने का मंत्र

नागवल्लीदलं दिव्यं चूर्णखादिर संयुतम्।
वक्त्रसौरभ्यकृत्वादु ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

अर्थ—हे भगवान! सुपारी, चूर्ण और कत्था आदि दिव्य पदार्थों से पूर्ण मुख की शोभा को बढ़ाने वाला ताम्बूल ग्रहण कीजिए।

आर्तिक्य समर्पण मंत्र

सुदीप्तं घृतकर्पूरपूरितं सप्तवर्तिकम्।
आर्तिक्यं देवदेवेश संगृहणातु मयार्पितम्।।

अर्थ—हे देवदेव! हे ईश! घृत कर्पूरयुक्त सात बत्तियों से प्रज्वल्लित आरती मैं अर्पित कर रहा हूं, कृपया ग्रहण करें।

15

आरती करने की विधि

प्रज्वालयेत्तदर्थं च कर्पूरेण घृतेन वा।
आर्त्तिक्यं च शुभे पात्रे विषमानकवर्तिकम्।।1।।
आदौ चतुष्पादतले च कृत्वा द्विर्नाभिदेशे मुखमण्डलैकम्।
सर्वांगदेशेऽपि च सप्तवारं तथार्त्तिकं भक्तजनैः सुदेयम्।।2।।

अर्थ–भगवान के लिए शुभ पात्र में घृत अथवा कपूर की एक से अधिक विषम संख्या में (3, 5, 7, 9, 11 आदि) बत्ती जलावे। पहले भगवान के चरणों में 4 बार आरती घुमाकर 2 बार नाभि में 1 बार मुखमंडल में तथा 7 बार समस्त अङ्ग में इस प्रकार 14 बार आरती घुमानी चाहिए। फिर भक्तों को आरती दिखावे।

ततश्च सजलं शंखं भगवन्मस्तकोपरि।
त्रिभिर्भ्रामयित्वा कुर्वीत पुनर्नीराजनं प्रभोः।।
शंखोदकं हरेर्मुक्तन्निर्माल्यं पादयोर्जलम्।
चन्दनं धूपशेषं च ब्रह्महत्यापहाकरकम्।।3।।

अर्थ–आरती के बाद जलपूर्ण शंख तीन बार भगवान के मस्तक पर घुमाकर पृथ्वी पर फेंक देना चाहिए। पंच नीराजन में से एक यह भी है। स्कन्द पुराण में लिखा है कि भगवान के नीराजन का अवशिष्ट शंख का जल, चढ़ी हुई माला भगवान का चरणोदक बचा।

16

आरती कैसे करनी चाहिए

आरती पूजन के अन्त में इष्ट देवता की प्रसन्नता के लिए की जाती है इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है। आरती में सर्वप्रथम मूलमन्त्र (जिस देवता का जिस मन्त्र से पूजन किया गया हो उस मन्त्र) के द्वारा तीन बार पुष्पाञजलि देनी चाहिए। और ढोल, नगारें, शंख, घडियाल आदि महावाद्यों तथा जयजयकार के शब्द के साथ शुभ पात्र में घृत से या कपूर से विषम संख्या की बत्तियां जलाकर आरती करनी चाहिए।

साधारणतः पांच बत्तियों से आरती की जाती है, इसे पञचप्रदीप भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियों से आरती की जाती है। कपूर से भी आरती होती है। पद्म पुराण में आया है–

कुंकुम, अगर, कपूर और चन्दन की सात या पांच बत्तियां बनाकर अथवा रूई की बत्तियां बनाकर घृतयुक्त करके शंख, घण्टा आदि बजाते हुए आरती करनी चाहिए।

आरती के पांच अंग होते हैं–

प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंख से, तीसरे धुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदि के पत्तों से और पांचवे साष्टांग दण्डवत से आरती करें।

आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में चार बार, नाभि देश में दो बार मुखमण्डल पर एक बार और समस्त अंगों पर सात बार, घुमाये। आरती के दो भाव हैं जो क्रमशः 'नीराजन' और 'आरती' शब्द से व्यक्त हुए हैं। नीराजन (निःशेषेण राजन प्रकाशनम्) का अर्थ है–विशेष रूप से, निःशेष रूप से प्रकाशित करना। अनेक दीप बत्तियां जलाकर विग्रह के चारों ओर घुमाने का अभिप्राय यही है कि पूरा का पूरा विग्रह एड़ी के चोटी तक प्रकाशित हो उठे–चमक उठे, अंग प्रत्यग स्पष्ट रूप से उद्‌भासित हो जाए जिसमें दर्शक या उपासक भली भांति देवता की रूप छटा को निहार सके, हृदयपग कर सके।

दूसरा आरती शब्द, जो संस्कृत के आरती का प्राकृत रूप है और जिसका अर्थ है–अरिष्ट, विशेषतः माधुरी उपासना से संबंधित है।

भगवान के पूजन के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति हो जाती है। शास्त्रों में आरती का विशेष महत्व बताया गया है। पूजन में यदि मन्त्र और क्रिया में किसी प्रकार की कमी रह जाती है तो भी आरती कर लेने पर उसकी पूर्ति हो जाती है।

आरती करने का ही नहीं, आरती देखने का भी बहुत बड़ा पुण्य है। जो नित्य भगवान की आरती देखता है और दोनों हाथों से आरती लेता है, वह अपनी करोड़ पीढ़ियों का उद्धार करता है तथा अन्त में भगवान के परम पद को प्राप्त हो जाता है। अतः अत्यन्त ही श्रद्धा–भक्ति से अपने इष्टदेव की नित्य आरती करनी चाहिए।

ॐ श्रीसीतारामचन्द्राम्याम नमः

17

रामचन्द्र जी की प्रातः काल की स्तुति

भये प्रकट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप विचारी।
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषण बनमाला नयन विशाला सोभा सिन्धु खरारी।।
कह दुई कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करों अनन्ता।
माया गुन ग्याना तीत अमाना वेद पुराण मनन्ता।।
करूणा सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावंहि श्रुति संता
सो मम हित लागी जन अनुरागी प्रगट भये श्री कृतां।।
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोमरोम प्रति वेद कहे।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहे।।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुस्काना चरित बहुत विधि कीन्ह चहे।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहे।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजे सिसु लीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनुपा।
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुर भूपा।
यह चरित्र जे गांवहि हरिपद पावहि ते न परहि भवकूपा।।

दोहा०— विप्र धेनु सुर सन्त हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गोपाल।।

सिया बर राम चन्द्र की जय

18

श्री जानकी जी की प्रातः काल की स्तुति

भए प्रकट कुमारी भूमि विदारी जन हितकारी भयहारी।
अतुलित छवि भारी मुनिमन हारी जनक दुलारी सुकुमारी।।
सुन्दर सिंहासन तेहि पर आसन कोटि हुतासन द्युतिकारी।
शिर छत्र विराजे सखिगण भ्राजै निज निज कारण करधारी।।
सुरसिद्ध सुजाना इनहिं निशाना चढ़े विमाना समुदाई।
वर्षहिं बहु फूला मंगल मूला अनुकूला सियगुन गाई।।
देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े सुख बाढ़े उर अधिकाई।
स्तुति मुनि करहिं आनन्द भरहिं पायन परहिं हर्षाई।।
सिता असनामा पुरन कामां सब सुखधामा गुन खानी।
ऋषि नारद आये नाम सुनाए मुनि सुख धामा गुन खानी।।
सिय सन मुनिराई विनय सुनाई समय सुहाई मृदु वानी।
लालन तनु लीजै चरित सुकीजै यह सुख दीजै नुप रानी।।
सुनि मुनि वर वानी सिय नुसकानी लीला ठानी सुखदाई।
सोवत जनु जागी रोवन लागी नृप बड़भागी उर लाई।।
दम्पति अनुरागंउ प्रेम सुपागेउ यह सुख लागेउ मनलाई।
स्तुति सिय केरी प्रेम लतेरी वरनी कुचेरी सिर नाई।।

दोहा०— निज इच्छा मख भूमि ते प्रकट भय सिय आय।
चरित किए पावन परम बरधन मोद निकाय।।

जनकपुर जनकनन्दनी की जय।
अयोध्या रामलला की जय • • पवन सुत हनुमान की जय
श्री उमा पति महादेव की जय • • श्री रमा पति राम चन्द्र की जय
श्री वृन्दावन कृष्ण चन्द्र की जय • • श्री बलदाऊ जी की जय
बोलो भाई सव सन्तन की जय
अपने श्री गुरु महाराज की जय • • मंगला श्रृंगार आरती की जय
जय जय श्री सिता राम

19

श्री कृष्ण जी की प्रातः काल की स्तुति

भये प्रकट गोपाला, परमदयाला, यशोमति के हितकारी।
हर्षित महावतारी रूप निहारी, मोहन मदन मुरारी।।

कंसासुर जाना मन अनुमाना, पूतना वैगि पठाई।
तेहि जाइ उठाये ह्वदय लगाये, पयधर मुख में दीन्हा।।

तब कृष्ण कन्हाई मन मुसकाई, प्राण तासु हर लीन्हा।।

जब इन्द्र रिसाये मेघ बोलाये, वस करि ताहि मुरारी।
गौवन हितकारी सुरमुनि हारी, नख पर गिरिवर धारी।।

कंसासुर मारो अति अहंकारी, बच्छासुर सहारो।
बकासुर आयो बहुत डरायो, ताको बदन विदारो।।

तेहि अति दीन जानि प्रभु, चक्रपाणि ताहि दीन्ह निजलोका।
ब्रह्मा शिव आये अति सुख पाये, मगर भए गये शोका।।

यह छन्द अनूपा है रस रूपा, जो नर याको गावे।
तेहि सम नहीं कोई त्रिभुवन, सोई मनवांछित फल पावे।।

नन्द यशोदा तप कीयो मोहन से मन लाय।
देखन चाहत बाल सुख रहेयो कछुक दिनजाय।।

जोन छत्र मोहन बयो सोन छत्र परिवार।
चारी बदाई रितीसवा करत यशोदा भाई।।

श्री राधा वर कृष्ण चन्द्र की जय
विन्दा सुत गरुड़ देव की जय
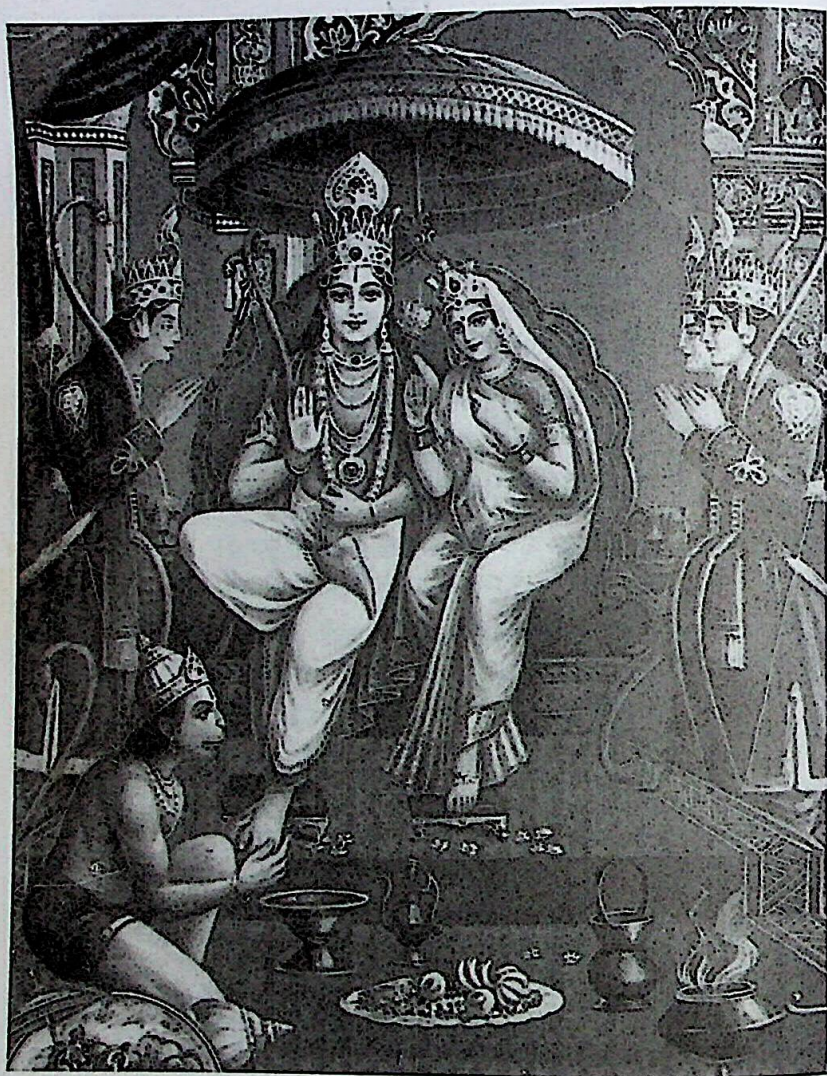
20

भगवान श्री जानकीनाथ की आरती

जय जानकीनाथा जय श्री रघुनाथा।
दोउ कर जोरे बिनवों प्रभु सुनिये बाता।। टेक
तुम रघुनाथ हमारे प्रान, पिता, माता।
तुम ही सज्जन–संगी भक्ति मुक्ति दाता।। जय
लख चौरासी काटो मेटो यम त्रासाः।
निसिदिन प्रभु मोहि राखिये अपने ही पासा।। जय
राम भरत लछिमन संग शत्रुघन भैया।
जगमग ज्योति विराजे सोभा अति लहिया।। जय
हनुमत नाद बजावत नेवर झमकाला।
स्वर्णथाल कर आरती कौसल्या माता।। जय
सुभग मुकुट सिर धनु सर कर सोभा भारी।
मनीराम दर्शन करि पल पल बलिहारी।। जय
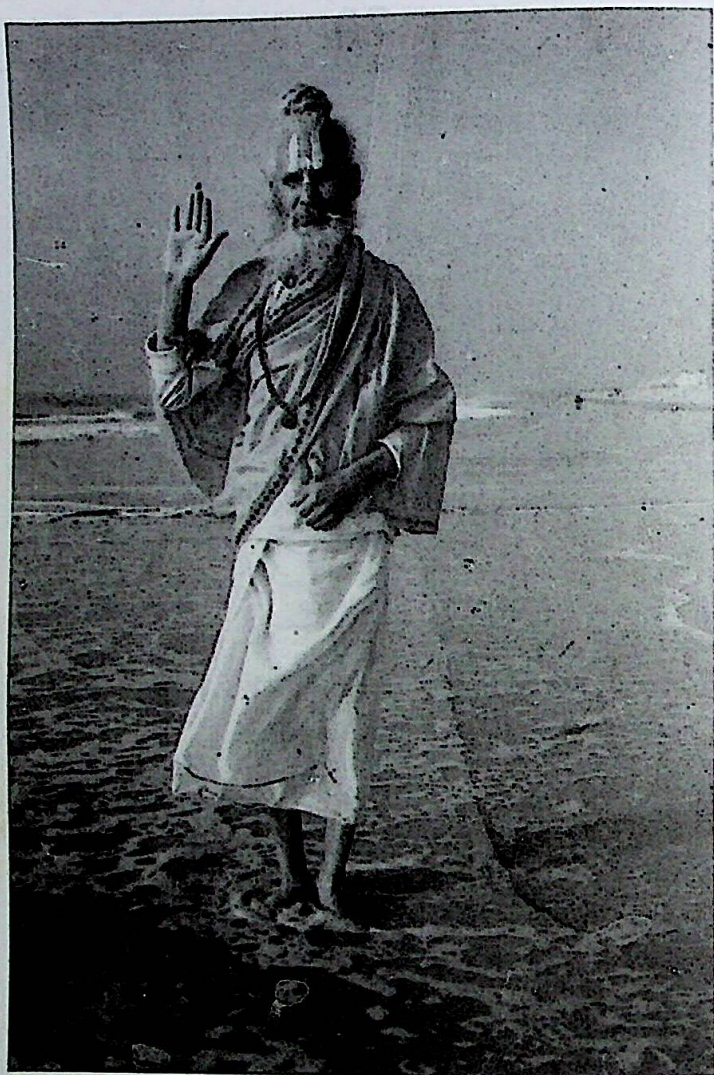
हिमालय के योगी
महात्मा कमल राम दास

21

श्री राम जी की सायंकाल की स्तुति

हे रामा पुरूषोत्तमा नरहरे नारायणा केशवा,
गोविन्दा गरूडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा।
हे कृष्णा कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते,
हे वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम।।

हे गोपालक, हे कृपाजलनिधे, हे सिन्धुकन्यापते,
हे कंसान्तक, हे गजेन्द्रकरूणापारीण, हे माधवाः।
हे रामानुज, हे जगत पते पुरो, हे पुण्डरीकाक्षमां,
हे गोपीजन नाथ पालय परं जानानि न त्वां विना।।

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभं,
नासाग्रं वरमौक्तिकं करतले वेणुंकरे कंकणम्।
सवार्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावलीम,
गोपस्त्रीपरिवेष्टितां विजयते गोपालचूड़ामणिः।।

आदौ राम तपो वनादि गमनं हत्या मृगं काञ्चन,
वैदेहीहरण जटायुमरण सुग्रीवसम्भाषणम।
बालीनिर्दलन् समुद्रतरण लंकापुरींदाहनं,
पश्चाद् रावणकुम्भकर्णहनमइत्यादि रामायण।।

आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनं,
मायापूतनजीवतापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणम्।
कंसचछेदन कौरवादिहननं कुन्तीसुतापालन,
एतद्श्रीमद्भागवतं पुराणकथित श्रीकृष्णलीलामृतम्।।

श्रीरंगकं किशैलमञजनगिरी शेशाचलसिंहासनम्,
श्रीकूर्मम्पुरूपोत्तमञच वदरीनारायण नैमिपम्।

श्रीमद् द्वारवतीप्रयागमथुराऽयोध्यागयापुष्करम्,
शालग्रामनिवासिनो विजयते रामानन्दोऽयं मुनिः।।

विष्णोः पादमवन्तिकां गुणवतीं मध्ये च काञ्चीपुरी,
नाभी द्वारवतीं तथा च ह्रदय मायापुरी पुण्यदाम्।
ग्रीवामूलमुदाहरिन्ती मथुरा नासाग्रवाराणसी,
एतद् ब्रह्मवेद् वदन्ति मुनयों ऽयोध्यापुरी मस्तके।।

तूणेनैकशरःकरेण दशधा सन्धानकाले शतम्,
चापेऽभूत सहस्त्रलक्षमने कोटिश्च कोटिर्वधे।
अन्ते चार्वनिखर्ववाणनिकरैः सीतापते शोभितम्,
एतद् वाणपराक्रमस्य महिमा सत्पात्र दानंयथा।।

पार्थाय प्रतिवोधितां भगवता नारायणेन स्वयं,
व्यासेन ग्रथितां पुराणमुनिना मध्ये महाभारतम्।
अद्वैतामृतवर्षिणीम्भगवतीमष्टादशाध्यायिनी,
मम्ब त्वामनुसंदधामि भगवद्गीते भव द्वेषणीम्।।

नामोऽस्तु ते व्यासविशालबुद्धे फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितोज्ञानमयः प्रदीपः।।

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजुमन हरणभव भय दारूणम्।
नवकञ्ज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारूणम।।
कदंर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरम।
पट पीत मानहु तडित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरम।।

भज दीनबन्धु दिनेश दानव दलन दृष्ट निकन्दनम।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशलचन्द दशरथ नन्दनम।।
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू उदार अंग विभूषणम।
आजानु भुज शर चाप घर संग्रामजित खरदूषणम।।

इति बदति तुलसीदास शंकर शेष मुनिमन रजनम।
मम ह्रदय कञ्ज निवास कुरू कामादि खल दलगञ्जनम्।।

22

श्री जानकी जी की सायंकाल की स्तुति

जय जनक नन्दनि जगत बन्दनि जन अनन्दनि जानकी।
रघुवीर नयन चकोर चन्दनि बल्लभा प्रिय प्राण की।।
तब कंजपद मकरन्द शोभित योगिजन मन अलि किए।
करिपान गिनत न आन हिय निर्वान सुख आनन्द हिये।।
सुख खानि मंगल जानि जन जिय जानि शरण जो जातु हैं
तब नाथ सब सुख साथ करि तेहि हाथ रीझि विकातु हैं।
ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निज मुख भाषहीं।।
तब कृपा नयन कटाक्ष चितवनि दिवस निशि अमिलासहीं।
तनु पाइ तुमहिं विहाई जड़मति आनि देवहीं सुसेवहीं।
हत भाग सुरतरू त्याग करि अनुराग रेड़हिं सेवहीं।।
यह आश रघुवर दास की सुख राशि पूरण कीजिये।
निज चरण कमल सनेह जनक विदेह जा वर दीजिये।।
महाराज करि करूणा विलोकहु, देंहु, यह वर मांगहूं।
जेहि जोनि जन्म हूँ कर्मवश तह रामजी पद अनुरागउँ।
मनु जाहि राचेउ मिलहिं सो वर सहज सुन्दर सांवरो।
करूणा निधान सुजान शील सनेह जानत रांवरो।।
एहि भांति गौरि अशीस सुनि सिय सहित हिय हर्षी अली।
तुलसी भवानि पूजि पुनि मुदित मन मन्दिर चलीं।।

सो०– जानि, गौरि अनुकूल सिय हिय हर्ष न जाइ कहि
मंजुल मंगल मूल, बाम अंगफरकर लगे।।

दो०– मो सम दीन न दीनहित, तुम समान रघुबीर।
अस विचारि रघुवंशमनि, हरेहु विषम भवभीर।।
कामिही नारि पियारि जिमि, लोभिहीं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागुहिं मोहि राम।।

प्रणतपाल रघुवंशमणि, करूणा सिन्धु खरारि।
गये शरण प्रभु राखि हौं सब अपराध विसारि।।
श्रवण सुयस सुनि आएउँ, प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरती हरण, शरण सुखद रघुवीर।।
अर्थ न धर्म न काम रूचि, गति न वहां निर्वान।
जन्म जन्म सिय राम पद, यह वरदान न आन।।
बार बार वर मॉगउँ, हर्षि देहु श्रीरंग,
पद सरोज अन पायनी, भक्ति सदा सत्संग।।
वरनि उमापति रामगुण हर्षि गये कैलास।
तब प्रभु कपिन दिवायें, सब विधि सुखप्रदवास।।
एक मन्द मैं मोह बसु, कुटिल ह्रदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहि विसारेउ, दीन बन्धु भगवान।।
विनती करि मुनि नाय शिर, कह कर जोरि बहोरि।
चरण सरोरूह नाथ जनि, कबहूँ तजै मजि मोरी।।
नहिं विद्या नहि बाहु बल, नहीं खर्चन कछु दाम।
मोसों पतित अपंग की, तुम पति राखों राम।।
एक छत्र एक मुकुटमणि, सब वर्णन परि जोउँ।
तुलसी रघुवर नाम के, बरन निराजल दोउँ।।
काटि कल्प काशी बसै, मथुरा कल्प निवास।
एक निमिष सरयू बसै, तुलै न तुलसीदास।।
राम जी नगरिया राम की, बसे सरयू के तीर।
अटल राज महाराज को, श्री चौकी हनुमत वीर।।
काह कहों छवि आज की, भले विराजे नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवै, धनुष बाण लियो हाथ।।
किल मुरली कित चन्द्रिका, कित गोपियन के साथ।
अपने जन के कारने, श्रीकृष्ण भये रघुनाथ।।
अवध धम धमाहि पति, अवतारन पंति राम।
सकल सिद्धि पति जानकि, श्रीदासन पति हनुमान।।
कर गहि धनुष चढ़ाइयो, चकित भये सब भूप।
मगन भई श्री जानकी, देखि राम छवि रूप।।
राम बाम दिशि जानकी, लखन दाहिनी और।

ध्यान सकल कल्यानमय, सुर तरू तुलसी तोर।।
नील सरोवर नील मणि, नील नील धर श्याम।
लाजहिं जन शोभा निरखि, कोटि–कोटि सतकाम।।

श्री गुरु मूरत मुख चन्द्रमा, सेवक नयन चकोर।
अष्ट पहर निरखत रहों, श्री गुरूचरनन की ओर।।
चलो सखी वहां जाइए, जहां बसै बृजराज।
गौरस बेचत हरि मिले, एक पंथ दोउ काज।।
बृज चौरासी कोश में, चार धाम निज धाम।
वृन्दावन और मधुपुरी, बरसाने नन्दगांव
वृन्दावन सों बन नहीं, नन्दगांव सो गांव।।
वंशीवरसों वर नहीं, श्री रामकृष्ण सो नाम
राधे तू बड़ भागिनी, कौन तपस्या कीन।
तीन लोक तारन तरन, सो तेरे आधिन।।
आपनि दारून दीनता, सबहि कहूँ समुझाय।
देखे बिनु रघुनाथ जी पद जिय के जरनि न जाय।।
कोटिन तीरथ कामनाद्ध कोटन रास विलास।
रजधानी रघुनाथ को, गावै श्री तुलसी दास।।
अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारन सहित दयाल।
तुलसी दास सीताराम जी भजु, छॉड़ि कपट जंजाल।।
एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की, हरे कोटि अपराध।।

सियावर राम चन्द्र जी की जय

श्री आयोध्या पति राम जी लला की जय,
श्री पवनसुत हनुमान जी की जय,
श्री उमा पति महादेव जी की जय,
श्री रमा पति श्री राम चन्द्र जी की जय,
श्री वृन्दावन कृष्ण बलदाऊ जी की जय,
बोलो भाई सब सन्तन की जय,
अपने–अपने गुरू महाराज की जय।
जय–जय सीताराम।

23

श्लोक

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगम्, सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणी महाशयाकचारूचापम्, नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।1।।
भवरिब्ध पोतं भरताग्रजं तम्, भक्त प्रियं भानुकुलप्रदीपम्।
भूताधिनाथं भुवनाधिपत्यम्। भजामि रामं भवरोगवैद्यम।।2।।
त्वमेव माता व पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव देव।।3।।
वन्दे विदेह तनया पदपुण्डरीकम्, कैशोरसौरभसमाह्वतयोगिचित्तम।
हन्तु त्रितापमनिशं मुनि हंस सेव्यम्, सन्मानसालि परिपीतपरागपुंजम्।।4।।
दूर्वादलं धुतितनुं तरूणाब्जनेत्रं, हेमाब्बरं वरविभूषणभूषितागंम्।
कंदर्प कोटिकमनीय किशोरमूर्ति, पूर्ति मनोरथ भवं भज जानकीशम्।।5।।
ध्येयं सदा परिभवध्नमभीष्ट दोहं, तीर्थास्पदं शिवविरिंच्नितुं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोर्त, वन्दे महापुरूष ते चरणारविन्दम्।।6।।
त्यक्त्वा सुदुस्त्यज सुरेप्सित राज्य लक्ष्मी, धर्मिष्ठआर्यवचसा यदगादरण्यम्।
माया मृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्, बन्दे महापुरूष ते चरणारविन्दम्।।7।।
लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीव नेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारूण्यरूपं करूणाकरं तम्, श्री रामचन्द्र शरणं प्रपद्ये।।8।।
अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्ण दामोदर वासुदेव हरिम्।
श्रीधर माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे।।9।।
त्राहिमां पापिनां घोरं धर्माचार विवर्जितम्। नमस्कारेण देवेश संसारार्णवताराकम्।।10।।
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापातत्मां पाप संभवः।
त्राहिमां पुण्डरीकाक्षं सर्व पाप हरो हरिः
अवाहनं न जानमि नैव जानमि पूजनम।
विसर्जनं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरः

भूमिसस्खलितं पादो भूमिरेवावलंबनमू
त्वयिदाता पराघामं लदेव शरण शिव।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जर्नादनः।
यत्पूजितं मयादेव परिपूर्ण सदस्तु में
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं चयद्भवेत।
तत्सर्वं पुण्यतां यातु अपराध क्षमस्वमे
उपचारैः समस्तेश्तु यद्पूजनं चमया कृतम्।
अपराध सहस्त्रे भार्जन पतित भवार्णवे मम भोधरे।
अगति चरण गति हरे कृपया केवल आत्मसातकुरू
त्राहि त्राहि कहि पाई गोसाई भूतल परेऊ लकुट की गई

योऽश्नाति तुलसीपत्र सर्वपापहरं शुभम्।
तच्छरीरान्तरस्थापि पापा नश्यन्ति तत्क्षणात्।

अर्थ–भगवान के प्रसाद तुलसीदल को जो खाता हे उसे शरीर में स्थित समस्त पाप उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं। बासी गंगाजल तथा तुलसी से पूजन किया जा सकता है किन्तु बासीं कूप जल तथा पुष्प वर्जित है।

प्रार्थना पुष्पांजलि का मंत्र

यन्मया भक्ति योगेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदतं च नैवेद्यं तद्गृहाणानुकम्पया।।
आवृतां मृदुपुष्पाणां वनस्पतिरस संयुताम्।
पुष्पांजलिमहं दत्वं संगृहाण कृपानिधे।।

अर्थ–हे प्रभो! मैंने जो भक्तिपूर्वक पत्र पुष्प, फल, जल और नैवेद्य उपस्थित किया है उसे कृपा करके ग्रहण करिये। फिर हाथ में पुष्प लेकर कहें भगवन! वनस्पति रसों से तथा सुन्दर मृदु पुष्पों से पुंष्पांजलि स्वीकार कीजिए।

अपराध क्षमापन मंत्र

उपचारैरू समस्तैस्तु यन्मया पूजनं कृतम्।
तत्सर्वं पूर्णतां यातु ह्यपराधं क्षमस्व मे।।

अर्थ–समस्त उपचारों से जो मैंने आपका पूजन किया है वह सब पूर्ण हो और मेरे अपराध को क्षमा प्रदान कीजिए।

प्रदक्षिणा का मंत्र

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणं पदे पदे।।

अर्थ–जन्म जन्मान्तर के किए हुए समस्त पाप भगवत्प्रदिक्षणा से नष्ट हो जावे।

प्रदक्षिणा का माहात्य

एका प्रदक्षिणा भक्तया देहात्पापं सदाह्निकम्। प्रदक्षिणाकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धराः।।
दिनंसप्तोद्भवं पापं मम तिस्त्रः प्रदिक्षणाः। तत्क्षणान्नाशयन्त्येव पापं देहे दशाह्निकम्।।
कृताः प्रदक्षिणा येन एकविंशति भक्तितः। भ्रूणहत्यादिपापानिनाशमायान्ति तत्क्षणात्।।
अष्टोत्तरशतं येन कृता भक्तया प्रदक्षिणाः। तेनेष्टं क्रतुभिः सर्वैः समाप्तंवरदक्षिणैः।।

अर्थ–एक प्रदक्षिणा भक्तिपूर्वक करने से उस दिन का पाप नष्ट हो जाता है और सप्तद्वीप के परिक्रमा का फल होता है। भगवान कहते हैं कि जो तीन परिक्रमा करता है उसके सात दिन के तथा चार परिक्रमा करने से दस दिन के किए हुए पाप नष्ट हो जाते हैं। भक्तिपूर्वक 21 परिक्रमा करने से गर्भ हत्यादिक महापाप भी नष्ट हो जाते हैं। जिन्होंने 108 प्रदक्षिणा भक्तिपूर्वक कर ली उसको समझना चाहिए कि दक्षिणा के सहित समस्त यज्ञों को समाप्त कर दिया।

प्रदक्षिणा के पश्चात भगवान को साष्टांग प्रणाम करो। साष्टांग करने का विधान शास्त्र रीति के अनुसार ही होना चाहिए। आलस्यवश अशुद्ध साष्टांग न करना चाहिए। शास्त्रों में बताया गया है।

उरसा सिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा। पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टांग उच्यते।।
अग्र पृष्ठे तथा वामे सम्मुखे मध्यमन्दिरे। जपहोमनमस्कारान् न कुर्यात्केशवालये।।

अर्थ–सीना, सिर, दृष्टि, मन, वचन, पैर, हाथ और जंघों से अर्थात एकाग्र करके जो प्रणाम किया जाता है उसे साष्टांग प्रणाम कहते हैं। भगवान के आगे, पीछे, बाएं, सम्मुख, मंदिर के बीच में जप होम और नमस्कार नहीं करना चाहिए। पुनः–

वस्त्रप्रावृतदेहस्तु यो नरः प्रणमेत्तु माम्।
स स्त्रीत्वं जायते मूर्खः सप्तजन्मनि भामिनि।।

अर्थ–श्री भगवान् ने कहा है कि जो हमको, वस्त्र से सारा शरीर ढांक कर प्रणाम करते हैं वे मूर्ख 7 जन्म तक स्त्री होते हैं। अतः सबको यथाविधि प्रणाम करना उचित है।

24

राम भक्तों के विशेष नियम

यज्ञोपवीतं धौतं च कौपीनाच्छादनं परम्।
गृहणन्ति धातुपात्रं वा तुम्बिका रामसेवकः।।
भक्ष्यं रामप्रसादं च पेयं पादोदकं सदा।
दण्डवत्प्रोक्तमुभयं वन्दनं स्वामिदक्षिणे।।
गुरूं हरिसमं मन्येत्सेव्यां चैवप्ररिक्रमाम्।
तुलसीमालतिलकं धनुर्वाणाङ्कितौ भुजौः।।
राममन्त्राभिनामाद्यः संस्कारो रामसेवके।

अर्थ–श्रीराम जी के उपासक भक्तों को यज्ञोपवीत कौपीन को ढकने के लिए करनी चाहिए। रामभक्तों को श्रीराम जी का प्रसाद भोजन के लिए और पीने के लिए चरणोदक होना चाहिए। स्वामी के दाहिनी ओर से दो दण्डवत करनी चाहिए। गुरु को भगवान मानकर उसी प्रकार उनकी भी सेवा करनी चाहिए। सर्वदा तुलसी की माला तिलक, धारण करे और दोनों भुजाओं पर शंख, चक्र और धनुष बाण अङ्कित किए रहें। उनके लिए षडक्षर राममन्त्र का करना और दसान्त भगवत्संबंधी नाम का भी होना परमावश्यक है।

साष्टांग करने का मंत्र

त्राहिमां पापिनं घोरं धर्माचारविवर्जितम्।
नमस्कारेण देवेश संसारार्णवपातिनम्।।

अर्थ–हे देव! संसार सागर में स्थित और धर्माचार से रहित मुझ घोर पापी की रक्षा करो।

ध्यान का मन्त्र

नीलाम्भोधरकान्तिकांतमनिशं वीरासनाध्यासिनम्।
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानुनि।।
सीतां पार्श्वगतां सरोरूहकरां विद्युन्निभां राघवम्।
पश्यन्तं मुकुटांगदादि विविधैः कल्पोज्वलांग भजे।।

शयन कराने का मन्त्र

क्षीरसागरसमुद्रे शेषशय्या महाशुभा।
तस्यां स्वपिहि देवेश कुरू निद्रां जगत्पते।।

चरण सेवा का मन्त्र

तच्छाया सुप्तो विष्णुलक्ष्मीश्चरणसेविनी।
प्रणमन्ति सुराः सर्वाः ब्रह्मा भृगुश्चनारदः।।

अर्थ– इसके बाद भगवान से अपनी की हुई पूजा की पूर्णता के निम्नलिखित मन्त्र से प्रार्थना करके विसर्जन करें।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं परात्परं।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु में।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर।।

अर्थ–हे परमात्मन्! मन्त्र, क्रिया तथा भक्ति से रहित जो कुछ मैंने पूजन किया वह पूरिपूर्ण हो। मैं न तो आवाहन जानता हूं न विसर्जन और न आपकी पूजा। परमेश्वर आप ही मेरी गति हैं।

पूजन के शोडशोपचार

आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्।
मधुपर्काचमनंस्नानंवसनाभरणानि च।।
सुगन्ध सुमनो धूपं दीपं नैवेद्यमेव च।
प्रार्थनाचरणार्चा च समर्पणानि च षोडश।।

अर्थ–आसन, आवाहन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्र, भूषण, सुगन्ध, धूप, दीप, नैवेद्य, प्रार्थना और चरण सेवा तथा समर्पण, यह पूजन के षोडशोपचार हैं।

वास्तव में, भगवान की सेवा को ही भजन कहते हैं क्योंकि 'भजन' शब्द 'भज' सेवायाम् धातु से बना है।

भगवान के मुख्य अवतार तथा उनके भक्तों के लक्षण

अवतारा ह्यसंख्येया हरेर्विश्वपतेर्भुवि।
चतुर्युगावतारश्च प्रधानाः कथिता बुधैः।।
वाचागायन्ति तल्लीलां कर्णैः श्रृणवन्ति तद्यशाः।

पद्भिर्गच्छन्ति क्षेत्राणि करैर्मन्दिर मार्जनम्।।
पश्यन्ति रूपं चक्षुर्यां गन्धं जिघ्रन्ति नासया।
हरेर्निर्माल्य पुष्पस्यालिंगने ये च कुर्वते।।
भक्तया पादोदकंपीत्वा यान्ति विष्णोः परं पदम्।
मानसे चरणं विष्णोः नैवेद्यमुदरे तथा।।
निर्माल्यां चन्दनं भालं मस्तकं तुलसीदलम्।
धारयन्ति प्रतिदिनं कृष्णमेकाग्रचेतसः।
एवं क्रिया हि भक्तानां लक्षणानि वदाम्यहम्।।

अर्थ–अखिल विश्व के स्वामी भगवान के असंख्य अवतार इस पृथ्वी पर हुए, परन्तु उसमें से चार अवतार (राम, कृष्ण, नृसिंह और वामन) प्रधान हैं। भक्तजन इन्हीं की लीला का गान करते हैं, कानों से इन्हीं के यश को सुनते हैं, पैरों से इन्हीं क्षेत्रों की परिक्रमा करते हैं, हाथों से इन्हीं के मन्दिर की सफाई (कैकर्य्य) करते हैं, नेत्रों से इन्हीं के रूप का अवलोकन करते हैं, नासिका से इन्हीं के चरणों पर चढ़े हुए पुष्पादिकों का आलिंगन करके, प्रेम पूर्वक चरणोदक पान करके भगवान के परमपद को प्राप्त होते हैं, भक्तों के हृदय में इन्हीं के चरणों का निवास रहता है तथा उदर में भगवान प्रसाद ललाट में प्रसाद रूप चन्दन और शिर में तुलसीपत्र नित्य धारण करते हैं। यही भक्तों के लक्षण हैं।

बत्तीस अपराध वर्णन

अब 32 अपराधों का वर्णन करते हैं भगवद्भक्तों को इनसे दूर रहना चाहिए।

यानैः पादुकैर्वाऽपि गमनं भगवद्गृहे।
देवोत्सवाद्यसेवा च अप्रणामस्तदग्रतः।।
उच्छिष्टे वाऽथवाऽशौचे भगवद्दर्शनाधिकम्।
एकहस्तप्रणामच्अप यत्सुप्तेऽस्मिन् प्रदक्षिणम्।।
यत्पुरो दण्डपातश्च यच्च ताम्बूलमग्रतः।
पादप्रसारणं चाग्रे तथा पर्य्य ङ्क बंधनम्।।
शयनं भक्षणं वाऽपि मिथ्याभाषण येव च।
उच्चैर्माषामिथो जल्पो रोदनानि च विग्रहः।
निग्रहानुग्रहौ चैव भृषश्च क्रूरभाषणम्।।
पृष्ठं कृत्वाऽसनं चैव परेषामभिवादनम्।
गुरौमौनं निजस्तोत्रं देवब्रह्माणनन्दनम्।

कम्बलावरणं चैव परनिन्दा परस्तुतिः।
अश्लीलभाषणं चैव अधोवायुविमोचनम्।
तत्तकालोद्भवानां च फलादीनामनर्पणम्।
शक्तौ भोगवर्ज्यच्श्र अनिवेदित भक्षणम्।।
अपराधस्तथा विष्णेर्द्वात्रिंशत्प्रकीर्तिताः।
यत्नतो वर्जनीयस्ते विष्णुपूजनतत्परैः।।

अर्थ–किसी सवारी पर बैठकर मन्दिर जाना, चरणपादुका पर जाना, समयानुकूल उत्सव न करना, भगवान के सामने जाकर अशौच में अथवा झूठे मुंह भगवान का दर्शन आदि करना, एक हाथ से प्रणाम करना, भगवान के शयनकाल में परिक्रमा और दण्डवत करना, सामने से दण्डवत करना, भगवान के सामने पान खाना, भगवान के सामने पांव पसार कर बैठना, पांव पर पांव रख कर बैठना अथवा कपड़ा से जानु बांधकर बैठना, सामने शयन करना, भोजन, झूठ बोलना, सामने जोर से चिल्लाना, सामने परस्पर बकवास करना, रोदन करना, झगड़ा करना, किसी का निरादर करना, आदर करना, मीठी बात करना, क्रूर भाषण करना, सामने पीठ करके खड़ा होना अथवा बैठना, पूज्य पुरुष को छोड़कर किसी को दण्डवत करना, गुरु मौन हो, अपनी बड़ाई करना, देवता ब्राह्मण की निन्दा करना, भगवत सेवा में कम्बल का परदा लगाना, दूसरे की निन्दा या स्तुति करना, खराब बोली बोलना, हवा छोड़ना, समय–समय के फलों को न अर्पण करना, समर्थ होते हुए भी भगवान को न अर्पण करना, और बिना भोग लगाए स्वयं भक्षण करना, इन 32 अपराधों को यत्नपूर्वक त्याग देना चाहिए।

चरणोदक महात्म्य

पादोदकस्य महात्म्यं जनात्येव हिशंकरः।
विष्णुपादोदकं पीत्वाशुसिद्धिमाप्नोति तत्क्षणात्।।
विष्णुपादोदकं देविपीत्वा शिरसि धारयेत्।
पुण्यपापविनिर्मुक्तो वैष्णवीं गतिमाप्नुयात्।।
तीर्थप्रसादस्वीकारानन्तरं वैष्णवो द्विजः।
न हस्तप्रक्षालनं कुर्य्यान्न तत्राचमनंक्रिया।।

अर्थ–चरणोदक का महात्म्य श्री शिवजी ही जानते हैं। विष्णु पादोदक का पान कर तुरन्त पवित्र हो जाते हैं। श्री शिवजी पार्वती जी से कहते हैं कि हे देवि! भगवान विष्णु का चरणोदक पीकर जो शिर पर धारण करते हैं वे पाप, पुण्य से मुक्त होकर भगवान की परमगति को प्राप्त होते हैं। वैष्णव ब्राह्मणों का धर्म है कि वे भगवच्चरणोदक ग्रहण कर न आचमन करें न हाथ धोवें।

शाण्डिलय संहिता का वचन है कि–

उदकं चन्दनं चक्र शंखञ्च तुलसीदलम्।
घण्टासूक्त शिला ताम्रं नवभिश्चरणामृतम्।।

अर्थ–जल, चन्दन, गोमती चक्र, शंख, तुलसी दल, घण्टा पुरुष सूक्त, शालग्राम शिला और ताम्रपात्र इन नव वस्तुओं के योग से चरणामृत होता है।

तीर्थपानाच्छतगुणं दोषस्तीर्थे च्युते भवेत्।
तस्मात्पात्रेण तत्पेयं किं वाऽधः करवाससाः।।

अर्थ–चरणोदक पान करने में जितना फल है उसका सौ–गुना पाप उसके गिराने में लिखा है अतः या तो पात्र में पान करे अथवा हाथ के नीचे वस्त्र रखकर पिये। और भी–

1. यदि भगवत्कार्य में जाना हो तो हाथ मुंह धोकर ही जाना चाहिए।

शालग्रामशिलातोयं सोमपानं दिने दिने।
पात्रान्तरेण तद्ग्राह्यं करेण सुरयासमम्।।

अर्थ–शालग्राम का चरणोदक सोमपान की भांति दिनों दिन फलदायक होता है, किन्तु उसे अन्य पात्र में लेकर पान करे। हाथ में पान करने से मदिरा के तुल्य हो जाता है। अतः दोष मुक्ति के लिए तले वस्त्र अवश्य ही लगा लेना चाहिए।

चरणोदक लेने का मंत्र

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि विनाशनम्।
विष्णुपादोदकं पीत्वा शिरसा धरयाम्यहम्।।

अर्थ–अकाल मृत्यु से बचाने वाला तथा समस्त रोगों का नाश करने वाला भगवान विष्णु का चरणोदक पान करके शिर में धारण करता हूं।

गुरु का भी चरणोदक लेने का यही विधान है और वह भगवान के पूर्व ही बताया गया है।

बिना गुरुं नमस्कृत्य हरिं नमस्करोति यः।
न पश्यति हरिस्तस्य मुखं चापि कदाचन।।1।।

श्रीगुरुर्प्रसादोभुक्तशेषं तु प्रथमं यो भुनक्ति वै।
पश्चाद्धरिप्रसादं च महापुण्यं प्रजायते।।2।।

गुरुप्रसादमहात्म्यं न वक्तुं कोऽपि शक्नुयात्।
व्यतिक्रमेण पापस्य न संख्या विद्यते नराः।।3।।

श्रुतिमूलं गुरोर्वाक्यं पूजामूलं गुरोः पदम्।
धर्ममूलं गुरोः सेवा शुभमूलं गुरोः कृपा।।4।।

(गरुड़ रामायण सं० 41)

अर्थ–बिना गुरु को प्रणाम किए जो भगवान को प्रणाम करते हैं उनके मुंह कभी नहीं देखते।।1।। श्री गुरु का प्रसाद लेकर बाद में जो भगवान का प्रसाद पाते हैं वे परम पुण्यशाली होते हैं। जो इनमें व्यक्तिक्रम करते हैं अर्थात् पहले भगवान को नमस्कार करके अथवा प्रसाद लेकर गुरू का लेते हैं उनके पापों की संख्या नहीं कही जाती अर्थात् असंख्य पाप होता है। गुरू वाक्य वेदों का मूल है। गुरु की चरण पूजा का मूल, गुरु की सेवा धर्म का मूल और गुरु की कृपा समस्त शुभों का मूल है।

शास्त्रों का सिद्धान्त है कि गुरु ही चरणपादुका अथवा चरण–चिन्ह व वस्त्र का नित्यनेम से पूजन करे और चरणोदक की गोली बनाकर रखे उसी से प्रतिदिन चरणोदक लिया करें। ऐसा करने से परम पुण्य होता है। यह सब हमारी प्राचीन प्रथा हैं। और भी–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुदेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरुदेव नमः

अर्थ–गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु की विष्णु हैं, गुरु ही शंकर हैं और गुरु ही परब्रह्म परमात्मा हैं, अतः उन गुरु को प्रणाम है। अर्थात् सबकी प्राप्ति के साधन गुरु ही हैं और इन्हीं के उपदेशों से सबकी प्राप्ति हो सकती है।

भगवान् के प्रसाद का महात्म्य

विष्णुनाऽतीतमश्नन्ति विष्णुना घ्रातं जिघ्रन्ति।
विष्णुना पीतं पिवन्ति विष्णुनाः रसितं रसयन्ति।
तस्माद् विद्वांसो विष्णु भक्तं भक्षयेयुः इति।।1।।

(महोपनिषद)

विष्णोर्निवेदितं चान्नं योऽश्नाति भूवि मानवाः।
स याति परमं स्थानं पुनरावृत्तिवर्जितम्।।
ममान्नं निन्दयेद्यस्तु मम निन्दां करोति सः।
मद्दर्शनेन यत्पुण्यं तत्सर्वं तस्य नश्यति।।3।।

अर्थ–भगवान के भोजन से अवशिष्ट प्रसाद जो पाते हैं भगवान के सूंघे हुए पुष्पादिक जो सूंघते हैं, भगवान के पाने से बचे हुए जल को जो पीते हैं और भगवान के ग्रहण किए

हुए रस को जो ग्रहण करते हैं वे विद्वान रामभक्त हैं। विष्णु का प्रसाद जो लोग पाते हैं वे जन्म नरण वे मुक्त ही भगवान के परमधाम को प्राप्त होते हैं। भगवान का वाक्य है कि जो हमारे प्रसाद की निन्दा करता है अथवा हमारी निन्दा करता है उसका हमारे दर्शन का सारा पुण्य नष्ट हो जाता है।

भगवान की पूजा में कुछ निषिद्ध कर्म

नांगुष्ठैर्द्दयेवं नाघः पुष्पैः समर्चयेत्।
कुशाग्रैन क्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत्।।

भोग लगे हुए पदार्थों में दोष लगाना भी निन्दा करना है अतः पहले संत लोग मौन होकर भोजन करते थे।

अर्थ–भगवान शालिग्राम को अंगूठे से नहीं गलना चाहिए, न गिरा हुआ पुष्प चढ़ाना चाहिए और न कुश से जल छिड़कना चाहिए। ऐसा करने से उन्हें बज्रपात के समानं चोट पहुंचती है।

दीप रखने में निषिद्ध दिशा

आयुदाः प्राङ्मुखो दीपा धर्मदः स्यायुदङ्मुखः।
प्रत्वङ्मुखो दुःखदोऽसौ हानिदो दक्षिणामुखः।।

अर्थ–पूर्व मुख दीप रखने से आयु वृद्धि, पश्चिम मुख रखने से दुःख और दक्षिण मुख रखने से हानि होती है। अतः दक्षिण और पश्चिम की ओर दीप का मुख नहीं करना चाहिए।

पुष्प चढ़ाने की विधि

पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम्।
यथोत्पन्नं तथा तुलसीपत्रमऽधेमुखम्।।

अर्थ–पत्र, फल और फूल औंधा करके नहीं चढ़ाना चाहिए अर्थात् वृक्ष में जिस प्रकार पैदा होता है सीधा उसी प्रकार रखना उचित है केवल तुलसीपत्र उल्टा करके चढ़ावे।

पूजा निषिद्ध पुष्प

अधोवस्त्रधृतं चैव जलेनाक्षालितं च यत्।
देवास्वन्नैव गृहणन्ति पुष्पं निर्माल्यतां गतम्।।
वस्त्रानीतं करानीतं स्वयम्पतितमेव च।
एरण्डपत्रैरोनीतं न तस्य फलाभाग्भवेत्।।

अर्थ–धोती में रखकर लाया हुआ जल से धोया हुआ देवतागण नहीं ग्रहण करते। वस्त्र में लाया हुआ स्वयं (बिना तोड़े) गिरा हुआ और पेड़ के पत्ते में रखकर लाया हुआ फल चढ़ाने का कोई फल नहीं होता।

भगवत्पूजा में वस्त्र निर्णय

न कुर्य्यात्सन्धितं वस्त्रं देवकर्मणि भूमिप।
न दग्धं न च वैच्छिन्नं परकीयं न धारयेत्।।1।।
काक विष्ठासमायुक्तं विधृतं न शुचिर्भवेत्।
रजकादाहतं वस्त्रं तद्वस्त्रं न भवेच्छुचिः।।2।।
कटिस्पृष्टं तु यद्वस्त्रं पुरीषं येन कारितम्।

(हरीत स्मृति)

अर्थ–सिले हुए वस्त्र पहनकर देव कार्य न करें, देव–पूजा में जला हुआ, फटा हुआ और दूसरे का भी वस्त्र धारण न करे। यदि वस्त्र में ही काक विष्टा का स्पर्श हो जाय तो बिना पूरा वस्त्र धोये शुद्ध नहीं होता, धोबी का धोया हुआ वस्त्र तथा जिस वस्त्र को पहनकर मल मूत्र का त्याग किया हो वह भी बिना धोये अपवित्र रहता है। उसे धारण करके देव कार्य नहीं करना चाहिए।

संस्थासंस्थापक तथा द्वाराओं का वर्णन

रामानंदोनिम्बादित्यो विष्णु स्वामि श्रीमाधवः।
चत्वारो धर्मशीलाश्च जगति धर्मस्थापकाः।।
एतेषामनुयायिनो द्विषञ्चाशद्विजज्ञिरे।
अनन्तानंदालखरामो सुखानन्दो नरहरिः।।

भावानंदश्च कीलाग्रौ सुरसुरानंदस्तथा।
पीपाखोजीजंगमाश्च त्यागिवीरमथम्भणाः।।
दिवाकरानुभानन्दो गोकुलोः विट्ठलस्तथा।
नाभाटीलाशोभुरामो राघवश्चेतनस्तथा।।
ज्ञानिनाभापरसुरामो नामदेवकबीर कौ।
कुबाख्यो देवमुरारिर्दुन्दुरामभडङ्गिनौ।।
चेतनस्वामिनागाख्य आत्मारामस्तथैव च।
नित्यानन्दो योगानन्दो घमण्डी मलुकस्तथा।।

भगवान्नारायणश्चैव रामरंगी तथैव च।
पूर्णबैराठी गोविन्दो रामरावलि एव च।।
राधाबल्लभ हनुमांल्लालतुरंगी एव च।
चर्तुभुजौ कर्मचंद कालुनयनाख्यस्तथा।।
श्रीमान् बनखण्डी च रामरामायणी एव च।
श्रीयुतमाधवश्चैव श्रीतनुतुलसी तथा।।

अर्थ–जग में धर्म की स्थापना करने वाले श्री रामानन्द स्वामी, श्री निम्बादित्य स्वामी, श्री विष्णु स्वामी और श्री माधव स्वामी ये हुए हैं। इन्हीं के अनुयायियों द्वारा 12 की स्थापना हुई है। उनके नाम इस प्रकार हैं। श्री अनन्तानन्द जी 1, अलखराम जी 2, सुखानन्द जी 3, नरहरि जी 4, भावानन्द जी 5, कीलजी 6, सुरसुरा नन्द जी 7, अग्रजी 8, पीपाजी 9, खोजी जी 10, जङ्गम जी 11, त्यागी जी 12, टीला जी 13, थम्मन जी 14, वीराम जी 15, दिवाकर जी 16, अनुभानन्द जी 17, गोकुल जी 18, विट्ठल जी 19, नाभा जी 20, शोभुराम जी 21, राघव चेतन जी 22, ज्ञानीनाभा जी 23, परशुराम जी 24, नामदेव जी 25, कबीर जी 26, कूबाजी 27, देवमुरारी जी 28, दुन्दुराम जी 29, भडङ्गजी 30, चेतन स्वामी जी 31, नागा जी 32, आत्माराम जी 33, नित्यानन्द जी 34, योगानन्द जी 35, घमण्डी जी 36, मलूक जी 37, भगवन्नारायण जी 38, रामरंगी जी 39, पूर्ण बैराठी जी 40, गोविन्द जी 41, रामरावल जी 42, राधावल्लभ जी 43, हनुमान जी 44, लालतुरंगी जी 45, चतुर्भुज जी 46, कर्मचन्द्र जी 47, कालूनयन जी 48, वनखण्डी जी 49, रामरामायणी जी 50, माधव जी 51, तनुतुलसी जी 52 द्वारे हैं। इसमें से 12 द्वारा श्री निम्बार्क सम्प्रदाय में हैं और 36 द्वारे हमारे श्री रामानन्दीय श्री वैष्णवों में हैं। इन सबको अच्छी तरह जानना चाहिए।

।। अति वृहच्छी रामपटलम् ।।

वैष्णवों के विशेष नियम

यहां धर्मशास्त्र के अनुसार कुछ विशेष नियमादिक का उल्लेख किया जाता है जो अपने को वैष्णव समाज के लिए परमावश्यक है। और उनका उचित नियम से पालन करना हमारा कर्तव्य है।

ग्रहण में भोजनादि के नियम

सूर्य्यग्रहे तु नाश्नीयात्पूर्वयामचतुष्टयम।
चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन बालबृद्धातुरैर्विना।।

अर्थ–सूर्यग्रहण में ग्रहण लगने से 4 पहर अर्थात 12 घंटा पहले से भोजन नहीं ग्रहण करना चाहिए और इसी प्रकार चन्द्र ग्रहण में तीन पहर अर्थात 9 घण्टे पहले से भोजन निषेध

है। यह नियम बाल, वृद्ध और अशक्तों के लिए नहीं है। इसी प्रकार उक्त नियम से भगवान का पूजन और भोग रागादि ('यथा देहे तथा देवे' के अनुसार) करके मन्दिर बन्द कर देना चाहिए मन्दिर बन्द करते समय समस्त वस्तुओं में कुश रख देना चाहिए क्योंकि ग्रहण में कुश अशुद्ध नहीं होता और उसके संसर्ग से सारी चीजें शुद्ध रहती हैं।

ग्रस्यमाने भवेत्स्नानं ग्रस्ते होमो विधीयते।
मुंच्यमाने भवेद्दानं मुक्त स्नानं विधीयते।।

(हेमाद्रिः)

अर्थ–ग्रहण लगते समय स्नान करे, लग जाने पर होम करे जब ग्रहण छटना आरम्भ हो जाय तो दान करे और मुक्त होने पर पुनः स्नान करना चाहिए।

सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहुदर्शने।
सचौलं तु भवेत्स्नानं सूतकान्नं तु वर्जयेत्।।
मुक्तो यस्तु न कुर्वीत स्नानं ग्रहणसूतके।
स सूतकी भवेत्तावद्यावत्स्यात्परी ग्रहः।।

(मदन रत्न)

अर्थ–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र चारों वर्णों को ग्रहण का सूतक लगता है। अतः वस्त्र सहित स्नान करना और ग्रहण काल में भोजन नहीं चाहिए जो व्यक्ति ग्रहण के मुक्त हो जाने पर स्नान नहीं करता उसे जब तक पुनः ग्रहण नहीं लगता तब तक के लिए सूतक लग जाता है।

ग्रहण में स्नान का विधान

गंगास्नानं तु कुर्वीत ग्रहणे चन्दसूर्य्ययो।
महानदीषु चान्यासु स्नान कुर्य्यात्यथाविधि।

अर्थ–उत्तम है कि सूर्य अथवा चन्द्रमा में ग्रहण लगने पर गंगा स्नान करे यदि न हो सके तो अन्य किसी बड़ी नदी अथवा तड़ागादि में स्नान कर डाले।

चन्द्र ग्रहण का विशेष फल काशी जी में स्नान करने का है और सूर्य ग्रहण का कुरूक्षेत्र में है। वर्तमान समय में जो कुरू–क्षेत्र का मेल होता है वह स्थापन ठीक नहीं प्रतीत होता। शास्त्रों के प्रमाण के अनुसार यथार्थ स्नान का महत्व स्यमन्तक पञ्चक क्षेत्र में स्नान करने का है। थानेश्वर के स्थान का प्रमाण शास्त्रों में नहीं मिलता। थानेश्वर मेले के विषय में एक किम्बदन्ती उज्जैन में प्रसिद्ध है कि राज्य में एक बहुत बड़े प्रतिष्ठित शैव पण्डित श्री बनमाली

जी हो चुके हैं। किसी समय सूर्य ग्रहण में उक्त पण्डित जी स्यमन्तक पन्डक क्षेत्र में स्नान करने के लिए गए, वहां पर पण्डा लोगों ने उनका दान लेने से इन्कार किया और क्रुर्द्ध हो पण्डित जी ने प्रतिज्ञा की कि मैं यह मेला बन्द करवा करके अन्यत्र लगवा दूंगा। शतशत प्रयत्न करके श्री पण्डित जी ने उस मेले को बन्द करके रूद्रकुण्ड को कुरूक्षेत्र घोषित करके वहां मेला लगवाया। तब से वह मेला उसी स्थान पर हुआ करता है। यह कथा अनुमानतः 16 वीं शताब्दी की प्रतीत होती हैं। स्यमन्तक हो स्नान यर्थाथ का स्थान है इसका प्रमाण श्री मटागवत में मिलता है।

श्रीमद्‌भागवत

अथैकदा द्वारवत्यां बसतों रामकृष्णयोः।
सूर्य्यपरागः सुमहानासीत् कल्पक्षेय यथा।
तं ज्ञात्वा मनुजा राजन पुरस्तोदेव सर्वतः।
स्यमंतपञचकं क्षेत्रं ययुः श्रेयोविधित्सया।।
निः क्षत्रियां महीं कुर्वन रामः शस्त्रमृतां वरः।
नृपाणां रूधिरौघेणा यत्र चक्रे महाह्वदान्।
महत्यां तीर्थ यात्रायां तत्रागन् भारती प्रजाः।।
वृष्णायश्च तथाऽक्रूरवसुदेवाहुकादयः।
ब्राह्मणेभ्यो ददुधेनूर्वासः सग्रु क्यमानिलीः।
रामह्वदेषु विधिवत्पुनरालुप्त्य वृष्णयः।।

(श्रीमदभागवत स्कन्ध 10 अ० 82 श्लोक 1,2,3,5,10)

अर्थ–एक समय का प्रसंग है, श्रीराम और श्रीकृष्णदोनों द्वारिका पूरी में निवास करते थे, उसी समय प्रलय काल के समान सूर्य्यग्रहण जानकर समस्त भारतवासी प्रजा, ग्रहण लगने के पूर्व ही अपने कल्याण की कामना से स्यमन्तकः पञचक क्षेत्र गई। वहां पर समस्त क्षत्रियों को मारकर उनके रक्त से परशुराम जी ने पांच महाकुण्डो को निर्माण किया था उस महायात्रा में समस्त भारतीय प्रजा और वसुदेव अक्रूर तथा समस्त कृष्णा वंशीम प्रजा ने जाकर रामह्वद में स्नान किया और ब्राह्मण को गोदान वस्त्रादानादि दिया। कुरूक्षेत्र महात्म्य के अन्तर्गत श्रीरामह्वद महात्म्य में भी ये प्रसंग विस्तारपूर्वक लिखे हैं। वर्तमान समय में इस कुण्ड को रामह्वद और एतत्समीप ग्राम को रामरा कहते हैं। उसी स्थान पर सूर्यग्रहण के स्नान का फल होता है। किया कि वस्तूपहिता प्रणोदति के अनुसार शास्त्रोक्त विधि से ही कार्य का फल होता है। अतः प्रत्येक सन्त महानुभावों को इन बातों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

विरक्तों के लिए अशौच निर्णय

योगिनां तु विरक्तानां नाशौच न तू सूतकम्।
पित्रोरूपरमे तेषां स्नानमात्र तथा गुरोः।।

अर्थ–विरक्त योगी महात्मा लोगों को जन्म मरण का अशौच नहीं लगता। यदि माता–पिता अथवा गुरू की मृत्यु हो जाय तो केवल स्नान मात्र से वे अशौच से निवृत्त हो जाते हैं, अर्थात् क्षौरादि कर्म की आवश्यकता नहीं है।

आदि पुराण का भी वाक्य है–
देवालये नदीनाथे विप्रे वेदपारगे।
जान्हवी हरिभक्ते च सूतकन्नैव विंद्यते।

अर्थ–भगवान के मन्दिर, समुद्र। वेदपाठी ब्राह्मण, श्रीगंगा, वैश्णवों को सूतक नहीं लगता।

नैष्ठकानां वनस्थानां यतीनां ब्रह्मचारिणाम्।
नाशौचचं कीर्तित संदिभः पतिते च तथा मृते।।
हरेर्नामानि संजल्पन् यः करोति प्रदक्षिणाम।
पदे पदे स लभते कपिलादानजं फलम्।।

अर्थ–जिस क्षेत्र में प्राणी निवास करता है, उसका धर्म है कि इसकी प्रतिवर्ष परिक्रमा करके अपने अपराधों को क्षमा करायें जो मनुष्य नियमतः प्रतिवर्ष अपने क्षेत्र की परिक्रमा करता है उसे क्षेत्रापराध (क्षेत्र के भीतरे मलमूत्रांदि करने का अपराध) नहीं लगता। क्षेत्र की परिक्रमा अवश्य करनी चाहिए। भगवन्नाम कीर्तन करते हुए परिक्रमा करता है उसे पद–पद पर गोदान का फल होता है।

परिक्रमा के विधान और नियम

बह्मचर्यविधानेन हविष्याशी जितेन्द्रियः।
शुद्धो द्विवासको भूत्वा भक्तवृन्देः समन्वितः।।
मनोवाक्याजनितं पातक चोपपातकम्।
सर्वे नश्यति यत्नेन सर्वान् कामानवाप्नुयात्।।
प्रीयन्ते पितरस्तस्य प्रीयन्ते सर्वदेवताः।
प्रीयन्ते राघवो रामः स्वशक्त्या सीतया सह।।
प्रलापं वा विलापं वा मिथ्याभाषणमेव च।
असद्वार्तादिकं सर्व वर्जयेत्साधकोत्तमः।।

अर्थ–ब्रह्मचर्य नियमों का पालन करते हुए ह्विष्य (कन्द–मूलादि) भोजन करके शुद्ध दो वस्त्र धारण किए और इन्द्रियों को वश में करके भक्तगण के साथ जो परिक्रमा करता है उसके मन, वचन, शरीर के लिए सारे छोटे बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं और उसकी समस्त कामनायें पूर्ण होती हैं। उसके पितर देवता और अपनी शक्ति महारानी श्री सीता जी के समेत श्री रामचन्द्र जी महाराज प्रसन्न होते हैं। परिक्रमा काल में व्यर्थ के प्रलाप विलाप झूठ बोलना, बुरी बातें करना आदि कर्मों का परित्याग कर देना चाहिए। अन्यथा पाप का भागी होना पड़ता है।

पूर्वोक्तविधिना सम्यगब्रह्मचर्य ब्रतेस्थितः।
वामेनिश्ठोपनोद्गारमलमूत्राणि चोत्सूजेत्।
अन्यथा चोच्चरेन्मौर्ख्यन्नरः प्राप्नोतिकिल्विषम्।
याति चाधमांल्लोकान्मगद्वेषी भवेत्तुसः।।
तस्माच्छुद्ध तनुः शांतो लभेद् भक्ति लोके मुक्ति तथाऽपरे।।
तत्राप्यशक्तश्वेत्कश्चिद्विधातु धर्मसाधनम्।
साहायय वै यथा शक्ति कुर्य्याद्धा मार्गशोधनम्।
परिक्रमांवतां पुणयं सोऽव्यवाप्नोत्यसंशयम्।।

अर्थ–पूर्वोक्त विधन से ब्रह्मचर्य व्रत का भली–भांति पालन करते हुए परिक्रमा करें। थूक, नाक तथा मूलमुत्रादि मार्ग से वाम दिशा में करें। कोई मुर्खतावश दाहिनी ओर करता है तो वह पाप का भागी होता है और वह हमारा (हरि का) द्वेषी होकर अधमलोक में जाता है। इसलिए सदैव, शुद्ध शरीर तथा शांतचित होकर श्री राम जी का भजन करते हुए परिक्रमा करने वालों को इस लोक में भक्ति तथा दूसरे लोक में मुक्ति की प्राप्ति होती है। यदि कोई व्यक्ति परिक्रमा करने से अशक्त हो तो उसे चाहिए कि वह परिक्रमा करने वालों की (धनादिक से) सहायता करें और जहां पर परिक्रमा का मार्ग विगड़ गया हो ता उसे ठीक बनवा दे। ऐसा करके वह भी परिक्रमा करने वालों के बराबर पुण्य का भागी निःसन्देह होता है।

परिक्रमा में निषिद्ध कर्म

छत्रं तु हरते पादमर्द्धं हरति पादुका।
यानं हरेत्रिपादं तु सर्व हरति दोलिका।।

अर्थ–छाता लगाकर जो परिक्रमा करते हैं उनके पुण्य का चतुर्थांश, खड़ाउं पहनकर करने वालों का आध, सवारी पर करने वालों का तीन भागे और पीनत (डीली) पर चलने से परिक्रमा का सम्पूर्ण पुण्य नष्ट हो जाता है

पूजनादि में वस्त्र विधान

हरिचर्यापाककाले तु धार्य्य पट्टाम्बर तथा।
तस्याभावे और्णिकन्तु तदभावें वस्त्रमेव हि।।
ममालये सदा धार्य पट्वकूलं सदा बुधेः।
विष्णोः पूजनकाले तु पाककाले विशेषतः।।

(हरित स्मृति)

अर्थ–भगवान की पूजा और रसोई बनाते समय पीताम्बर (रेशमी वस्त्र) धारण करना चाहिए। यदि न हो तो उनी वस्त्र उसके भी अभाव से साधारण, सूती वस्त्र धारण किया जा सकता है। भगवान का वाक्य है कि हमारे मन्दिर में रेशमी वस्त्र ही धारण करना उत्तम है। विशेषतः पूजा और रसोई में तो अवश्य ही धारण करना चाहिए।

भोजनकाल में निषिद्ध आसन

गीशकृन्मृन्मय भिन्न तथा लाशपिप्पलम्।
लौहबद्ध तथैवार्क वर्जयेदासन बुधः।।

अर्थ–ऊपर मिट्टी का आसन (ईटा आदि), टूटे फटे आसन, पलास और पीपलु की लकड़ी के बने हुए, लोहे के ओर आक (मदार) के आसन भोजनकाल में निषिद्ध कहे गए हैं।

भोजन में पात्र निषेध

मृन्मये पत्रपृष्ठे वा आयसे ताम्रभाजने।
नाश्नायादपि चेद्भुडक्तेनरक प्रतिपद्यते।।

अर्थ–मिट्टी के पात्र में, पत्ते की पीठ के भाग, पर लोहा ओर तांबे के पात्र में भोजन नहीं करना चाहिए। यदि ऐसा करना है तो वह नरकगामी होता है।

पात्र रखने के नियम

स्वपात्र परपात्रं वा भगवत्पात्रमेव यत्।
स्नानपात्रान्य, पात्राणि मेलयेन्न कदाचन्।।

अर्थ–अपना पात्र, दूसरों का पात्र, भगवान के पात्र, स्नान करने के पात्र तथा अन्य और पात्रों को अलग–अलग रखना चाहिए।

आत्मश्य्या च वस्त्र च जाय ऽपत्यं कमण्डलु।
थात्मनः शुचीन्येतानि परेशाभशूचीनि तु।।

अर्थ–आसन, वस्त्र घी, संतान और कमण्डलु पात्र ये वस्तुयें अपनी ही पवित्र होती है दूसरों की अपवित्र समझनी चाहिए।

रसोई बनाने के नियम

वस्त्रेणा मुखमाच्छाद्यः द्वारमाच्छाद्य यत्नतः।
पक्वानं चाथशाकानि दौग्धसिद्धान्नमापचेत्।।

अर्थ–मुख को वस्त्र से ढक कर और द्वार को यत्नपूर्वक बन्द करके रसोई, शाक भाजी तथा दूध आदि परिपक्व करना चाहिए।

बिना भगवान का भोग लगाए कोई भी चीज स्वयं नहीं खाना चाहिए। यदि भगवान शयनावस्था में हों अथवा उस स्थान पर भगवत्प्रतिमा न हो तो भी बिना तुलसी दल डाले भोजन न करें। शाण्डिल्य संहिता के भक्तिखण्ड में बताया गया है।

क्षुद्र वस्तु समायातं मनसा तन्निवेद्य च।
अश्नीयान्मिश्रितं कृत्वा साक्षात्पूर्वनिवेदितः।।

अर्थ–यदि भगवान के शयन के बाद कोई साधारण वस्तु आ जावे तो उसे मन से भगवान को अर्पण करें और पहले के भोग लगे हुए पदार्थ में मिलाकर भोजन करना चाहिए।

ब्रह्मवैवतं पुराण में लिखा है कि इतनी वस्तु पृथ्वी पर नहीं रखनी चाहिए।

प्रदीपं शिवलिंग च शालिग्रामं मणिन्तथा।
प्रतिमां यज्ञसूत्रं च सूवर्ण शंखमेव च।।

अर्थ–जलता हुआ दीप, शिवलिंग, शालिग्राम, मणिमूर्ति, ग्रन्थिल, यज्ञोपवीत, भगवान की मूर्ति, सुवर्ण और शंख पृथ्वी पर रखने से अशुद्ध हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त हीरा, मूंगा, गोमूत्र, गोबर–घी, चरणों के पुष्प, तुलसी, जल, पुरूष सूक्त मन्त्र, पुष्पमाला, कपूर, हल्दी, चन्दन की लकड़ी, रूद्राक्ष की माला, कुश और पुस्तक इन वस्तुओं को भी भूमि पर रखना निषिद्ध कहा गया है।

भोजन के नियम

भोजन करते समय पंकति में अलग–अलग बैठें और एक दूसरे को छूएं नहीं। परोसने वाले को भी न छूएं, पंक्ति में मौन रहें और गन्दी हवा को न छोड़े जब तक सब महात्मा भोजन न कर लें किसी को उठना नहीं चाहिए।

शिरोवेष्टेन यो भुडक्ते यो भुडक्ते दक्षिणे मुखे।
वामभागे जलं स्थाप्य सोऽपि चाण्डाल उच्यते।।

अर्थ–सिर में वस्त्र लपेटकर, दक्षिणाभिमुख होकर और बाई ओर जल रखकर जो भोजन करते हैं वे चाण्डाल कहे जाते हैं।

नाधराच्छिष्टके योज्यं स्वर्णताग्रं सुबुद्धिभिः।
तत्रस्थितं तु पानीयं शुचि तीर्थोदकम्भवेत।।

अर्थ–बुद्धिमानों का धर्म है कि झूठे मुंह से सोने और तांबे के बर्तन में पानी न पिएं। क्योंकि इन पात्रों का जल तीर्थ जल के समान परम पवित्र होता है।

दक्षप्रकोष्ठे चाधाय पिवेद्वामेन पार्णिना।
दक्षिणेन पिवेत्पात्र यदि वामो न पूरयेत।।

अर्थ–जल पात्र दाहिनी और रखकर बायें हाथ से उठाकर पीयें यदि बॉयें हाथ न पहुंचे तो दाहिने से ही पीये।

ताम्रपात्रे पयः पानभूच्छष्ठे धृतभोजनम्।
दुग्ध लवण संयुक्त मेते गोमांस भक्षणम्।।

अर्थ–तांबे के पात्र में दूध पीना, झूठे भोजन के साथ घी खाना और दूध में नमक मिलाकर खाना इनमें गोमांस भक्षण के समान पाप होता है।

बिना स्नान किए भी कुछ पदार्थ खाए जा सकते हैं जैसे–

इक्षुरापः फलं मूलं पयस्ताम्बूलमौषधम्।
भक्षयित्वाऽपिकर्त्तव्याः स्नानदानादिकक्रियाः।।

अर्थ–उख, फल, मूल, दूध, ताम्बूल और औषधि का सेवन (भक्षण) करके भी स्नान आदि क्रियाएं की जा सकती हैं।

एकशय्यासनं पंक्ति र्भाण्डपक्वात्रमिश्रितम्।
यजनाध्यापने योनिस्तथेव सहभोजनम्।।
सहाध्यायस्तु दशमः सहयाजनमेव च।
एकादशैते निर्दिष्टादोषाः सांकर्यसंज्ञिताः।।

अर्थ–एक शय्या अथवा आसन पर दो व्यक्तियों का सोना, एक पात्र में दो का भोजन करना, पकवान भोजन दो व्यक्तियों का एक में होना, कोई जप या पाठ में छो मिलकर करना, एक पुस्तक में दो का पढ़ना, एक स्त्री से दो का विवाह करना, स्त्री के साथ भोजन करना, वर्ष से अधिक अवस्था वाले के साथ और वृद्ध के साथ यज्ञादि करना ये 11 सांकर्य दोष कह गए हैं।

प्रणाम करने के नियम

सभायां यज्ञशालायां देवतायतनेष्वपि।
प्रत्येकं तु नमसकारो हन्ति पुर्ण्य पुराकृतम्।।

अर्थ—सभा यज्ञशाला में और भगवान के मन्दिर में अलग—अलग प्रणाम करने से पहले का किया हुआ भी पुण्य नष्ट हो जाता है।

धावन्तं च प्रमर्त्तं च शूद्राचारकर तथा।
भुज्यमानमनाचान्तं नास्तिकं ना भवादयेत्।।
जलपन्तं च जलस्थं च समित्पुष्पकुशानलनम्।
जलपात्र तथा भक्ष्यं बहन्त नार्मिवादयेत्र।।

अर्थ—दौड़ते हुए को, मतवाले को, शूद्रवत् आचरण करने वाले को, खाते हुए को, झूठे मुंह वाले को और नास्तिक को प्रणाम नहीं करना चाहिए। जप करते हुए को, स्नान करते हुए को और यज्ञ का काष्ट, कुश, अग्नि, जल का घड़ा तथा भिक्षा का अन्न लाते हुए को भी प्रणाम न करें।

कुर्वते वंदनं यस्तु न कुर्य्यात्प्रतिबन्दनम्।
नाभिवाद्यः स विज्ञेयो यथा शूद्रस्तथैव सः।।

अर्थ—नमस्कार करने पर जो नमस्कार न करे उसे प्रणाम नहीं करना चाहिए और शूद्र के समान समझाना चाहिए।

देवताप्रतिमा दृष्टवा यति दृष्टवा त्रिदण्डिनम्।
नमस्कार न कुर्याच्चेत्प्रायश्चित्ती भवेद्विज।।

अर्थ—भगवान ने कहा कि हे द्विज। देवता की मूर्ति, वैष्णव, साधु और सन्यासी को देखकर जो प्रणाम नहीं करता वह प्रायश्चित का भागी होता है।

यज्ञोपवीत का विधान

जीर्ण यज्ञोर्पवीत का निम्न मन्त्र से त्याग करें।
एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वा त्वं परित्यतं गच्छसूत्र यथासुखम्।।

यज्ञोपवीत की धारण विधि

सूत्रा सलोमकं चोत्त्राटात्तक कृत्वा विलोमकम्।
सावित्रया दशभिः कृत्यादि भर्मनित्रताभिस्तदुक्षयेत्।।

अर्थ–यदि यज्ञसूत्र में बाल लगा हों तो उसे निकालकर दस बार गाभयत्रीमन्त्र से अभिमन्त्रित कर तथा सिंचन कर यज्ञोपवीत धारण करें।

यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र

ॐ यज्ञोपवीत परमं पवित्र प्रजापातेर्यत्सहजं पुरस्तात्

नाम रखे और इसके पश्चात शुद्ध आत्मा, शुद्धि बुद्धि ह्रदय से शिष्य को श्रीराम मन्त्र का सदुपदेश करें।

दक्षकर्णो वदेन्मन्त्र त्रिवारं पूर्णमानसः।
मंत्रार्थ मन्त्रवीजं वैतच्छक्तिस्तत्फलादिकम्।।

अर्थ–दाहिने कान में स्थिर चित्त होकर तीन बार मन्त्र बोले फिर मन्त्र का अर्थ, बीज और शक्ति मन्त्र का फल क्या है उसका सुन्दर उपदेश करें। रहस्यमय का उपदेश भी परमावश्यक है और वह प्रत्येक वैष्णव को कण्ठस्थ होना चाहिए।

श्रीराम मन्त्र का महात्म्य

राममन्त्र विहीनस्य पापिष्ठस्य दुरात्मनः।
शूनो विष्ठा सर्म चात्रे जलं च मदिरासमम्।।

अर्थ–राममन्त्र जिसने न लिया हो उस दुरात्मा पतित का अन्न विष्ठा के तुल्य और जल मंदिरा के समान समझना चाहिए।

श्री भुशुण्ड रामायण में लोमश जी का वचन है कि राममन्त्र ग्रहण करने पर फिर दूसरा मन्त्र नहीं लेना चाहिए।

राममन्त्र गुरोर्लव्व्वा गृहणन्य्नन्पं तु ये पुनः।
नरकान्न निवर्तन्ते यावज्चन्द्रदिवाकरो।।
राममन्त्र समादाय योन्यमन्त्र समिच्छति।
गृहीता प्रप्नुयात्पापं दाता च नरकं ब्रजेत्।।

अर्थ–लोमश ऋषि कागभुशुण्डि जी से कहते हैं कि रामचन्द्र को ग्रहण कर जो व्यक्ति पुनः अन्य मन्त्र को ग्रहण करता है वह जब तक नममण्डल में चन्द्रमा और सूर्य है तब तक नरक से छुट्टी नहीं पा सकता। राममन्त्र को लेकर जो अन्य मन्त्र लेने की इचछा करते हैं वे पाप को प्राप्त होते हैं और मन्त्र देने वाला नरक को जाता है।

अवैष्णावोपदिष्टं चैत्पूर्वमन्त्र परित्यजेत्।
पुनश्च विधिना सम्यग्चैशणवादग्राहयेन्मनुम्।।

अर्थ–यदि अवैष्णव से कोई मन्त्र ले लिया हो तो वह फिर भी वैष्णव से विधि पूर्वक मन्त्र ले सकता है।

कुछ महानुभावों का मत है कि स्त्री को गुरू नहीं करना चाहिए और न मन्त्र ग्रहण करना चाहिए। यह बात राम मन्त्र के लिए नहीं कही गई है क्योंकि पद्मपुराण में श्रीशंकर जी का वाक्य है:–

गुरूपदेश मार्गेण पूजयित्वैव केशवम्।
प्राप्नोति वांछितं सर्व नान्यथा भूधरात्मजे।।
समेत्य तं गुरू देवि पूजयित्वा प्रणम्य च।
विनीता प्राञलिर्भूत्वा उवाच मुनिसत्तमम।।
भगवंस्त्व प्रसादेन सम्यगाराधन हरेः।
करिश्यामि द्विजश्रेष्ठ त्वमनुज्ञातुमर्हसि।।
इत्युक्तस्तु तथा देव्या वाम देवो महामुनिः।
तस्यै मन्त्र पर श्रेष्ठ सविधिना गुरुः।।

अर्थ–शिवजी ने श्री पार्वती जी से कहा कि हे देवि। गुरू के उपदेश के द्वारा भगवान का पूजन करके समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति हो जाती है। श्री शिवजी की आज्ञा के अनुसार श्री पार्वती जी ने वामदेव जी के पास जाकर उनका पूजन किया और प्रणाम करके विनीत भाव से हाथ जोड़कर बोली, "हे महाराज में आपकी सहायता से भली–भांति भगवान की पूजा करूंगी। आप मुझे बताइये।" इसके पश्चात वामदेव जी ने श्री पार्वती जी का श्रेष्ठ मन्त्र का उपदेश किया। ये बातें प्रमाण स्वयप्न में बताती है कि स्त्रियों को मन्त्र लेने से आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

नामकरण संस्कार

योजयेन्नाम दासान्तं भगवन्नाम पूर्वकम्।
तस्मात्पापानि नश्यन्ति पुण्यभागी भवेन्नरः।
शक्तयावेशावताराण वर्जयेत्राम वैष्णवः।
नामदद्यात्प्रयत्नेन वैष्णवं पापनाशनम्।।

अर्थ–भगवान के नामों के अन्त में दास शब्द जोड़कर भक्त का नामकरण करना चाहिए। इस प्रकार के नामों से पाप नष्ट हो जाते हैं और मनुष्य पुण्य का भागी होता है। शक्ति तथा आशीर्वाद अवतारों के नाम न रखें अपितु विष्णु संबंधी नाम रखें।

श्री वैष्णव महात्म्य

कुलं पवित्रां जननी कृतार्था वसुन्धरा भाग्यवती च धन्या।
स्वर्गस्थिंतास्ते पितरश्त धन्या येषां कुले वैष्णवनामधेयम्।।

अर्थ–जिस कुल का कोई वैष्णव हो वह कुल पवित्र है, जिस माता का पुत्र वैष्णव हो वह माता धन्य है। उसके जन्में स्थल की भूमि भी भाग्यशालिनी तथा धन्य है और स्वर्गस्थित उसके पितर भी धन्य है–श्री नृसिहं भगवान ने प्रहलाद से कहा था।

यत्र यत्र च मद्भक्ताः प्रसन्नाः समदर्शिनः।
साधवः स मुदाचाराः पूजन्नपि पवित्रतः।।

अर्थ–हे प्रहलाद जहां जहां मेरे शांत और समदर्शी भक्त (साधु) निवास करते हैं वह स्थान और वहां के निवासी सब पवित्र हो जाते हैं:–

तुष्यन्ति तस्य पितरो नृत्यन्ति च मुहुर्मुहुः।
मदकुल वैष्णवों जातः पाप त्राता भविष्यति।।

अर्थ–जिस कुल का एक भी व्यक्ति वैष्णव संस्कार का धारण करता है उसके पितृगण यदि नरक में भी होते हैं तो उनको प्रसन्नता होती है, वे इस आशा में नाचने लगते हैं कि वह हमें इस पाप से उभार लेगा।

तावद्भ्रमान्ति संसारे पितरो भारतत्पराः।
यावद्वंशे सुतो रामभक्तियुक्तों न जायत।।

अर्थ–जब तक वंश में कोई रामभक्त नहीं होता तभी तक पितृगण को संसार सागर के कष्टों का भार सहन करना पड़ता हैं।

अच्ये विष्णो शिलाधीगुरूषु नरमपतिवैष्णवेजाति बुद्धिः।
विष्णोर्वावैष्णवाना कलिमलयथनेपादतीथेऽबुबुदिः।।

अर्थ–यदि तू अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करने वाला है तो भी तू ज्ञान रूप नौका द्वारा निःसन्देह संपूर्ण पाप–समुद्र से भलीभांति तर जाएगा।

(भगवद्गीताः 4–36)

है साधक। इस जन्माष्टमी के प्रसंग पर तेजस्वी पूर्णावतार श्रीकृष्ण की जीवन–लीलाओं से, उपदेशों से और श्रीकृष्ण की समता और साहसी आचरणों से सबक सीख, सम रह, प्रसन्न रह, शांत हो, साहसी हो, सदाचारी हो। आप धर्म में स्थिर रह, औरों का धर्म के मार्ग में लगाता

रह। मुस्कुराते हुए आध्यात्मिक उन्नति करता रहा। औरों को सहाय करता रह। कदम आगे रख। हिम्मत रख। विजय तेरी है। सफल जीवन जीने का ढंग यही है।

जय श्रीकृष्ण। कृष्ण कन्हैयालाल की जय ... ।

जन्माष्टमी अपने आत्मिक प्रेम का प्रकट करने का संदेश देती है। जितना अधिक हम आत्मनिष्ठा में आगे बढ़ते हैं, उतना–उतना श्रीकृष्ण का आदर करते हैं और कृष्ण तत्व का अपने चित्त में अवतरण करते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण के दो प्रिय अनमोल रत्नः गौ और गीता

भगवान श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन मानवजाति के लिए एक महान आदर्श है ही परन्तु जो दो प्रिय अनमोल रत्न हैं वे भी सभी के लिए आदरणीय, माननीय हैं। भगवान के वे दो रत्न हैं गौ और गीता। गौ शारीरिक एवं बौद्धीक विकास की संजीवनी है तो गीता आत्मिक विकास के लिए संजीवनी अमृत है। भारतवासी यदि इन दोनों का आदर करना सीख लें तो विश्व में ऐसी कोई भी शक्ति नहीं जो इस देश पर आघात लगा सके। श्रीकृष्ण का जीवन जितना अनमोल है उतने ही अनमोल उनके ये दो रत्न भी हैं।

श्रीमतद्भगवद्गीता के दिव्य ज्ञान के कारण सम्पूर्ण भारतवासियों ने ही नहीं अपितु सुज, महात्मा थोरो, एमर्सन आदि कई विदेशी मुर्धन्य विद्वानों ने भी श्रीकृष्ण के चरणों में अपना सिर झुकाया है। रसखान, मीरा, पीरजादा और ताजवेगम आदि श्रीकृष्ण की भक्ति के रंग में रंगकर अपने जीवन को उज्जवल बना लेते हैं।

ले० महात्माराम भरोसेदास जी

25

हनुमान उपासना

मन्त्र हनुमतो विद्धि मुक्ति प्रदायनम।
महारिष्ट महापाप महादुःख निवारणम।।

इस दुरूखयुक्त जगत में प्रत्येक प्राणी सुख की कामना करता है परन्तु सुख का मार्ग तो शायद ही कोई तलाश करता है। सुख का संबंध मन की शांति से होता है न कि धन एकत्रित करने से। आप सुख पा लेगें, कभी आपने अपने दुःखों और अशांति का कारण ढूंढने का प्रयत्न किया? नहीं ऐसा आप सोचते नहीं। सोच में डूबे रहते हैं, सोचने से भला क्या होगा? होगा तो कुछ करने से, मार्ग ढूंढने से, उपाय करने से।

इसलिए सब चिंता डूबे प्राणियों के लिए हनुमत उपासना अनिवार्य बताई गई है।

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि श्रणु सर्वागिंसुन्दरम।
यत्कृतं देव देवेशि ध्यानं हनुमतः प्रियम्।।

सुबह के समय सूर्य देव की ओर मुह करके यह मंत्र उच्चारण करें।

मंत्र– ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावास्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं सबाह्याम्यन्तरः सुचिः।।

इस मंत्र से शरीर को छीटां दे फिर गणेश जी को नमस्कार कर ध्यान करें।

वक्रतुण्डमहाकाय सूर्य कोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरूमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम।
त्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

तत्पश्चात हाथ में पुष्प, अक्षत तथा जल को लेकर पूजन का संकल्प करें।

ऊँ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद्‌भागवतो महापुरूस्य विष्णुराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य ब्रह्मणों द्वितीय परार्द्धे श्वेत वराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतित में कलियुगे कलि प्रथम चरणे भारतखंडे

भारतवर्षे आर्य्यावर्त्तान्तरे सव्यदेशे मथुरामण्डले आदिबाराहभूतेश्वर क्षेत्रे बौद्धावतारे "अमुक" नाम संवत्सरे, "अमुक" परिमित विक्रमाब्दे केशवादि देवतानां सन्निधाने श्री सूर्ये (दक्षिणायने) उत्तरायणे, "अमुक" ऋतौ, "अमुक" मासे, "अमुक" पक्षे, "अमुक" तिथौ, "अमुक" वासरे, "अमुक" नक्षते, "अमुक" राशि स्थिते सूर्ये, "अमुक" राशि स्थिते चन्द्रे शेषेषु, ग्रहेषु यथा राशि स्थितेषु एवं ग्रह गुण विशिष्टाया पुण्य तिथौ "अमुक" शर्मा (ऽहं यदि क्षत्रिय हो तो वर्मा ऽहं वैश्य हो तो गुप्ताऽहं शुद्र हो तो अमुक दासोऽहं (इस प्रकार अपना नाम उच्चारण करें) श्री हनुमद्देवता प्रसाद विद्धि द्वारा मम सकुटुम्बस्य सर्वपापक्ष्य सर्वपाप शान्ति नानारोगो पद्रव जनित पीड़ानिवृत्ति पूर्वक दीर्घायु र्विपुल धन धान्य पुत्रपौत्रद्यनवच्छिन्नसंवति बृदध्यर्थ चिरलक्ष्मी कीर्ति लाभ शत्रु–पराजय नानाविध सुख साधन भूतमनः कल्पिता सकल मनोरथ सिद्धयर्थ दुष्टाव्याधिकृतमन्त्रतन्त्राभि–चार भूत प्रेत पिशाचा द्यारिष्ट विध्वसंनार्थम आधिदैविक, अधिभौतिक, आध्यात्मिक त्रिविध उत्पात सान्त्यर्थ श्री हनुमद्देवता प्रीत्यर्थ च यथावभधोपचौरहनुमत्पूजन करिष्ये।

संकल्प के पुष्प, अक्षत व जल पात्र में छोड़ दें फिर हाथ जोड़कर निम्न मन्त्रों से ध्यान करें।

अतुलितबलधार्मं हेमशैलाभ देहं, दनुजवन कृशानुं ज्ञानि–नामग्रगण्यम।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि।।1।।
हनुमान, अंजनिसुत, वायुसुत, महाबली, रामेष्ट, फाल्गुनसखा, पिंगाक्षो, अमित विक्रम,
उदधिक्रमनश्चैव, सीता शोक विनाशक, लक्ष्मण प्राणदातृश्च, दशग्रीवस्य
दर्पहा एतद् द्वादश नामानि कपन्द्रिस्य महात्मन प्रातः काले प्रदोषे च यामा
काले च य पठेत तस्य रोगभयं नास्ति सर्वत्र विजयीभवेत ।।2।।
गोष्पदीकृत वारीशं मशकीकृत राक्षसम।
रामायण महामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम।।3।।
अंजनान्दनं वीरं जानकी शोकनाशनम।
कपीशमक्ष हन्तारं वन्दे लंकाभयंकरम।।4।।
अंजनेयमतिपाटलाननं कांचादिकमनीय विग्रहम।
पारिजात तरूमूलवासिनं भावयामि पवमान नन्दनम।।5।।
यत्रयत्र रघुनाथ कीर्त्तनं तत्रतत्र कृतमस्तकाज्जिलम।
वाष्पवारि परिपूर्ण लोचनं मारूति नामत राक्षसान्तकम्।।6।।
मनोजवं मारूततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतांवरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।7।।
वालार्कायुत तेजसं त्रिभुवनं, प्रक्षोभकं सुन्दरम।

सुग्रीवादिसमस्त वानरणौः संसेव्य पादाम्बुजम।।8।।
नादेनसमस्तराक्षसगणन संत्रायन्तं प्रभुम।
श्रीमद्रापदाम्बूजस्मृतिरत ध्यायामि वातात्मजम।।9।।

।।आसनम।।

देव–देव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते, आसनं दिव्यमीशान दास्याहं परमेश्वर।
श्री हनुमते नमः आसनार्थ अक्षतान समर्पयामि।

।। पद्यम ।।

यद्भक्तिलसत्सम्पर्कात् परभानन्दसम्भवः।
तस्मै ते चरणाम्बुज पाद्यं शुद्धाय कल्पंये।।
श्री हनुमते नमः पाद्यं समर्पयामि।

।। अर्घ्यम ।।

तापत्रयहरंदिव्यं परमानन्द लक्षणम्।
तापत्रय विमोक्षायतवार्घ्य कल्पयाम्यहम।।
श्री हनुमते नमः अर्घ्य समर्पयामि।

।। आचमनीयम ।।

देवानामपिदेवायदेवायां देवतात्मने।
आचमनं कल्पयामीश शुद्धानांशुद्धि हेतव।।
श्री हनुमते नमः आचमनार्थ जलं समर्पयामि।

।। पंचामृत ।।

जल से स्नान के उपरान्त दूध से स्नान करावें।
कामधेनोः समुद्रद्मूतंदेवर्षि पितृतृप्तिदम।।
पयोददामि देवेश स्नानार्थ प्रतिगृह्मताम।
श्री हनुमते नमः पयः स्नानार्थ समर्पयामि।।

।। दधि स्नानम ।।

चनद्रमण्डल संकाश सर्वदेव प्रियंदधि।
स्नानार्तं ते मया दत्तं तृत्यर्थ प्रतिगृह्मतामाम।।
श्री हनुमते नमः दधि स्नानार्थ समर्पयामि।

।। घृत स्नानम ।।

आंज्यं सुराणामाहार आज्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम
आज्यं पवित्र परमं स्नानार्थ प्रतिगृह्मताम।।
श्री हनुमान नमः घृत स्नानार्थ समर्पयामि।

।। मधु स्नानम ।।

सर्वौषधिसमुत्पन्न पीयूषसदृशंमधु।
स्नानार्थ ते प्रयच्छामि गृह्मतां परमेश्वर।।
श्री हनुमते नमः मधु स्नानार्थ समर्पयामि।

।। शर्करा स्नानम ।।

इक्षुकदण्डसमुद्‌मुतं दिव्यशर्करयाहरि।
स्नापमिहाभव्याप्रीतो भवसुरेश्वर।।

श्री हनुमते नमः शर्करा स्नानार्थ समर्पयामि।

यदि पांचों चीजें एक साथ मिलकर स्नान कराया जाय तो निम्न मंत्र से ही स्नान कराएं।

शरासंयुक्तंदधिक्षीरंधृतमधु।
पंचामृतमयानीतं स्नानार्थ प्रतिगृह्मताम।।

।। शुद्ध जल से स्नान ।।

गंगा सरस्वती तीरेवापयोष्णीय यमुना जलैः।
स्नापितोयिमयादेव तथा शांतिकुरूष्वमे।।
श्री हनुमते नमः शुद्धोदक स्नानार्थ जलं समर्पयामि।

।। वस्त्रम ।।

सर्वभूषाधिकेशसौम्येलोकज्जानिवारणे
मयोपादितेतुभ्यंवाससीप्रतिगृह्मताम
श्री हनुमते मनः रक्तवस्त्रं समर्पयामि।
वस्त्र के अभाव में कलावा चढ़ा दें।
श्री हनुमते नमः वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

आचमनी से पात्र में जल छाड़ दें।

।। यज्ञोपवीत ।।

नवमिस्तन्तुभियुक्तंत्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं चोत्तरीयंगृहाणपरमेश्वर।।
श्री हनुमते नमः यज्ञोपवीतं सर्मर्पयामि।
यज्ञोपवीत के अभाव में कलावा चढ़ायें।
श्री हनुमतयेः नमः यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

आचमनी से जल पात्र में छोड़ दें।

।। गन्ध चन्दन या रोली ।।

श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरं।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम।।
श्री हनुमते नमः विलेपनार्थम चन्दनं सर्मर्पयामि।

।। अक्षत चढ़ाना ।।

अक्षताश्य सुरश्रेष्ठा कुंकुमात्ताः सुशोभनाः।
मया निवेदिता भक्त या गृहाण परमेश्वर।।
श्री हनुमते नमः अक्षतान सर्मर्पयामि।

अक्षत चढ़ा दें।

।। पुष्पमाला ।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि माल्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर।।
श्री हनुमते नमः पुष्पाणि सर्मर्पयामि।

पुष्प चढ़ा दें।

।। अथ अंग पूजा प्रारम्भ ।।

बाएं हाथ में गंध पुष्पाक्षत लेकर दाएं से उस अंग पर चढ़ाना चाहिए।

श्री हनुमते नमः पादौ पूज्यामि। मारूतये नमः गुल्फौ पूजयामि। वायु नन्दनाय नमः जानुनी पूजयामि। आंजनेयायनमः उरूं पूजयामि। केशरी नन्दनायं नमः कटिं पूजयामि। अक्षहंत्रे नमः नाभिं पूजयामि। लंकादाहकाय नमः उदर पूजयामि। रामदासायनमः कुक्षिं पूजयामि। लक्ष्मण प्राण धारकाय नमः ह्रदयं पूजयामि। अशोकवन विध्वंसनेनमः कण्ठं पूजयामि। सीता सन्देह

हारकाय नमः स्कन्धौ पूजयामि। कपिनाथाय नमः बाहुं पूजयामि। सुग्रीव सचिवाय नमः हस्तौ पूजयामि। मेघनाथ यज्ञ विध्वसंकराय नमः मुखं पूजयामि। रूद्रावताराय नमः नासिकां पूजयामि। श्री रामदूताय नमः नेत्रे पूजयामि। अमितपराक्रमाय नमः शिरं पूजयामि। सीता शोकापनोक्षय नमः सर्वागं पूजयामि।

।। अथ नाम पूजा ।।

श्री रामभक्ताय नमः महातेजाय नमः। कपिराजा नमः। महाबलाय नमः।

द्रोणाद्रिहारकाय नमः। मेरूपीठकार्चन कारकाय नमः। दक्षिणशोभास्कराय नमः। जाम्बवते नमः। नलाय नमः। द्विविदाय नमः। मयन्दाय नमः। रक्षोघ्नाय नमः। विषघ्नाय नमः। रूपुघ्नाय नमः। व्याधिघ्नाय नमः। चौरघ्नाय नमः। भूतघ्नाय नमः। परशस्त्रास्त्र मंत्रघ्नाय नमः।। भवघ्नाय नमः। इति।।

बचे हुए गन्ध पुष्प तथा अक्षतों को

सांगात सपरिवारीय श्री हनुमते नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि कहकर चढ़ा दें।

।। धूपम ।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धोढ्योगन्ध उत्तमः।
आधेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम।।
सांगाय सपरिकराय श्री हनुमते नमः धूप नमः धूपं दर्शयामि।

।। नैवेद्य निवेदनम् ।।

सत्पात्रसिद्धम सुहविविधानेकभक्षणं निवेदयामि देवेश। सानुगाय गृहाणतत।
नैवेद्यं गृह्यतांदेवं! भक्तिमेहयचलां कुरू। ईप्तितं वरं देहि परत्र चपत्राचपरांगति।
सांगाय सपरिकराय श्री हनुमते नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

यह कर –

प्राणाय स्वाहा। अपनाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा।

इसके पश्चात मध्ये पानीय समर्पयामि कहकर जल छोड़ें सांगाय सपरिकराय

श्री हनुमते नमः नैवेद्यान्ते आचमनायं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि समर्पयामि। मुख प्रक्षालनं समर्पयामि।

।। ताम्बूल पुंगीफल ।।

पूंगीफल महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम।
कर्पूरचूर्ण–संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।
सांगाय सपरिकराय श्री हनुमते नमः मुखवासार्थे
पूंगीफलताम्बूलं समर्पयामि।

।। ऋतुफलम् ।।

इदंफलंमयादेवस्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिः भर्वेज्जन्मनिजन्मनि।।
सांगाय सपरिकराय श्री हनुमते नमः ऋतुफलानि समर्पयामि।

।। दक्षिणाम ।।

हरिण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजविभावसोः।
अनन्तपुण्यफलद मतः शान्तिंप्रयच्छमे।
सांगाय सपरिकराय श्री हनुमते नमः।
पूजासांगतादिसिद्धयर्थ दक्षिणां निवेदयामि।

।। आरती ।।

चतुर्वर्त्तिसमायुक्तं घृतेन चसुपरितम नीराजनेन संदुष्टो भवेत्वेव जगत्पतिः।
सागाय सपरिकराय श्री हनुमते नमः नीराजनं समर्पयामि।

।। नमस्कार ।।

मनोजवं मारूततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वष्ठिम।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि।।
उल्लडयसिन्धौः सलिलं सलिलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः
आदायतेनैव ददाह लकां नमामि तं प्रांजलिरांजनेयम।।
सांगाय सपरिकराय श्री हनुमते नमः नमस्कारोमि।

।। प्रदक्षिणा ।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे–पदे।।
सांगाय सपरिकराय श्री हनुमते नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

।। मंत्र पुष्पांजलिम ।।

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालोभृदवानिवानि च।
पुष्पांजलि मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
सेवन्तिकावकुल चम्पकपाटलाब्जैः पुन्नगजादिकरवीर रसालपुष्पैः।
बिल्व प्रवाल कमलैर्नमल्लिकामिस्त्वां पूजयामि जगदिशगदीश्वर में प्रसीद।
आजंनेयाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि तन्नो हनुमान प्रचोदयात
यन्मया भक्तियुक्तेन पत्रं पुष्पं पलं जलम।
निवेदितं चनैवेद्यं तद्गृहाणानु कम्पय।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव। परिपूर्ण तदुस्तु म।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरं।।
अज्ञानाहिस्मृतेर्रान्याम् यन्नयूनमधिकं कृतम।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वरं।।
अपराध सहस्त्राणि क्रियन्ते ऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।।
अन्यथा शरणं नास्तित्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारूण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर।।
अनेन यथालभधोपचार पूजनेन सांगसपरिकमारूति देंवता प्रीणातु।
अनेन यथाशक्ति षोडशोपचार पूजनेन।
श्री मारूति नन्दनो हनुमान प्रायतां नमम।।

26

हथ हनुमत्स्त्रोत्रम

नमो हनुमते तुम्यं नमो मारूतसूनवे।
नमः श्रीरामभक्ताय श्यामलांगाय ते नमः।।
नमोवानरवीराय सुग्रीवसंख्यकारिणे।
सीता–शोक–विनाशाय राममुद्राधराय च।।
रावणकटक कुलच्छेदकारिणे ते मनो नमः।
मेघनाथ–मकरध्वज कारिणे ते नमो नमः।।
वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने।
वनपाल शिरच्छेद लंकाप्रासभन्विने।।
ज्वलत्कतर्णाय दीर्घलाङ्गूधारिणे।
सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः।।
अक्षय्यबधकत्रे चे ब्रह्मपाशनिवारिणे।
लक्ष्मणांधि महाशक्ति घातक्षत–विनाशिने।।
रक्षोघ्यान रिपुघ्नात भूताघ्नाय च ते नमः।
ऋक्ष वारन वीरैक प्राणवाय नमो नमः।।
परसैन्य बलघ्नाय शस्त्रारस्त्रघ्नापते नमः।
विघ्नाय द्विषघ्नाय ज्वर घनाय च ते नमः।।
महाभयरिपुघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे।
परप्रेरित–मंत्रणां यंन्त्राणां स्तम्भकारणे।।
पयः पाषाण तरणकरणाम नमो नमः।
बालकमण्डलत्रास–कारिणे भवतारणे।।
नखायुधाज भीमाय दन्तायुधधराय चे।
रिपुमाया विनाशाय रामाज्ञालोकरक्षिणे।।
प्रतिग्राम स्थितामास्थ रक्षोभूतबघाथिने।
करान्त शैलशस्त्राय द्रुमशस्त्राय ते नमः।।

बालके ब्रह्मचर्याय रूद्रमूर्तिधरायच।
दक्षिणाशाभस्काराय शतचन्द्रोदयात्मने।।
कृत–क्षत व्यथाघ्नाव सर्वक्लेंशहराय च।
स्वाम्याज्ञा–प्रार्था–संग्राम संख्ये सज्जकारिणे।।
भक्तानां दिव्यवादेषु संग्रामे जय दायिने।
किं कृत्वा बुवृकोच्चार–घोरशब्द कराय च।।
रमोग्र–व्याधिसस्तम्म–कारिणे बन्धारिणे।
सदावन फलाहार–निरताय विशेषतः।।
महार्णव–शिलाबन्धे सेतबन्धय ते नमः।
वादे विवाद संग्रामे भये घोरे च संस्तवेत।।
सिंह–तस्कर–व्याधेषु पठस्तत्र भयं नहिं।
दिव्यभूतये व्याधे विषे स्थावर जंगमे।।
राजशस्त्रेभ्ये चाग्रे तथा ग्रहभयेषु च।
जंल सर्पे महावृष्टौ दुर्भिक्षे प्राण सम्पलवे।।
पठनस्तोत्र प्रमुच्छेत भयेभतः सर्वतो नरः।
तस्यकवापि भयं नास्ति हनुमत स्तव पाठयात।।
सर्वदा वे त्रिकाल च पठनंयस्तताहासै।
सर्वान कामानवार नीतिशास्त्रकार्या विचारणो।।
विभीषणकृत स्तोत्रावाक्षर्येण समुद्रीरितष एवं।
ये पाठ ध्यन्तिमत्या सिहयस्तकरोस्थिताः।।

अब आपका पाठ सम्पूर्ण होता है। इस पाठ को पूरा करने के उपरान्त हनुमान जी प्रतिमा के आगे अपनी श्रद्धा के फूल समर्पित करें। माथा टेककर हनुमान जी से प्रार्थना करें–हे राम भक्त हनुमान समस्त संसार को सुख देने वाले दीन दुःखियों के शरणागत मेरे भी कष्टों का निवारण करो। मुझे भी शान्ति प्रदान करो। मैं सदा सर्वदा आपकी उपासना सच्चे मन से करता रहूंगा।

फिर उठकर महावीर जी को प्रसाद अर्पण करके सब लोगों में थोड़ा–थोड़ा वितरित करो।

।। इति राम ।।

27

श्री हनुमान अष्टक

चरचीत चन्दन सिन्दूर भूषण नख सिख रूप अखण्डितम।
अपरम बल भुज डण्ड बाहू श्री हनुमन्त देव महाबलम।।
श्री रामदूत महाबलम
श्रीराम तेज प्रताप राजत राघवं कुल सेवितं।
पवन नन्दन वीर बाहु, श्री हनुमन्त देव महाबलम।।
उदित दिनकर देव सुरपति कम्प ते सब दुर्जनं।
उग्र मुख्य श्रीराम पूजा, श्री हनुमत देव महाबलम।।
युद्ध मध्ये हते दानव, सैल वृक्ष उखण्डितं।
देव सुरपति करत जै जै श्री हनुमन्त देव महाबलम।।
श्रीराम दूत प्रचण्ड योद्धा सागर शैल उल्लंघन।
लंका प्रजारी सिया सुधि लाय, श्री हनुमन्त देव महाबलम।।
नील नल रणधीर योद्धा, सुग्रीव राज्य कपीश्वरं।
जाम्वतं अरू बालि नन्दन, श्री हनुमन्त देव महाबलम।।
सिंह रूप निसंक गरजत, डगमगे कहि भूधरं।
हांक देत दिगपाल कम्पे श्री हनुमन्त देव महाबलम।। श्री राम
वीर रूप निसंक गरजत, दुष्ट दानव मरदनं।
भूत प्रेत पिशाच कम्पे श्री हनुमन्त देव महाबलम।। श्री राम
दुविध, मयन्द असंख योद्धा, केसरी अति महाबलम।
देव अंश अवतार धरे, श्री हनुमन्त देव महाबलम।। श्री राम
श्री हनुमान जी अष्टक पढ़त, निशिदिन श्री रामजी धम सिघावितं
दास तुलसी शरण आये, श्री हनुमन्त देव महाबलम
श्रीराम दूत महाबलम
मनोजवं मारूततुल्य वेग। जितेन्द्रियं बुद्धिमंता वरिष्ठम्।।
वातात्मजं बनारयूथ मुख्यं। श्री रामदूतं शरण प्रपद्ये।।

श्री हनुमते नमः

28

श्री हनुमान चालीसा

दो०– श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुर सुधारि।
बरनऊँ रघुवर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन–कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु क्लेस विकार।।

चौ०– जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि–पुत्र पवनसुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुवेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ ब्रज और ध्वजा बिराजै। कांधे मूंज जनेऊ साजै।।
शंकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
विद्यावान गुणी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे।।
लाय संजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद शारद सहित अहीसा।।
यम कुबेर दिगपाल जहां ते। कवि कोबिद कहि सके कहां ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गए अचरज नाहीं।।

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक ते कांपै।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस वर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरि–भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसांई। कृपा करहु गुरुदेव की नाई।।
जो शत बार पाठ कर कोई। छूटहिं बंदि महासुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजे नाथ ह्रदय महं डेरा।।

दो०– पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, ह्रदय बसहु सुर भूप।।

।। इति ।।

29

संकटमोचन हनुमानष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो अंधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।।
देवन् आनि करी बिनती तब, छांड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो।।को०।।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिए कौन बिचार विचारो।।
के द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो।।को०।।

अंगद के संग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचि हौ हम सो जु, बिना सुधि लाए इहां पगु धारो।।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब, हे लाय सिया–सुधि प्रान उबारो।।को०।।

रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि शोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।।
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।।को०।।

बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो।।
आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो।।को०।।

रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग कि फांस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो।।को०।।

बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों, बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो।।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो।।को०।।

काज किए बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो।।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो।।को०।।

दो०– लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगुर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

।। इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ।।

30

श्री बजरंग बाण

दो०— निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करें सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान।।

चौ०— जय हनुमन्त सन्त हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी।।
जन के काज बिलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै।।
जैसे कूदि सिन्धु महि पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा।।
आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुर लोका।।
जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लिन्हा।।
बाग उजारि सिन्धु महं बोरा। अति आतुर यम कातर तोरा।।
अक्षय कुमार को मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा।।
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुर पुर महं भई।।
अब बिलम्ब केहि कारण स्वामी। कृपा करहु उर अन्तर्यामी।।
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता। आतुर होय दुःख हरहु निपाता।।
जय गिरिधर जय जय सुख सागर। सुर समूह समरथ भटनागर।।
ऊँ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले। बैरिहिं मारु बज्र की कीले।।
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो। महाराज प्रभु दास उबारो।।
ऊँ कार हुंकार प्रभु धावो। बज्र गदा हनु बिलम्ब न लावो।।
ऊँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा। ऊँ हुं हुं हुं अरि उर शीशा।।
सत्य होहु हरि सपथ पायके। रामदूत धरु मारु धायके।।
जय जय जय हनुमन्त अगाधा। दुःख पावत जन केहि अपराधा।।
पूजा जप तप नेम अचारा। नहीं जानत हौं दास तुम्हारा।।
बन उपवन मग गिरी गृह माहीं। तुमरे बल हम डरपत नाहिं।।
पाय परौं कर जोरि मनावों। यहि अवसर अब केहि गोहरावों।।
जय अंजनि कुमार बलवन्ता। शंकर सुवन वीर हनुमन्ता।।
बदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक।।

भूत प्रेत पिशाच निशाचर। अग्नि बेताल काल मारीमर।।
इन्हें मारु तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की।।
जनक सुता हरि दास कहावो। ताकी शपथ बिलम्ब न लावो।।
जय जय जय धुनि होत अकाशा। सुमिरत हो दुःसह दुःख नाशा।।
चरण शरण करि जोरि मनावों। यहि अबसर अब केहि गोहरावों।।
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई। पांय परौं कर जोरि मनाई।।
ऊँ चं चं चं चपल चलन्ता। ऊँ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता।।
ऊँ हं हं हांक देत कपि चंचल। ऊँ सं सं सहमि पराने खल दल।।
अपने जन को तुरत उबारो। सुमिरत होय अनन्द हमारो।।
ताते विनती करौं पुकारी। हरहु सकल दुख विपत्ति हमारी।।
ऐसो बल प्रभाव प्रभु तोरा। कस न हरहु दुख संकट मोरा।।
हे बजरंग! बाण–सम धवौ! मेटि समल दुख दरस दिखावौ।।
हे कपिराज काज कब ऐहौ। अवसर चूकि अंत पछतैहौ।।
जन की लाज जात ऐहि बारा। धवहु हे कपि! पवनकुमारा।।
जयति–जयति जै–जै हनुमान। जयति–जयति गुन–ज्ञान–विधता।।
जयति–जयति–जय राम–पियारे। जयति–जयति जै सिया–दुलारे।।
जयति–जयति मृद–मंगल–दाता। जयति–जयति त्रिभुवन विख्याता।।
एहि प्रकार गावत गुन शेषा।पावत पार नही लवलेसा।।
राम–रूप सर्वत्र समाना। देखत रहत रहत सदा हर्षाना।।
विधि सारदा सहित दिन राती। गावत कपि के गुन बहु भांती।।
तुम सम नही जगत बलवाना। करि विचार देखउं विधि नाना।।
यह जिय जानि शरण तव आई। ताते विनय करौं चित्त लाई।।
सुनि कपि आरत बचन हमारे। मेटहु सकल दुःख भ्रम भारे।।
एहि प्रकार विनती कपि केरी। जो जन करै लहै सुख ढेरी।।
याके पढ़त वीर हनुमाना। धावत बाण तुल्य बलवाना।।
मेटत आय दुःख छिन माही। दै दर्शन रघुपति ढिग जाही।।
पाठे करे बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करें प्राण की।।
डीठ मूठ टोनादिक नासै। पर–कृत यंत्र–मंत्र नहिं त्रासै।।
भैरवादि सुर करैं मिताई। आयुस मानि करैं सेंवकाई।।
प्रण करि पाठ करे मन लाई। अल्प–मृत्यु ग्रह दोष नसाई।।

आवृत ग्यारह प्रतिदिन जापै। ताकी छांह काल नाहि व्यापै।।
यह बजरंग बाण जेहि मारे। ताही कहो फिरि कौन उबारे।।
पाठ करैं बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करैं प्राण की।।
यह बजरंग बाण जो जापै। तेहि ते भूत प्रेत सब कांपै।।
धूप देय अरु जपै हमेशा। ताके तन नहिं रहे क्लेशा।।
उर प्रतीति दृढ़ सरन है, पाठ करै धरि ध्यान।।
बाध सब हर, करैं सब काम सफल हनुमान।।

दो०– प्रेम प्रतीतहि कपि भजे, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान।।

31

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांपै।।1।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।2।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये।।3।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।4।।
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज संवारे।।5।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्रान उबारे।।6।।
पैठि पताल तोरि जम–कारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।7।।
बायें भुजा असुर–दल मारे। दहिने भुज संतजन तारे।।8।।
सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।।9।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।10।।
जो हनुमान जी की आरती गावैं। बसि बैकुंठ परमपद पावै।।11।।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई। तुलसी दास प्रभु कीरति गाई।।12।।
।।इति श्री हनुमान जी की आरती।।

श्रीरामवन्दना

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नामाम्यहम्।।
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेध। रघुनाथाय नाथायं सीतायाः पतये नमः।।
नीनाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवाममागं। पाणौ महासायकचारूचापं नमामि रामं रघुवंशनाथं।।

श्री हनुमान वन्दना

श्री हनुमद्गायत्री–यथाशक्ति जप करें
ॐ अंजनी सुताय विद्महें वायु पुत्राय धीमहि तन्नो हनुमान् प्रचोदयात्।।

श्री हनुमान भक्त
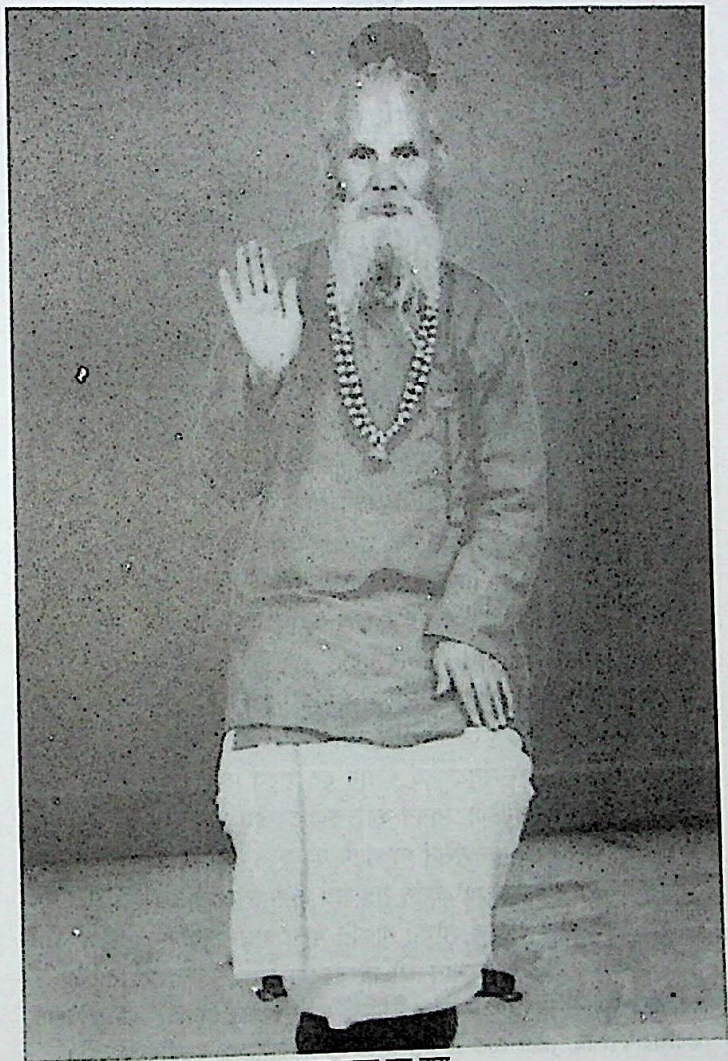
महात्मा कमल राम दास
(हिमालय के योगी)

32

श्री हनुमत स्तवन

प्रनवउं पवन कुमार खलबन यावक ग्याव धन।
जासु ह्रदय अगार बसहि राम सर चाय धर।।1।।
अतुलित बलधामं हेमशैलाभ देहं
दनुजवन कृशानुं जानिनामग्रगण्यम्।
सकल गुण निधानं वानराणामधीशं
रघुपति प्रिय भक्तं वातजातं नमामि।।2।।
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृत राक्षसम्।
रामायण महामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्।।3।।
अंजनानन्दनं बीरं जानकी शोक नाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लंका भयकंरम्।।4।।
उल्लंघ सिन्धोः सलिलं सलीलं।
यः शोकवहिं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लंका।
नमामितं प्रांजलिरांजनेयम्।।5।।
मनोजवं मारूत तुल्यवेगं जितेनद्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वरनरयूथमुख्यं श्रीराम दूतं शरणं प्रपद्ये।।6।।
आञ्जनेयमतिपाटलाननं कांजनाद्रिकमनीय विग्रहम्।
पारिजातरूमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दम्।।7।।
यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकांजलिम्
वाष्प वारि परिपूर्ण लोचनं मारूतिं नमत राक्षसान्तकम्।।

श्री हनुमान जी के द्वादश् नामः

हनुमान, अंजनी सूनुः, वायूसूनुः, महाबलः, रामेष्टः, फाल्गुनसखा, पिगाक्षों, अमित विक्रमः,
उदधिक्रमनश्चैव, सीता शोक विनाशनः, लक्ष्मण प्राणदातृश्च, दशग्रीवस्थ दर्पहा,
एतद् द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः
प्रातः काले प्रदोषे च यात्राकाले च यः पढ़ेत्। तस्य रोग भयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।।

33

श्री गुरू पादुका पंचकम्
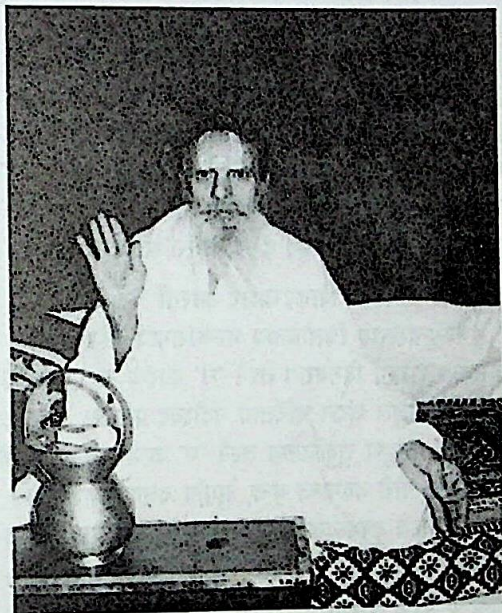
श्री सदगुरू देव जी की पवित्र पादुका का मंयोपचार पूजन करें।

ऊँ नमो गुरूभ्यो गुरूपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार सिद्धे वर पादुकाभ्यों नमो नमः श्री गुरू पादुकाभ्यः।।
ऐंकार छींकार रहस्य युक्त श्रींकार गूढार्थ महाविभूत्या।
ऊँकार मर्म प्रति पादिनियां नमो नमः श्री गुरू पादुरकाभ्याम्।।

।। यादिनीभ्या ।।

34

शिव महिमा

ऊँत्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
कोई चढ़ावत चारिक चावल। कोई धतुरे को पुष्प दियो है।।
कोई चढ़ावत बेल की पाति। कोई ने हरहर नाम लियो है।।
गौरी हंसी मुख आंचल देयक। देख पिया ठग लोक भयो है।
भोरे से कन्त हमारे इन्हें। दे, दे, धतुरा धन लूट लियो है।।

शिवपंचाक्षर आरती

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मगंरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगंबराय तस्मै "न" काराय नमः शिवाय।।
मंदाकिनी सलिल चंदन चर्चिताय नंदीश्वर प्रमनाथ, महेश्वराय।
मंदार पुष्प बुहुपुष्प सुपुजिताय तस्मै "म" काराय नमः शिवाय।।
शिवाय गौरी वदनाब्ज वृन्द, सुर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्री नीलकंठाय वृषभध्वजाय, तस्मै "शि" काराय नमः शिवाय।।
वरिष्ठ कुम्भोद्‌भव गौतमाय मुनिन्द्र देवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्क वैश्वा नरलोचनाय तस्मै "व" काराय नमः शिवाय।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगंबराय तस्मै "य" काराय नमः शिवाय।।
पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पढ़ेच्छिवसन्निधौ शिवलोक
मवाप्नोति शिवने सह मोदते।
पापोऽह पापकर्माऽहं पापात्मां पाप संभवः
त्राहिमां पुण्डरिकाक्षं सर्व पाप हरो हरिः।।1।।
आवाह्नं न जनामि नैव जानामि पूजनम्।
ना जानामि विसर्जनं क्ष्यतां परेमेश्वर।।2।।

भ्मिसं खलितं पादौ भूमिरेवावलंवनम्।
त्वयिदाता पराधमं त्वमेव शरणं शिव।।3।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जर्नादन।
यत्पूजिनं मयादेव परिपूर्ण तदस्तु में।।4।।
यदक्षरं पद भ्रष्टं मात्राहीनं चयद्भवेत्।
तत्सर्वं क्ष्मयतां देव प्रसीद परमेश्वरं।।5।।
उपचारैः समस्तेस्तु पद्पूजनं च मया कृतम्।
अपराध सहस्त्रे भार्जनं पतित भवार्णवे मम भोधरे।।6।।
अगति चरणगति हरे कृपया केवलं आत्मसातकुरू।
त्राहि–त्राहि कहि पाई गोसांई भूतल परेऊ लकुट की नाईं।।7।।

।। इति ।।

35

हिमालय उत्तराखण्ड स्तवन्

अस्तुतरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वा परौ तोयनिधी ऽ बगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मान दण्डः।।

(कुमारसम्भवम्)

उत्तर दिशा में देवताओं की आत्मा को प्राप्त करने वाला हिमालय नाम का पर्वतों का राजा, जों पूर्व से पश्चिम के समुद्र में प्रवेश कर पृथ्वी को मापने वाले दण्ड के समान है, के अंक में भारत मां का पवित्र एवं पुण्य स्थल उत्तराखण्ड है। वैसे भारत माता के आगोश में विभिन्न तपःस्थल, प्राकृतिक स्थल कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कामरूप से गंगा उद्गम तक प्रेरणा युक्त कलाकृतियों व वीर गाथाओं से भरे हैं। किन्तु इन सभी में महान आश्चर्य प्रद हिमालय की हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं से शोभायमान गगनोलम्भ सुदृढ़ स्तम्भ के समान रूप एवं आकृति की ऐसी उत्कृष्टता से सम्पन्न है।

केवल दर्शकों को ही नहीं बल्कि स्मरण एवं उपमा श्रवण करने वालों को भी आश्चर्य एवं प्रशंसा से प्रेरित करता है। पर्वत सम्राट हिमालय एवं उत्तराखण्ड भूमि की महिमा के बारे में वेद व्यास, पौराणिकों व कालिदास आदि कवियों ने वर्णन किया है। किन्तु ईश्वर की दृष्टि से ऐसे सौन्दर्य का वर्णन कितना भी करो कम ही होगा। मनुष्य बुद्धि द्वारा रचित कृत्रिम सुन्दरता की निरतिशय सीमा भी ईश्वर द्वारा विरचित ऐसी प्राकृतिक सुषमा के एक कण की भी समानता करने में समर्थ नहीं होती। ऐसे आलौकिक असंख्य दृश्यों से सुसज्जित उत्तराखण्ड हिमालय पर परमात्मा ने जिस तरह से अपनी परा प्रकृति को न्योछावर किया। उनके ऐश्वर्य एवं महिमा का क्या कहना? है परमात्मा आप हमें सद्बुद्धि प्रदान करें कि हम आपकी महिमा को सम्यक रूप से जान सकें और उसी में हमेशा आनन्दित होकर मनुष्य जीवन को कृतार्थ बनाएं तथा मनुष्य जीवन को चरमोत्कर्श तक पहुंचा सकें।

गंगाद्वारोत्तर विप्र स्वर्ग भूमिः स्मृता बुधैः।
अन्यत्र पृथ्वी प्रोक्ता गंगाद्वारोतंर विना।

36

तीर्थाटन

भारतीय आश्रम व्यवस्था ने सामाजिक जीवन को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए विभिन्न चारआयुवर्गों में विभाजित किया हुआ था। वानपृस्थ आश्रम में पहुंचते–पहुंचते गृहस्थ सासांरिक क्रियाकलापों से मुक्ति पाने के लिए तीर्थाटन की आवश्यकता महसूस करते हैं। सांसारिक सुखोपभोगों का लालच सहज नहीं छूटता पर आगामी पीढ़ी को भी आनंदपूर्वक गृहस्थी का सुख देने के लिए बुद्धिमान व्यक्ति को स्वयं ही गृहस्थी से विरत होना चाहिए और कुछ धर्मकार्य न कर सके, तो कम से कम तीर्थदर्शन तो अवश्य ही करना चाहिए।

तीर्थ शब्द का अर्थ है–पार करने का स्थान। तरति अनेन इति तीर्थः अर्थात् जहां से तरा जाता है उसका नाम तीर्थ है, सामान्यतः यह विश्वास किया जाता है कि तीर्थ स्नान से भवसागर पार किया जा सकता है। वैसे तीर्थ का सामान्य अर्थ वह पवित्र स्थान है जिसका संबंध किसी देवता, महापुरुष, महान घटना, पवित्र नदी या जलाशय आदि से होता है। प्रायः सभी तीर्थ प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण हैं। तीर्थों की जलवायु और प्रकृति का, मानव–व्यक्तित्व के विकास पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसलिए भी तीर्थों को भारतीय धर्म में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

सामान्यतः तीर्थों में यज्ञादि कर्म सम्पन्न होते रहते थे। महात्माओं की पुण्यकथाओं का वचन होता था। तीर्थयात्री के लिए यह भी प्रबल आर्कषण था कि तीर्थस्थल में साधुसज्जनों के सत्संग से आध्यात्मिक ज्ञान का लाभ होगा। इसे हम तीर्थस्थल पर ज्ञानवर्धक संगोष्ठियों की प्रथा कह सकते हैं।

तीर्थटन के लिए मनुष्य को स्वयं भी सदाचारी होना अनिवार्य है। पुराणों में कहा गया है कि तीर्थयात्रा का फल वही पा सकता है। जो स्वयं जितेन्द्रिय हो, जो अनुकूल और प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में संतुष्ट रहता हो, जो पाखण्डी न हो। स्पष्ट कहा गया है कि अश्रद्धालु, पापात्मा, सशंयात्मा, नास्तिक और केवल तर्क–वितर्क करके झगड़ा करने वाला तीर्थ फल कदापि प्राप्त नहीं कर सकता। सम्भव है तीर्थ स्थल पर शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए ऐसी व्यवस्था की गई हो।

भारतीय तीर्थों में प्रमुख हैं–सात पुरीयां अयोध्या, मथुरा माया काशी कांची अवन्तिकापुरी और द्वारवली, और चार–धाम रामेश्वर, द्वारका, जगन्नाथपुरी और बदरीकाश्रम (इसके अतिरिक्त समय–समय पर अवतार लेने वाले विभिन्न सम्प्रदायों के महापुरुषों के जन्मस्थल एवं

निर्वाणस्थल, साथ ही उनके द्वारा स्थापित विभिन्न धर्म केन्द्र भी तीर्थों की सूची में जुड़ते गए।) भारतीय धार्मिक सांस्कृतिक एकता बनाए रखने में ये तीर्थस्थल और तीर्थ यात्राए हमेशा सहायक रहीं है। तीर्थयात्राओं को यज्ञ के बराबर महत्व दिया गया है क्योंकि व्ययसाध्य होते हैं जिन्हें दरिद्रव्यक्ति नहीं कर सकते। जबकि तीर्थयात्रा सबके लिए सुखद होती है। इसलिए तीर्थयात्रा का लाभ सभी वर्णों के लोग उठा सकते थे, लेकिन यज्ञ का द्वार केवल द्विजातियों के लिए ही खुला था सामाजिक समता का ऐसा सुंदर उदाहरण अन्यत्र नहीं होगा।

प्राचीन भारत में मुनियों का कर्त्तव्य माना जाता था कि गृहस्थों को सत्पथ पर प्रवृत्त करें। इसलिए कुछ मुनि तपस्या पूर्ण होने पर लोक पर्यटन करते हुए लोगों को जीवन की सत्प्रवृत्तियों की ओर प्रेरित करने के लिए धर्म के तत्वों का प्रचार करते थे। शंकराचार्य ने सांसकृतिक अम्युत्थान के लिए देश के एक किनारे से दूसरे किनारे तक पर्यटन किया, जगह–जगह शास्त्रार्थ किए, अद्वैत वेदान्त की प्रतिष्ठा की, और देश के चार कोनों में चार मठों की स्थापना कर भारतीय मनीषी के निरंतर विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

तीर्थ श्री यमुनोत्री धाम आने के लिए मार्ग हरिद्वार से ऋशिकेश होते हुए धरासू तथा वहां से बड़कोट होते हुए जानकी चट्टी बस व कार द्वारा पहुंचा जा सकता है जानकी चट्टी से पैदल यमुनोत्री के लिए घोड़ों व डंडी कंडी के द्वारा व पैदल पहुंचा जा सकता है। श्री यमुनोत्री धाम का महत्व इस प्रकार से स्कन्दपुराण केदार खण्ड में वर्णित है।

यमनायः पूर्वभागे सूर्यकुण्डमिति स्मृतम्।
यः स्नाति तत्र विप्रेश सूर्यलोके महीयते।।

अर्थात् यमुना के पूर्व भाग में सूर्य कुण्ड है। विप्रेश उसमें जो स्नान करता है, वह सूर्यलोक में पूज्य माना जाता है।

तत्र दिव्यशिला नाम स्पर्शान मुक्तिदायिनी।
कलौ धर्म विहीना ये पूजां कुर्वन्तिमानवाः
न तेषां तद्भयं विद्यादर्शनात्पूजनादपि।।

वहां दिव्य शिला है। वह स्पर्श करने से मोक्ष देने वाली है। कलियुग में जो धर्म विहीन मनुष्य पूजा करते हैं, उन्हें दर्शन और पूजन से भी उसका भय नहीं प्राप्त होगा।

तत उत्तरादिग्भागे विष्णु कुण्डं शरद्वये।
यत्र पीतं जलं याति यत्र वज्र शिलार्थदा
विष्णु कुण्डे सुकृत्स्त्रातो विष्णुलोके महीयते।।

उसके उत्तर दिशा भाग में दो बाण की दूरी पर विष्णुकुण्ड है, वहां पीला जल आता है और वहां से वज्र शिला अर्थ देने वाली है विष्णु कुण्ड में एक बार स्नान करने वाला व्यक्ति विष्णु लोक में पूज्य माना जाता है।

ततः क्रोशे महापुण्यमाम्रातकवनं महत।
तत्राप्यथ त्रि रात्रं तु जप्त्वा शिवमनुत्तमम
सिद्धिमाप्नोति परमां सत्यमेव शिवोदित्तम।।

वहां से एक कोस की दूरी पर महान पवित्र विशाल आम्रातक वन है। वहां भी तीन रात अत्युत्तम शिव मंत्र का जप करने से परम सिद्धि प्राप्त होती है यह सत्य ही शिव ने कहा है।

तत उत्तर दिग्भागे ढ़क्काहस्तो गणाधिपः
महादेवंस्य पुरतो ढ़क्कावादनतत्परः।
तस्यस्थानामिदं पुण्यं सर्वकाम फल प्रदम्
ततो वै दक्षिणे भागे त्रियोजनमिते स्थले।
शाकम्भरीति विख्याता सर्वकामेश्वरी वरा।

उसके उत्तरदिग्भाग में हाथ में डमरू लिए गणपति जी महादेव जी के आगे डमरू वजाने में तत्पर है। यह स्थान पवित्र एवं सर्वकामना दायक है। उसके दक्षिण भाग में तीन योजन की दूरी पर शाकम्भरी देवी विख्यात है जो श्रेष्ठ एवं सर्वकामेश्वरी है। उनके दर्शन मात्र से ही समस्त पाप नष्ट हो जाते है। वहां शंकरेश्वर महादेव प्रत्यक्ष सिद्धिदायक है।

तस्याः सन्दर्शनादेव सर्वपापैः प्रमुच्यते।
शाकेश्वरो महादेवः प्रत्यक्ष सिद्धिदायकः
पराऽत्रैव महादेवी मुनींस्तपसी चाश्रितान।
विग्रहे शतवार्षक्ये शाकैः स्वागं समुद्यवैः।।
भरया मास परमा ततः शाकम्भरी मता।
प्रत्यक्ष सिद्धिदा देवी दर्शनात्पापनाशिनी।।

पूर्वकाल में यही महादेवी ने तपस्या में निरत मुनियों का सौ वर्षों वाले युद्ध (या अकाल) में अपने अंग से उत्पन्न शाकों से भरण किया था। इसीलिए वह शाकम्भरी कहलाई। वह देवी प्रत्यक्ष सिद्धि देने वाली और दर्शन से पाप नाश करने वाली है।

इति ते कथितं क्षेत्रं द्रोणर्षेस्तपः स्थलम।
मच्छुत्वा सर्व पापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।

अथ कालेश्वरी देवी प्रोच्यते भक्तवत्सला।
यमुना पश्चिमे भागे सर्वसिद्धि प्रदायिनी।।

द्रोण ऋषि का तपःस्थल जो कहा है जिसे सुनकर व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं है। अब भक्तवत्सला कालेश्वरी देवी को बता रहा हूं यमुना के पश्चिम भाग में (विराजमान) वह एकल सिद्धिदायिनी है।

तत्र कालेश्वरी नाम महादेवो महार्थदः।
तस्य दर्शन मात्रेण कैलाश निलये वसेत।।
देवजुष्टा नदी तत्र पुण्यगम्या शिवप्रदा।
यमुनासंगता यत्रे क्षेत्र पुण्यतमं स्मृतम

वहां कालेश्वरी महादेव महान अर्थदाता है। उसके दर्शनमात्र से कैलाश मन्दिर में वास होता है। वहां देवजुष्ठा नदी पुण्य से प्राप्त एवं कल्याणदायिनी है जहां वह यमुना में मिलती है। वह अत्यन्त्र पवित्र क्षेत्र है।

यत्रर्षयः परा सर्वे शिवपूजन तत्पराः।
लेभिरे सर्वविद्याश्च ततः पुण्यतमं स्मृतम।

जहां पूर्वकाल में सभी ऋषियों ने शिवपूजन में तत्पर होकर सभी विद्याओं को प्राप्त किया था इसीलिए वह क्षेत्र पुण्यतम माना गया है।

यमुना स्नान मात्रेण कृत कृत्यो भवेन्नरः।
येनैकवारमपि वै कृतं स्नानमिह द्विज।।
यमलोकर्न्न गच्छेत्स पश्येच्च परमं पदम्।।

यमुना में स्नान मात्र करने से मनुष्य कृत्कृत्य हो जाता है। जिसने वहां एक बार स्नान कर लिया वह यमलोक नहीं जाएगा और वह परम पद को प्राप्त होता।

यमुनायां तथा स्नात्वा सन्तर्प्य पितृदेवताः।
सूर्यलोकं समासाद्य ब्रह्मलोके महीयते।।

जिसने एक बार स्नान कर लिया वह यमलोक नहीं जाएगा और परम पद को प्राप्त करेगा।

गंगा च यमुना चैव समे त्रैलोक्यपावने।
ययोदर्शनमात्रेण शिवतां याति मानवः।
शतजन्मार्ज्जितैः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः

यस्य भाग्य वसान्मृत्युर्यमुनास्तटे भवेत।।
स लभेद ब्रह्म सायुज्यं न सभूयोऽभिजायेते।

गंगा यमुना दोनों समान रूप से तीनों लोकों को पवित्र करने वाली हैं। उनके दर्शन मात्र से मनुष्य शिवत्व को प्राप्त करता है। सौ जन्मों के अर्जित पापों से मुक्त हो जाता है इसमें संदेह नहीं है। भाग्यवश जिसकी यमुना के तट पर मृत्यु हो जाती है। वह ब्रह्म सायुज्य मोक्ष को प्राप्त करता है और पुनः उत्पन्न नहीं होता।.

प्रसगंद्वा बलात्कारादभक्तयापि च मानवः।
यो गच्छेद्यमुनां धीरोनास्ति तत्सदृशोभुवि।
तावद्गर्जन्ति पापानि ब्रह्महत्यादिकानी च
यावत जायते स्नानं यमुनायां महामते।।

जो धीर मानव यमुना जी की यात्रा को जाता है उसके समान पृथ्वी पर कोई नहीं है। हे महामते ब्रह्म हत्यादि पाप तभी तक गर्जना करते हैं जब तक यमुना जी में स्नान नहीं किया जाता।

तावऽद्यमः प्रभवाति श्रेष्ठः पापाद्विशासितुम।
यावत् न जायते स्नानं सूर्य जायॉमहामते।।
यदि भाग्येन लभते सूर्यग्रहण पूर्वकम।
कुरुक्षेत्राभिधात्काश्याः फलं कोटिगुणं लभेत।।

महाबुद्धिमान! पाप से शासन करने में यम तभी तक श्रेष्ठ तथा समर्थ होता है। जब तक मनुष्य यमुना में स्नान करता है। यदि भाग्य से सूर्य ग्रहन में यमुना स्नान प्राप्त हो जाता है तो कुरुक्षेत्र और काशी से कोटि गुणा अधिक फल मिलता है।

त्रुटिमात्रमपि स्वर्ण ददाति द्विज मूर्त्तये।
स यति परमांल्लोकान्दरिद्रो न भवेत्पुनः।।
पुतृवंश्याश्चगए केचिनमातृवश्यास्तथापरे
गुरुश्वसुरबंधूनां तथा वंश्या महामुने।।
प्रयान्ति परमं स्थानं प्राप्त पिण्डोदकेऽत्र वै।।

जो व्यक्ति वहां त्रुटिमात्र परिणाम भी सुर्वर्ण द्विजाति को देता है वह श्रेष्ठ लोकों में जाता है तथा पुनः दरिद्र नहीं होता है। महामुने यहां पिण्डजल पा जाने पर पितृवंशीय, मातृवंशीय तथा गुरुश्वसुर और बंधुओं के वंशीय जो कोई है वे परम स्थान को प्राप्त करते है।

यमुनास्नान महात्म्यं वक्तुं केनापि शक्यते।
नाहं वर्ष शतैर्वक्तुं शक्नोमि मुनिवन्दित।।
यत्र कुत्रापि सन्दृष्टा यस्मिन कस्मिन्नपि क्षणे,
स्नातावगाहिता पीता दृष्टा पाप प्राणाशिनि।।

मुनिवन्दित! यमुना स्नान का महात्म्य भले कोई कह सकें मैं तो सैकड़ों वर्षों में भी नहीं कह सकता हूं जहां कही भी किसी भी क्षण यमुना का दर्शन हो जाए।

इतिते कथितं दिव्यं यमुना वैभवं वरम।
यस्य श्रवण मात्रेण यमुनास्नानजं फलम्।।
यमुनायाः पूर्वभागे पीठम परम सुन्दरम्।
नाम्ना यवनीश पीठं सर्वदुःख निवारणम्।।

यह यमुनाजी का दिव्य एवं श्रेष्ठ वैभय बना दिया जिसके श्रवण मात्र से यमुना स्नान का फल मिल जाता है। हे विप्र! वहां मृत्यु होने पर सुतरां ब्रह्मपुर में निवास होता है। यमुना के पूर्वभाग में चार योजना लम्बा चौड़ा पाप निवारक परम सुंदर पीठ है। उसका नाम यवनेश पीठ है।

37

यमुनोत्री धाम का महत्व व यमुनाजी की पूजन विधि

गढ़वाल हिमालय के गगन चुम्बी हिमाच्छादित पर्वत श्रृंग के भूतल पर उत्तर काशी जनपद में स्थित है। महान यवनेश पाठ जिसे योनि पीठ भी कहा जाता है। यही यवनेश पीठ भगवती श्री यमुना जी की उद्गम स्थली मानी जाती है।

यवनेशपीठ शक्ति पीठ है। यवनेशपीठ पर्वत श्रृंखला के भूतल को स्पर्श करने वाली शिला को दिव्यशिला के रूप मे पूजित किया जाता है। यवनेश पीठ पर्वत माला के ऊपर लगभग 18,000 फीट की ऊँचाई पर सप्तऋषि नामक एक सुमनोहर सरोवर है, जहां से यमुना जी निःस्सृत होकर पर्वतों से अठखेलियां करती हुई यमुना मंदिर के भूतल पर उतरती है। यमुना जी की पर्वतों से उतरती हुई दुग्ध सम फेन धरा दर्शनार्थी यात्रियों का नाम हर लेती हैं और बार-बार यमुना दर्शन का मूक निमंत्रण देती है। परब्रह्म परमात्मा से नारायण की उत्पति, नारायण के नाभि कमल से ब्रह्माजी की उत्पत्ति-ब्रह्माजी के मानसिक पुत्र मरीचि-मरीचि के पुत्र कश्यप-कश्यप के पुत्र सूर्यनारायण-सूर्यनारायण की पत्नी का नाम संज्ञा, यह विश्वकर्मा की पुत्री हैं। संज्ञा के पुत्र वैवस्वत मनु, यमराज, पुत्री यमुनाजी, सूर्यनारायण की आज्ञा से यमुनाजी कलिन्द पर्वत पर तपस्या करती थी।

38

भगवती यमुना जी की वंश परम्परा

गंगा जी की भांति भगवती यमुना जी भी मूलतः गोलोक निवासिनी हैं। यहां भगवान श्री कृष्ण ने अपनी प्रियतमा भगवती राधा के साथ रास क्रीड़ा करते समय उन्हें अपनी बाई भुजा से प्रकट किया था। एक कथानक प्रसिद्ध है।

पुराणों में भगवती यमुना को भुवन भास्कर श्री सूर्य नारायण की "संज्ञा" नामक पत्नी के गर्भ से उत्पन्न कहा गया है। छाया ने दो पुत्रों को जन्म दिया था जिनका नाम क्रमशः शनि व सावर्णि रखा गया। इस प्रकार यमुनाजी यमराज की बहिन है। जब भगवान श्रीकृष्ण ने द्व ापर युग में पृथ्वी पर अवतार लेने का निश्चय किया तो सृष्टि के प्रारम्भिक युग में भगवती यमुनाजी ने भी पृथ्वी पर अपना निवास बना लिया ताकि कृष्णावतार के समय अपने प्रियतम की लीलाओं की केन्द्र स्थली बन सकें।

एक मान्यता यह भी है कि वामनावतार के समय ब्रह्माजी ने जिस विष्णु चरणोदक को अपने कमण्डल में भर लिया था, गंगा तथा यमुना दोनों का उद्‌गम उसी से हुआ है। ब्रह्म देव से निकलकर यमुना जी जब पृथ्वी पर आयीं, तब कलिन्द पर्वत ने उन्हें अपनी पत्नी के रूप में ग्रहण किया, जिसके कारण उनका एक नाम कालिन्दी भी प्रसिद्ध हुआ। यहां यह उल्लेखनीय है कि योनि पीठ (योनि पर्वत) सप्तऋषि कुण्ड (सप् ऋषि पर्वत) कलिन्द पर्वत की ही श्रृंखलाओं से आबद्ध है यह पर्वत अनेकानेक विद्धियों का प्रदाता हैं सकल सिद्धियों का प्रदाता होने के कारण ही यमुनाजी ने इस कलिन्द पर्वत को अपनी तपस्थली के रूप में चुना था।

यमुना जी कालिन्द पर्वत से उतर कर पृथ्वी पर जब आयी तो मथुरापुरी में आकर उन्होंने कुछ समय तक विश्राम किया। यमुना जी के निवास का वह स्थल विश्राम घाट के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बाद जब कृष्णावतार हुआ, उस समय वे उनकी लीलाओं का केन्द्र बन गयी। श्री कृष्ण ने यमुना तट पर न केवल गायें ही चराई, अपितु रास लीली आदि विभिन्न प्रकार के क्रीड़ा कौतुकों द्वारा उनके सम्मान को बढ़ाया।

एक समय श्री यमुना जी ने कृष्ण को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कुरूक्षेत्रा में घोर तपस्या भी की, जिसके फलस्वरूप श्रीकृष्ण ने उन्हें अपनी एक पटरानील के रूप में भी अंगीकार

किया। भगवान श्री कृष्ण की आठ पटरानियां थीं जिनमें से एक कालिन्दी भी थी। एक बार कार्तिक शुक्ल द्वितीय तिथि को यमराज अपनी बहिन यमुना से मिलने के लिए मथुरा आए।

बहिन से मिलकर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई फिर उन्होंने अपनी बहिन यमुना से कोई वर मांगने के लिए कहा। तब यमुना ने उनसे यह मांग की कि कार्तिक शुक्ल द्वितीय तिथि को जो भाई–बहिन इस स्थान (विश्राम घाट मथुरा) पर आकर मुझमें (यमुना में) स्नान करेगा, उन्हें आपके (यमराज) फन्दे से मुक्ति मिल जाए। अर्थात् वे लोग यदि पापी हो तब भी यम लोक को न जाएं और उन्हें उस स्थान के पुण्य प्रभाव से स्वर्गलोक की प्राप्ति हो यमराज ने यह सुनकर "एवमस्तु" कहा। उसी समय से संसार के हजारों भाई बहिन कार्तिक शुक्ल द्वितीय को मथुरा के विश्राम घाट स्थल पर पहुंचकर यमुना में साथ–साथ स्नान करते हैं। इस प्रकार वह यम–पाश से मुक्त होकर अपने लिए स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

त्रेता युग के महाराज उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव ने अपनी विमाता के व्यवहार से दुःखी होकर, मथुरा में पहुंचकर यमुना नदी के तट पर ही घोर तपस्या की थी जिसके फलस्वरूप उन्हें श्रीविष्णु भगवान के साक्षात् दर्शन हुए। तदुपरान्त उन्होंने न केवल राज्य तथा सम्मान ही प्राप्त किया अपितु नक्षत्र मण्डल में "ध्रुव" के रूप में सदा सर्वदा के लिए अचल पद भी प्राप्त कर लिया। मथुरा में यमुना नदी के तट पर ध्रुव ने जहां तपस्या की थी, वह स्थान ध्रुव टीले के नाम से विख्यात है। द्वापर युग में जब भगवान श्री कृष्ण ने कंस के कारागार में माता देवकी के गर्भ से जन्म लिया था, उस समय उन्होंने अपनी माया द्वारा कारागार के सभी पहरेदारों को निद्रामग्न कर दिया था तथा अपने पिता वसुदेव को यह सलाह दी थी कि वह उन्हें उसी समय ले जाकर गोकुल में नन्द गोप के यहां पहुंचा आए तथा वहां पर यशोदा ने जिस कन्या को जन्म दिया है, उसे उनके बदले यहां ले आए तथा कंस को यह सूचना मिल जाए कि इस बार देवकी के गर्भ से लड़के का नहीं अपितु लड़की का जन्म हुआ है।

महाप्रभु के निर्देशानुसार वसुदेव ने ऐसा ही करने का निश्चय किया। उस समय उनकी हथकड़ी बेडियां अपने आप खुल गई। तब उन्होंने शिशु कृष्ण को एक सूप में रखा तथा उसे अपने सिर पर लादकर कारागृह से बाहर चल पड़े। प्रभु की माया से उस समय कारागृह के सभी द्वार अपने आप खुल गए।

पहरेदार सभी मुर्च्छित तो पड़े ही थे, अतः वसुदेव अपने शिशु को लेकर गोकुल के मार्ग पर ही चल पड़े। बीच में यमुना नदी पड़ती थी। उसे पार करके ही गोकुल पहुंचा जा सकता था। अतः वसुदेव जी ने ज्योहि यमुना में प्रवेश किया त्योंहि यमुना जी के जल में हलचल मचनी प्रारम्भ हो गई। यमुनाजी अपने प्रभु का दर्शन पाने के लिए लालायित हो उठी, उन्होंने अपने जल

को बढ़ाना शुरू कर दिया, जिसके फलस्वरूप वसुदेव जी उसमें डूबने–डूबने को ही चले। यह देखकर श्रीकृष्ण जी ने यमुना जी की मनोभावना को समझ लिया और अपने एक पांव को सूप से बाहर निकालकर नीचे लटका दिया। उसका स्पर्श होते ही यमुना जी का जल तुरन्त नीचे उतर गया। तब वसुदेव जी सुविधापूर्वक उसे पार कर गोकुल में जा पहुंचे और वहां श्रीकृष्ण को यशोदा के बगल में लिटाआकर उनकी सम्मप्रसूता कन्या को लेकर मथुरा लौट आए।

भगवती यमुना जी तीनों प्रकार के पाप–शापों को नष्ट करने वाली हैं जो व्यक्ति यमुना के पवित्र जल में स्नान करते हैं, उनके सभी पाप दूर हो जाते हैं। भगवती यमुना जी अपने उपासकों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों फल प्रदान करती हैं।

यमुनोत्री धाम की ऊँचाई समुद्र से 10,600 फीट के आस–पास हैं। जबकि योनि पर्वत की ऊंचाई लगभग 18,000 फीट तथा बंदरपूंछ पर्वत की ऊँचाई लगभग 22,000 फीट है। उत्तराखण्ड के चारों धमों में सर्वप्रथम यमुनोत्री धाम पड़ता है। यमनोत्री धाम के पश्चिम में गणकुंजर नाम का पर्वत है। उसके आगे सुवर्णेश्वर महादेव का उल्लेख मिलता है। इसी पर्वत से लगी हुई उच्च श्रृंखला को बंदरपूंछ के नाम से जाना जाता है। इन दोनों पर्वतों के मध्य में अवस्थित है सप्तऋषि कुण्ड। यमुनोत्री धाम की पर्वत मालाओं के मध्य फूलों से लदी घाटियां प्रकृति के वैभव को उन्मुक्त रूप से बिखेर रही हैं। वनौषधियां विभिन्न प्रकार की वनस्पति व पादप सांसारिक मनुष्यों को जीवन दान देने वाली हैं। यहां ब्रह्मकमल, नीलकमल, भेड़गदा, लेसर, जटामासी, गुग्गुल, जयान अतीस, कड़वी शालमपंजा, मीठा निर्विषी, ममीरी, ममीरा, सालममिश्री, चोरा, आर्चा आदि अनेक ज्ञात–अज्ञात जड़ी बूटियों का विशाल भण्डार इस हिमालय में मौजूद है।

39

श्री यमुना कवचं

मांधातोवाच

यमुनायाः कृष्णराज्ञ्या कवचं सवर्ततोऽमलम्।
देहि मध्यम महाभाग धारयिष्याम्यहं सदा।।

मांधाता ने पूछा—महाभाग। आप मुझे श्री कृष्ण की पटरानी यमुना के सर्वथा निर्मल कवच का उपदेश दीजिए मैं उसे सर्वदा धारण करूंगा।

श्री सौमरिरूवाच

यमुनायाश्च कवचं सर्वरक्षाकरं नृणाम
चतुः पदार्थदं साक्षाच्छृणु राज़न् महामते।

सौभरि ने कहा—महामते नरेश। यमुना जी का कवच मनुष्यों को सब प्रकार से रक्षा करने वाला तथा साक्षात चारों पदार्थों को देने वाला है, तुम इसे सुनो—

ध्यान

कृष्णां चतुर्भुजां श्यामां पुण्डरीकदलेक्षणाम्।
रथस्यां सुन्दरीं ध्यात्वा धारयेत् कवचं ततः।।

श्री यमुना जी की चार भुजाएं हैं। वह श्याम वर्ण तथा उनके नेत्र कमल दल के समान सुन्दर एवं विशाल है। वह परम सुन्दरी है तथा दिव्य रथ में बैठी हुई हैं। इस प्रकार उनका ध्यान करके कवच धारण करें।

स्नातः पूर्व मुखौ मौनी कृकसंध्यः कुशासने।
कुशैर्बद्ध शिखो विप्रः पठेद्वे स्वास्तिकासनः।।

स्नान करके पूर्वाभिमुख हो, मौन भाव से कुशासन पर बैठ और कुशों द्वारा शिखा बांधकर संध्यावन्दना करने के अनन्तर ब्राह्मण अथवा द्विजमात्र स्वस्तिका आसन से स्थित हो कवच का पाठ करें।

यमुना में शिरः पातु कृष्णा नेत्र द्वयं सदा।
श्यामा भ्रू भंगदेशं च नासिकां नाकवासिनी।।

यमुना मेरे मस्तक की रक्षा करें, कृष्ण सदा दोनों नेत्रों की और नाकवासिनी नाक की रक्षा करें।

कपोलो पातु में साक्षात् परमानन्दरूपिणी
कृष्णपवामांसंसम्भूता पातु कर्ण द्वयं ममः।।
अधरौ पातु कालिन्दी चिबुकं सूर्यकन्यका
यमस्वसा कन्धरां च हृदयं मे महानदी।।

साक्षात परमानन्दरूपिणी मेरे दोनों कपोलों की रक्षा करें। श्री कृष्ण के बाएं कन्धे से प्रकट हुई वह देवी मेरे दोनों कानों का संरक्षण करें। कालिन्दी अधरों की और कन्या चिबुक ठोड़ी की रक्षा करें, यमस्वसा (यमराज की बहिन) मेरी ग्रीवा और महानदी मेरे हृदय की रक्षा करें।

कृष्ण प्रिया पातु पृष्ठं तटिनी में भुजद्वयम।
श्रोणी तटे च सुश्रोणी कटिं में चारूदर्शना।।
उरुद्वयं तु रम्भोरूर्जानुनी त्वब्धि भेदिनी।
गुल्फौ रासेश्वरी पातु पादौ पापपहारिणी।।

कृष्णप्रिया पृष्ठभाग का और तटिनी मेरी दोनों भुजाओं का रक्षण करें। 'सुश्रोणी' श्रोणी तट की और चारूदर्शना मेरे कटिप्रदेश की रक्षा करें। रम्भोरू दोनों जांघो की और त्वब्धिभेदिनी मेरे दोनों घुटनों की रक्षा करें। रासेश्वरी गुल्फों का और पापहारिणी पादयुगल की रक्षा करें।

अन्तर्बहिरधश्चोर्ध्व दिशासु विदिशासु च।
समन्तात पातु जागतः परिपूर्णतम प्रिया।।
इदं श्री यमुनायाश्च कवचं परमाद् भुतम।
दशवारं पठेद्‌भक्त्या निर्धनो धनवान भवते।।

परिपूर्णतमप्रिया भीतर, बाहर, नीचे, ऊपर तथा दिशाओं और विदिशाओं में सब ओर से मेरी रक्षा करें।

यह श्री यमुना का परम अद्‌भुत कवच है। जो भक्ति भाव से दस बार इसका पाठ करता है वह निर्धन भी धनवान हो जाता है।

त्रिभिर्मासैः पठेद्धीमान् ब्रह्मचारी मिताशनः।
सर्वराज्याधिपत्यत्वं प्राप्यते नात्रा संसयः।।
दशोतरशतं नित्यं त्रिमासावधि भक्तिः।
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा तस्य किं किन्न जायते।।

जो बुद्धिमान मनुष्य ब्रह्मचार्यपालन पूर्वक परिमित आहार का सेवन करते हुए तीन मास तक इसका पाठ करेगा। वह सम्पूर्ण राज्यों का आधिपत्य प्राप्त कर लेगा। इसमें संशय नहीं है। जो तीन महीने की अवधि तक प्रतिदिन भक्ति भाव से शुद्धचित् हो इसका एक सौ दस बार पाठ करेगा, उसको क्या–क्या नहीं मिल जाएगा।

यः पठेत् प्रातरूत्थाय सर्वतीर्थ फलंलभेत।
अन्ते ब्रजेत परंधाम गोलोकं योगिदुर्लभम्।।

जो प्रातः काल उठकर इसका पाठ करेगा उसे सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान करने का फल मिल जाएगा।

श्री यमुनायै नमः

40

श्री यमुनाष्टकम

भ्रातुरन्तकस्य पत्तनेऽभिपत्तिहारिणी
प्रेक्षयातिपापिनोऽपि पापसिन्धु तारिणी।
नीरमाधुरीभिरत्यशेषचित्रबन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी।।1।।

सूर्यपुत्री वह यमुना, मुझे सदैव पवित्र बनाती रहे कि, जो आपने भाई यमराज के नगर, अर्थात् यमालय में जाने से रोकने वाली है, एवं अपने दर्शन मात्रा से पापीजनों को भी पापसिन्धु से पारलगाने वाली हैं, अपने जल की माधुरी श्रेणी के द्वारा सभी जनों के चित को अपने में निबद्ध करने वाली है।

हारिवारिधारयाभिमण्डिततोरूखाण्डवा
पुण्डरीकमण्डलोद्यदण्डजालिताण्डवा।
स्नातकामपामरोग्रपापसंपदन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविनद बन्धुनन्दिनी।।2।।

सूर्यपुत्री वह यमुना, मुझे सदैव पवित्र बनाती रहे कि, जिसने अपनी मनोहर जलपारा के द्वारा, इन्द्र के विशाल खाण्डव नामक वन को विभुषित कर दिया है, एवं अपने ऊपर खिले हुए श्वेतकमल वृन्दों में खंजन आदि पक्षीवृन्दों के नृत्य जिसमें होते रहते हैं तथा अपने में स्नान करने की इच्छा वाले पापियों के भयंकर पापरूपी संपति को जो अन्धी बना देती है, अर्थात जो अपने में स्नान करने की इच्छा मात्र से महापातकों को विनष्ट करने वाली हैं।

शीकराभिमृष्ठट्जन्तु–दुर्विपाक मर्दिनी
नन्दनन्दनान्तरंगभक्तिपूरवर्धिनी।
तीरसंगमामिलाषिमंगलानुबन्धिनी मां पुनात
सर्वंदारविन्दबन्धुनन्दिनी।।3।।

सूर्यपुत्री वह यमुना, मुझे सदैव पवित्र बनाती रहे कि, जो अपने जलबिन्दु से स्पर्श करने वाले प्राणीमात्र के, दुष्कर्मजनित फल को विनष्ट करने वाली है, एवं नन्दनन्दन श्रीकृष्ण की अंतरंगभक्ति अर्थात रागानुगाभक्ति की धारा बढ़ाने वाली है, तथा अपने तटपर निवास करने की अभिलाषा वाले जनमात्र का कल्याण करने वाली है।

द्वीपचक्रवाल जुष्ट सप्तसिन्धुभेदिनी
श्रीमुकुन्दनिर्मितोरूदिव्यकेलिवेदिनी।
कान्तिकन्दलीभिरिन्द्र नीलवृन्दनिन्दिनी मां पुनातु
सर्वदारविन्दबन्धुनन्दिनी।।4।।

सूर्यपुत्री वह यमुना, मुझे सदैव पवित्र बनाती रहे कि, सप्तद्वीपमण्डल से सेवित सातों समुद्रों का भेदन करने वाली है, एवं जो श्रीकृष्ण के द्वारा निर्मित विशाल दिव्य क्रीड़ाओं को जानने वाली है, आकाश में फेंके हुए यमुना जल में शुक्लता की उपलब्धि तो सूर्य एवं नक्षत्रों की प्रभा से कही जा सकती है।

माथुरेण मण्डलेन चारूणाभिमण्डिता
प्रेमनद्ध वैष्णवाध्ववर्धनाय पण्डित।
ऊर्मिदोर्विलासपद्मना पादवन्दिनी मा
पुनातु सर्वदारविन्दबन्धु नन्दिनी।।5।।

सूर्यपुत्री वह यमुना, मुझे सदैव पवित्र बनाती रहे कि, जो परममनोहर मथुरा मण्डल के द्वारा मण्डित है, एवं प्रेम से बंधे हुए वैष्णव को अर्थात रागानुरागी भक्तिसंप्रदाय को बढ़ाने के लिए निपुण है तथा अपनी तरंग रूप भुजाओं के विलास के द्वारा श्री कृष्ण के चरणकमलों की वन्दना करने वाली है।

रम्यतीररंभमाणगोकदम्ब भूषिता
दिव्यगन्धभाक्कदम्ब पुष्पराजिरूषिता।
नन्दसूनुभक्त संघसंगमाभिनन्दिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्द बन्धनन्दिनी।।6।।

सूर्यपुत्री वह यमुना, मुझे सदैव पवित्र बनाती रहे कि, जो परमरमणीय अपने दोनों तीरों पर रंभाते हुए गोगण से विभुषित हैं, एवं दिव्यगन्ध से युक्त कदम्ब पुष्पों की पंक्ति से युक्त है तथा नन्दलाल के भक्तवृन्द के सम्मेलन से हर्षित होती रहती हैं।

फुल्लपक्षमल्लिकाक्षहंसलक्ष्कूजिता
भक्तिविद्ध देव सिद्ध किन्नरालिपूजिता।
तीरगन्ध वाहगन्धजन्मबन्धरन्धिनी
मां पुनातु सर्वदारविन्द बन्धनन्दिनी।।7।।

सूर्यपुत्री वह यमुना, मुझे सदैव पवित्र बनाती रहे कि, जो फूले हुए पंखों वाले लाखों राजहंसों के द्वारा शब्दायमान है अर्थात जिसके ऊपर लाखों राजहंस गूंजते रहते हैं, एवं जो हरिसेवा में आसक्त मनवाले देव–सिद्ध नर किन्नर आदि की पंक्ति से पूजित हैं, तथा अपने तीर पर बहने वायु के लेशमात्र संबंध से, प्राणियों के पुनर्जन्म के बन्धन को काटने वाली है।

चिद्विलासवारिपूरभूभुर्वः स्वरापिनी
कीर्त्रितापि दुर्मदोरूपापमर्मतापिनी।
बल्लवेन्द्रनन्नदनागं रागभंगेन्धिनी
मां पुनातु सर्वदाविन्द बन्धुनन्दिनी।।8।।

सूर्यपुत्री वह यमुना, मुझे सदैव पवित्र बनाती रहे कि, जो चिद्विलास अर्थात में अपने जलप्रवाह के द्वारा भूः, भुवः, स्वः नामक तीनों लोकों को व्याप्त करने वाली है, अर्थात सातों समुद्रों की तरह, भू आदि तीनों लोकों को भेद कर पार जाने वाली है, एवं अपना नाम संकीर्तन करने मात्र से भी दुदर्मनीय विशाल पापों के मर्म को जलाने वाली है, तथा व्रजराजकुमार श्रीकृष्ण के अंगराज के गिरने से परम सुगन्धित है।।8।।

तृष्टबुद्धिरष्टकेन निर्मलोमिंचेष्टितां
त्वामनेन भानुपुत्रि। सर्वदेववेष्टताम।
यः स्तवीति वर्धयस्व सर्वपापमोचने
भक्तिपूरमस्य देवि पुण्डरीकलोचने।।9।।

हे सूर्यपुत्री! देवी यमुने! संतुष्ट बुद्धिवाला जो व्यक्ति, इस अष्टक के द्वारा निर्मल तरंग रूप चेष्टावाली एवं सभी देवताओं से परिवेश्टित स्वरूपवाली तुम्हारी स्तुति करता है, उस पाठक व्यक्ति के भक्तिप्रवाह को तुम अविद्यापर्यन्त समस्त पापों से विमुक्त करने वाले कमल नयन श्रीकृष्ण में बढ़ाती रहो। आपके श्री चरणों में मेरी यही प्रार्थना है।

41

श्री यमुना यंत्र व पूजन सामग्री
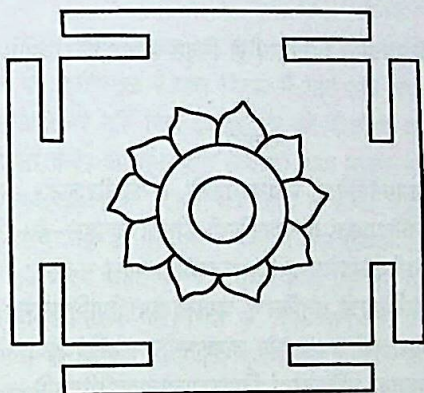
लालवस्त्र
श्वेतवस्त्र
केंचुकी
सौभाग्य सूत्र
आभूषण
काजल
ताम्बूल
गंध द्रव्यं
कुंकुंम
सिन्दुर

सुपाड़ी
चंदन
चावल
पुष्प
धूप
दीपक
कपूर
नारियल
स्वर्ण

इनके अतिरिक्त, कलश बतासे, अगरबत्ती, आशन, जल आदि की भी आवश्यकता होती है।

42

यमुना जी के जप व पूजन का साधना विधान (वेदोक्त)

प्रथम संकल्प आदि कर के आचमन प्राणायाम् से निवृत होकर फिर यमुना जी का इस प्रकार से ध्यान करें।

ध्यानम्

श्यामामम्भोजनेत्रां, सघनधनरूचिं, रत्नमंजीरकूजत्,
कांचीकेयूरयुक्तां कनकमणिमये विभ्रतीं कुण्डले–द्वे।
भाजच्छीनीलवस्तस्फरदि, भजचलद्वारभारां मनोज्ञां,
ध्याये मार्तण्डपुत्रीं तनुकिरण, चयोस्द्दीप्तदीपाभिरामाम्।
कृपापारावारां तपनतनयां तापशमनीम मुरारिप्रेयस्यां
भवमयदवां भक्तिवरदां वियज्ज्वालोन्मुक्तांश्रीयमपि
सुखाप्ते प्रतिदिनं सदाधीरो नूनं भजति यमुना नित्य फलदाम।।

जो कृपा के सागर, सूर्य की पुत्री तापत्रय को शान्त करने वाली श्रीकृष्ण की प्रेयसी संसार भय के लिए दावानल के समान, भक्ति का वर देने वाली आकाश की ज्वाला से उन्मुक्त लक्ष्मी स्वरूप है, उन नित्य फल देने वाली यमुना का धीर पुरूष सुख प्राप्ति के लिए निश्चय ही सदैव प्रतिदिन भजन करता है।

कुर्मोऽपरि समाशीनाँ नाना रत्न विभूषितां
कपालं खेटकं मालां सुदा-सरिष कमण्डलुं
विभ्रति निल वर्णाभाँ नील वस्मदशं शुभाम्
ध्यायेऽहम यमुनाँ देवी वश्य सौभाग्य वाक मुदाम्

इन्द्र निलोत्पला कारे ईनकन्ये यशः स्वीनी
सर्व देव स्तुते मार्तयमुने त्वां नमाम्यहम्

43

श्री यमुना पूजन विधि

सर्वप्रथम स्नानादि से निवृत होकर स्वच्छ एवं धुले वस्त्र धारण करके, मन वचन व कर्म की पवित्रता सहित आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर शिखा में गांठ बांधे तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करें। फर इष्टदेवी यमुनीजी की मूर्ति चित्र अथवा यंत्र को चौकी के ऊपर नवीन वस्त्र बिछाकर अंपने अग्रभाग में स्थापित करें। जलपूर्ण पात्र (कलश) तथा पूजन सामग्री को संकलित करके अपने समीप रख लें फिर इष्टदेवी की प्रतिमा, यंत्र आदि के समक्ष शुद्ध घृत का दीपक प्रज्वलित कर धूपबत्ती अगरबत्ती आदि जला दें। तदुपरान्त हाथ में जल लेकर आगे लिखे अनुसार सर्वप्रथम स्वस्तिवाचन का पाठ करें। फिर पवित्रीकरण आचमन हस्त प्रक्षालन तथा भूतशुद्धि आदि क्रियाएं सम्पन्न कर सर्वप्रथम विघ्नविनाशक श्री गणेश जी का ध्यान करें, तदुपरान्त संकल्पवाच्य का उच्चारण कर लिखे मंत्रों के अनुसार यथाविधि पूजन की समाप्ति के उपरान्त स्तोत्र चालीसा आदि का पाठ कर, आरती, प्रदक्षिणा, नमस्कार आदि कृत्य करने चाहिए।

स्वस्ति–वचन

ऊँ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्वे श्रववेदाः।
स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।1।।

ऊँ पयः पृथिव्यां पय औषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पय स्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम।।2।।

ऊँ विष्णोररराटमसि विष्णोः स्नप्त्रे रथो विष्णोः।
स्यूरसि विष्णोर्धुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।।3।।

ऊँ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्योदेवता चन्द्रमादेवता वसवो देवता
रूद्रोदेवताऽऽदित्या देवता मरूतोदेवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिदेवतेन्द्रो
देवता वरूणो देवता।।4।।

ऊँ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयःशान्तिःवनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः
सामा शान्ति रेधि।।5।।

ऊँ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यह भद्रंतन्नऽआसुव।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिर्भवतु।।

टिप्पणी–उक्त स्वास्ति वाचन में तथा आगे वर्णित मंत्रों में जहां ऊँ इस प्रकार के चिन्ह हो वहां ग्वं की भांति उच्चारण करना चाहिए जैसे–सर्वं शान्ति का उच्चारण सर्वग्वं शान्ति होगा। शान्ति वाचनोपरान्त निम्नलिखित पवित्रीकरण मंत्र का उच्चारण करते हुए जल से तीन बार आचमन करें तथा अपने पर तीन बार थोड़ा–थोड़ा छिड़के फिर दोनों हाथों को शुद्ध जल से धो लें।

पवित्रीकरण–

ऊँ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतो ऽपिवा,
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यनतरः शुचिः।

इसके उपरान्त भूत शुद्ध हेतु निम्नमंत्र का उच्चारण करें–

ऊँ अपर्सपन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिता।
ये भूता विघ्न कर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

इसके उपरान्त दांए हाथ में जल–अक्षत तथा यज्ञोपवीत लेकर निम्न संकल्प का उच्चारण करें।

हरिः ऊँ तत्सम। नमः परमात्मने श्री पुराण पुरूषोत्तमाय श्री मद्भगवते
महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य आद्य ब्रह्मणे द्वितीय प्रहरार्द्धे
श्री श्वेत वराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमें कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्त्तान्तिर्गते देशेक पुण्य क्षेत्र षष्टि संवत्सराणा मध्ये अमुकनाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्र, 'अमुक' योगे, 'अमुक' 'वासरे, 'अमुक' राशिस्थिते सूर्ये, चन्द्रे, भौमें, बुध, गुरौ, शुक्रे, शनौ, राहौ,

केतौ, एवं गुण विशिष्टाया तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न 'अमुक' नाम्नि शर्मा
(वर्मा इत्यादि) ऽह धर्मार्थ काम मोक्ष हेतवे श्री यमुनापूजनमहं करिष्ये।

टिप्पणी–उक्त संकल्प वाक्य में जहां–जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां–वहां क्रमशः अयन ऋतु मास, पक्ष, नक्षत्र, योग, वर, सूर्यादि की राशि, अपना गोत्र, अपनी राशि एवं अपने नाम का उच्चारण करना चाहिए जैसे शीत ऋतौ, माघ मासे, शुक्ल पक्षे, पूर्णिमा तिथौ, अश्विनी नक्षत्रे भौमवासरे गोत्रोत्पन्न आदित्य नाम्नि ऽहं आदि शब्दो का उच्चारण करना चाहिए। संकल्प वाक्य के बाद दांये हाथ में दूर्वा चावल पुष्प तथा जल लेकर निम्न लिखित मंत्रों का उच्चारण करते हुए सर्वप्रथम विघ्नविनाशन श्री गणेश जी का ध्यान करना चाहिए।

ऊँ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाणाननः
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छ्रुणुयादपि
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्न श्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।

उक्त मन्त्रों का उच्चारण करने के बाद हाथ के पुष्प अक्षतादि को गणेश जी की प्रतिमा के सम्मुख छापेड़प् दे तदुपरान्त पुनः हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए श्री यमुना जी का ध्यान करें।

चांवल्यारूण लोचनांचित कृपा चंद्रार्क चूणामणिं।
चारूरमेरमुखी चराचर जगत्संरक्षणी सत्यदाम्।।
चंचच्च्मर नासिकाग्रविल सन्मुक्ता कणिरंजिता
श्री शैलस्थल वासिनी भगवतीं श्री मातरं भजेत
कस्तूरी तिलकांयितेन्दु विलसत्प्रादमा सिभाल स्थली
कर्पूर द्रवमित्रचूर्ण खार्दिराभायोल्लस द्वीटिकाम।।
लोलापांग तरंगि तैरधि कृपासारैर्नता नन्दिनी।
श्री शैलस्थल वासिनी भगवती श्रीमातरं भावये।।

"ध्यान" के पश्चात निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवती यमुना का आवाहन करें–

आवाहन–सर्वलोकस्य जननी देवी त्वं पापनाशिनी

आवाहयामि यमुने त्वं श्रीकृष्ण भामिनी।

आवाहन के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए आसन प्रदान करें–

आसन–सूर्यपुत्रि महामाये त्रौलोक्येषु पूजिते।

अमलं कमलं दिव्यमासंन प्रतिगृह्यताम।।

"आसन" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए पाद्य के निमित जल छिड़कें–

पाद्य–सर्व तीर्थ सम्मूतं गन्ध पुष्पादिभिर्युतम्।

पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहणाशु नमोऽस्तुते।।

"पाद्य" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए अर्घ्य के निमित जल छिड़कें–

अर्घ्य–अष्टगंध समायुक्त दूर्वापुष्पादिभिर्युतम

अर्घ्य गृहाणमदर्त्त कालिन्दी च नमोऽस्तुते।।

"अर्घ्य" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए आचमन के निमित जल छोड़ें–

आचमन–सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्णुदिभिः स्तुते।

ददाम्याचमनं तस्में प्रसीद भुवेनेश्वरी।।

"आचमन" के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए स्नान के निमित जल छोड़ें–

स्नान–सर्वतीर्थेभ्य आनीयातें र्हेमाम्भोरूहवासितैः।

स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः।।

"स्नान" के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए पंचामृत स्नान कराये–

पंचामृत स्नान–पंचामृत समायुक्त तीर्थानां सलिलं शुभम।

गृहाण विश्वजननी स्नानार्थ भक्तवत्सले।।

"पंचामृत" स्नान के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए शुद्धोदक स्नान कराये–

शुद्धोदक स्नान–तोयं तव महादेवि कर्पूरागरूवासितम।

तीर्थभ्ये सुसमानीतं स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।।

"शुद्धोदक" स्नान के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए वस्त्र समर्पित करें–

वस्त्र–दिव्याम्बर नूतनंहि क्षौमत्वति मनोहरम।

दीयमानं भयादेवी गृहाण जगदम्बिके।।

"वस्त्र" के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए उपवस्त्र समर्पित करें–

उपवस्त्र–कंचुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नेः समन्वितम।

ग्रहाण त्वं मयाहदं मंगले जगदीश्वरि।

"उपवस्त्र" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए मधुपर्क समर्पित करें–

मधुपर्क–कापिलं दांधे कुदेन्दुधवलं मधुसंयुतम्।

स्वर्णपात्र स्थितं चापि मधुपर्क गृहाण भौः।

"मधुपर्क" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए आभूषण समर्पित करें–

आभूषण–स्वभावसुन्दरांगाये नानादेवाश्रये शुभे।

भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यामर्चिते।।

"आभूषण" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए गन्ध समर्पित करें–

गन्ध–श्रीखण्डागुरूकर्पूरनमृगनामि समन्वितम्।

विलेपनं महादेवि तुम्यं दास्यामि भक्तितः।।

"गन्ध" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए सिन्दूर समर्पित करें–

सिन्दूर–सिन्दूररत्कवर्ण चसिन्दूरतिलक प्रिये।

भक्यातं मयोदेवि सिन्दूंर प्रतिगृह्यताम्।।

"सिन्दूर" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए कुंकुम समर्पित करें–

कुंकुम–कुंकुम कामदं दिव्यं कुंकुम कामरूपिणम्।

अखण्ड काम सौभाग्य कुंकुम प्रतिनृह्यताम।।

"कुकुम" के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए अक्षत (चावल) समर्पित करें–

अक्षत–अक्षतान्निर्मलांशुद्धान मुक्तामणि समन्वितान।

गृहणासु महादेवि देहि मे निर्मलां धियम।।

"अक्षत" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए पुष्प समर्पित करें–

पुष्प–मन्दारपारिजाताद्याः पाटलौ केतकी तथा।

मरूवामोगरं चैव गृहाणाशु नमोनमः।।

"पुष्प" के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए पुष्पमाला समर्पित करें–

पुष्पमाला–पद्मशंख जयोपुष्पैः शतपत्रैर्विचित्राम्।

पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाणत्वं सुरेश्वरी।।

"पुष्पमाला" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए सुगन्धित तैल समर्पित करें–

सुगन्धित तैल–स्नेहं गृहाण स्नेहन लोकेश्वरी दयानिधे।

सर्व लोकस्य जननि ददामि स्नेहमुत्तमम्।।

"सुगन्धित तैल" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए धूप समर्पित करें–

धूप–वनस्पतिरसोद्भूतो गंधढयो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

"धूप" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए दीपक समर्पित करें–

दीपक–साज्यं च बर्तिसंयुक्तं वह्निनायोजितंमया।

तमोनाशं करं दीपं गृहण परमेश्वरि।।

"सिन्दूर" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए दीपक के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए नैवेद्य समर्पित करें। कुंकुम समर्पित करें–

नैवेद्य–नैवेद्य गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्य समन्वितम्।

षड्रसेरन्वितम् दिव्य सूर्यपुत्री नमोऽस्तुते।।

"नैवेद्य" के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए ऋतुफल समर्पित करें–

ऋतुफल–फलेन फलितं सर्व त्रैलोक्यं सचराचरम्।

तस्मात फल प्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।।

"ऋतुफल" पश्चात आचमन के लिए जल समर्पित करें–

आचमनीयजल–शीतलं निर्मल तोयं कर्पूरेण सुवासितम।

आचम्यतामिदं देवि प्रसीद त्वां सुरेश्वरि।।

"आचमनीय" के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए अखण्ड ऋतुफल समर्पित करें–

अखण्ड ऋतुफल–इर्द फलं मयाऽनीत सरसं च निवेदितम्।

गृहाण परमेशानि प्रसीद प्रणमाम्यहम्।।

"अखण्ड ऋतुफल" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए ताम्बूल समर्पित करें–

ताम्बूल–एलालबंग कर्पूर नामपत्रादिमिर्युतम्।

पूगीपलेन संयुक्त ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम।।

"ताम्बूल" के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए दक्षिणा समर्पित करें–

दक्षिणा–हिरण्यगर्भ गर्भस्र्थ हेतबीजं विभावसौ।

अनन्तपुण्यफलदमत शान्ति प्रयच्छ मे।।

"दक्षिणा" के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रार्थना समर्पित करें–

प्रार्थना–पापागुंसा महादेवी वांछितार्थ प्रदायिनि।

निष्पापं कुरू में मातः प्राणितन्तेव सर्वतः।।

"प्रार्थना" के पश्चात निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए नीराजन (आरती) समर्पित करें–

नीराजन–नीराजनं सुमंगल्यं कर्पूरेण समन्वितम्।

चन्द्रार्क वहिन सदृशं महादेवि नमोऽस्तुतं।

नीराजन के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रदक्षिणा करें–

प्रदक्षिणा–देवि देवेशि नमस्ते इंप्सितप्रदे।

नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्त वत्सले।।

"प्रदक्षिणा" के पश्चात निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए दण्डवत प्रणाम समर्पित करें–

प्रणाम–नमः सर्वहितार्थाये जगदाधारहेतवे।

साष्टागाऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मयाकृतः।।

"प्रणाम" के पश्चात आरती स्तोत्र आदि का पाठ करना चाहिए। अन्त में निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी का विसर्जन करना चाहिए।

विसर्जन–इमां पूजां मायदेवि यथा शक्त्युपपादिताम्।।

रक्षार्थं त्वं समादाय ब्रजस्थान मनुत्तमम्।।

"विसर्जनो–परान्त" यमुना जी की धारा में दूध चढ़ाने तथा दीपक प्रवाहित करने का विशेष फल कहा गया है।

।। इति श्री यमुना पूजन विधि शम ।।

* * *

44

श्री यमुना जी की आरती

जय श्री यमुने मां श्री यमुने मां
श्री गोलोक निवासिनी वासिनी ब्रजरमनि–ओम
सूर्यसुता संज्ञा उरजन्मी मां संज्ञा उरजन्मी
जय जय अवततरनी ओम् जय श्री यमुने
उत्तरदिशिकर पावन पावन तपकरनी–मां,
मुनि कलिन्चमनु मर्दन अर्दन स्वीकरनी ओम
दहन देव तब गिरबर आरति स्तुति करनी मां
तिह अपराध क्षमाकर तिहअपराध क्षमाकर
रसमय श्री पत्नी ॐ जय श्री यमुने
अजतन तरणि समर्पित, जम्बूतय गमनी मां
छिन्न भिन्न कर पाहन, दाहन अथहरनी ओम
ब्रजलीला रंगिनी, मांतुल कुल भरनी मां
श्री विश्रान्त विहारिणी, तारिणी दुःख हरनी ओम
यमुने नवीनीति प्रिया उर आनंद चितचरनी–मां
रासर सिकरम मुंडित भवतरनी ओम
सांयकाल करे जो आरती मनक्वचक्रमकरनी मां
हे यम फंद निवृतिमां मृतिप्रभूमरनी ओम जय श्री यमुने।

श्री राम जी, हनुमान जी, यमुना जी की पूजा एवं साधना पद्धति

भाग-3

Hanuman Mandir, Yamunotri Dham
P.O. Janki Chatti Kharsali-249141
Distt. Uttarkashi, Uttarakhand